३२८ तेल सोयाबीन रिफाइंड ३२०.

हापुड़ गुड़-चीनी

, 6 मई [वार्ता]। हापुड़ गुड़ चीनी में शुक्रवार को भाव इस प्रकार रहे:– या पटवा २७५– ३०० बाल्टी विशेष ३४५ बाल्टी नम्बर एक ३१५– चांढिया दडा ३०५– ३१० दडा ३०० खांडसारी क्शर ५५०– चढ़िया सल्फर ५३५– ५८५ सेकंड ५०० चीनी देसी ६२०– ६३५ त ६००– ६१५.

उदयपुर सर्राफा

उदयपुर, 6 मई [नवन्यूज]। स्थानीय सर्राफा बाजार में शुक्रवार के बंद भाव इस प्रकार रहे– चांदी टंच ६१०० चांदी (९९९) ६१०० सोना (प्रति तोला) ३४९० सोना (प्रति दस ग्राम) २९९२. 3·गा·जो·प·स्राई

दिल्ली अ

नई दिल्ली, 6 धातु बाजार में श प्रकार रहे एल्यूमीनियम २ ४७.०० राड ३ तार ३१.०० एक्स्ट्रूडिड राड तार फूट ६५.५ मीरा की सिल्ल २२.८५ निकि सिल्ली २०२ ज

–88 को ईटानगर में जजों के समक्ष खोले गये ड्रा नं. 37 वें के परिणाम

म पुरस्कार [1] रु. 1,00,000/- AZ- 001696

य पुरस्कार [3] रु. 25,000/-

AX- 953286 AY- 240025 AZ- 042467

रा पुरस्कार [300] रु. 500/- प्रत्येक (सभी टिकटों पर सभी श्रृंखलाओं में समाप्त होने वाले म पांच अंकों पर)

57817 93266 40384 51720 10933
80855 43367 29620 65891 92817

ा पुरस्कार [3000] रु. 50/- प्रत्येक (सभी टिकटों पर सभी श्रृंखलाओं में समाप्त होने वाले म चार अंकों पर)

7507 1025 1119 2151 5518
2338 5638 7752 5460 4286

वां पुरस्कार [3000] रु. 20/- प्रत्येक (सभी टिकटों पर सभी श्रृंखलाओं में समाप्त होने वाले म चार अंकों पर)

2579 4455 5378 8066 5541 8766 5368 9150 5299 7533

पुरस्कार [30000] रु. 10/- प्रत्येक (सभी टिकटों पर सभी श्रृंखलाओं में समाप्त होने वाले तम तीन अंकों पर)

060 117 289 347 401 561 658 720 879 901

केता पुरस्कार निम्नलिखित पुरस्कार विक्रेता पुरस्कार के लिये जायज हैं (केवल काउंटर फाइल करने पर)

0 पुरस्कार रु. 500/- प्रत्येक चौथे पुरस्कार के समान नम्बरों पर
00 पुरस्कार रु. 50/- प्रत्येक पांचवें पुरस्कार के समान नम्बरों पर
00 पुरस्कार रु. 20/- प्रत्येक छठे पुरस्कार के समान नम्बरों पर

विद्यालय को जन

...से)। स्थानीय राजकीय

उदयपुर बाजार भाव

उदयपुर, 6 मई [नवन्यूज]। स्थानीय मंडी में शुक्रवार को अधिकतम जिन्सों के भाव इस प्रकार रहे–

गेहूं फार्मी ३६० गेहूं कल्याण २७० गेहूं दडा ... मक्का सफेद २५० मक्का पीली २५०

...लहन

...ड़ तिलहन में ...भाव इस प्रकार

...७५– १८७५

हापु...

हापुड़ 6 मई [व... बुधवार के हाजिर...

गेहूं बढिया
१७३– १...
मैनपुरी

विमल

सरल, शुद्ध, एवं सर्वश्रेष्ठ-

दीपिका

उच्च माध्यमिक गद्य--पद्य संग्रह

(सेठिया, नाहटा, आत्रेय)

लेखक :
अनुभवी प्राध्यापकों द्वारा लिखित

नवीन संस्करण

प्रकाशक
विमल बुक कम्पनी
चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

विषय–सूची

1. जान–पहचान

पाठ परिचय–जान-पहचान मानव की स्वाभाविक वृत्ति है क्योंकि ानव में आत्मीय क्षेत्र के विस्तार की महत्वाकांक्षा होती है। यह महत्वा-ांक्षी मैत्री के मार्ग को प्रशस्त करती है। इस पाठ में जीवन को दायित्व मझते हुए उसमें जान-पहचान की भूमिका रूपी देने का विशेष उल्लेख कया है।

शब्दार्थ–सयानो=सज्जन। लोक=लकीर। जीविका=आय। यथार्थ=स्तविक। निपुण=प्रवीण। अधीनता=स्वतंत्रता। विवेकबुद्धि=विवेचन क्ति। परेड=गन्तव्य। अवहेलना=अवज्ञा। भले मानुसों=सज्जना। सन्तुष्ट संतोषयुक्त।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "हमें ऐसे लोगों से जान-पहचान बढ़ानी चाहिए जो--

उत्तर–(घ) हमारे जीवन को उत्तम एवं आनन्दमय बनाने में सहायक सकें।

प्रश्न 2. लेखक के अनुसार सबसे भयँकर ज्वर कौनसा है?

उत्तर—लेखक के अनुसार बुरी संगति सबसे भयंकर ज्वर है।

प्रश्न 3. जीवन में किस शिक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है? भग 10 शब्दों में लिखें।

उत्तर–व्यर्थ की बातों को जानकर भी अनजान होना जीवन की सबसे धक आवश्यक शिक्षा है।

प्रश्न 4. कैसी बातें करने वालों को अपना मित्र नहीं बनाना हिए। लगभग 10 शब्दों में उत्तर दीजिऐ?

उत्तर–ऐसे लोगों को कभी मित्र न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें।

प्रश्न 5. संगत का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर–संगत का जीवन पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता हैक्योंकि व की प्रकृति अनुकरणात्मक रही है। अतः वह जैसा देखता है वैसा करता है। बुरी संगत का उस पर बुरा प्रभाव पड़ता है और अच्छी त काअच्छा प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 6. हमारे जान पहचान के लोग कैसे होने चाहिए ?

उत्तर–जान-पहचान के लोग वे हों जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों हमारे जीवन को उत्तम और आनन्दमय करने में कुछ सहायता दे सकते हों यद्यपि उतनी नहीं जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं।

प्रश्न 7. लेखक ने कैसे लोगों के जीवन को शोचनीय, निस्सार एवं शून्य बतलाया है ?

उत्तर–जो युवक मनचले हों, फैशन पसन्द हों, दिन रात शृंगार बनाव में गुजारें, बदचलन औरतों के फोटो खरीदें। गलियों में ठहाके मारते फिरें ऐसे नवयुकों को लेखक ने शोचनीय, निस्सार एवं शून्य जीवन वाला बतलाया है।

प्रश्न 8. आप किन लोगों के साथ जान-पहचान बढ़ाना चाहेंगे और किन-किन लोगों की संगति से बचना चाहेंगे ?

उत्तर–हम एसे लोगों से जान-पहचान बढ़ाना पसन्द करेंगे जो लाभ देने वाले हों हमारे जीवन को उत्तम और आनन्दमय बनाने में वाँछित योग-दान दे सकें जो सदाचारी हों, अनुकूल विचारधारा वाले हों। जिनके चेष्टाएं ठीक हों। जो सदभावना रखते हों जिनमें मानवता हो और मित्रता को समझते हों, धोखा देने वाले न हों, इसके विपरित ऐसे लोगों की संगत से बचने का प्रयास करेंगें जो अश्लील अपवित्र और फूहड़ बाते करते हों, व्यर्थ घूमने वाले हों, आराम पसन्द हों, फैशन में जो दिन रात लगे रहें, जिनकी चेष्टाए खराब हों मनचले हों, बदचलन हों, दूसरों की बुराइयों और मूर्खताओं का नकल करते हों।

प्रश्न ९. समाज में प्रवेश करके हम क्या देखते हैं और सीखते हैं ?

उत्तर— समाज में प्रवेश करके हम देखते हैं कि इस बात की कितनी आवश्यकता है कि लोग हमारी भूलों को क्षमा करें अतः हम दूसरों की भूल चूक को क्षमा करना सीखते हैं। कई ठोकरें खाकर नम्रता व अधीनता का पाठ सीखते हैं। और भी कई लाभ हमें समाज के दायरे में देखने को मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर व्यक्तियों के संबध में हमारी धारणायें विस्तुत होती हैं स्वार्थ, त्याग व व्यवहार का चौतरफा ज्ञान प्राप्त होता है

प्रश्न 10. निम्नाँकित शब्दों का विश्लेषण करते हुए उनमें उपसर्गों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–परलोक=पर+लोक (उपसर्ग=पर)

अनुकरण=अनु+करण (उपसर्ग=अनु)

अनजान=अन+जान (उपसर्ग=अन)

दुर्भाग्य=दुर+भाग्य (उपसर्ग=दुर)

2. विवाह की तीन कथाएं

पाठ का सारांश–विवाह के क्षेत्र में आधुनिक युग सौदेबाजी का व्यापार केन्द्र हो गया है। इस पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने तीन कथा बिन्दुओं का चित्रण किया है। प्रथम के अन्तर्गत दहेज द्वारा सामाजिकता के खण्डन को स्पष्ट किया गया है दूसरी कथा में समाज की विवशता और आज के युग में उससे अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति का विवरण है और तीसरी कथा में बुर्जुआ विद्रोहियों के आंतरिक खोखलेपन को प्रकट किया गया है।

शब्दार्थ–निर्णायक=निर्णय करने वाला। उपलक्ष्य=बारे। भोज=भोजन। स्ट्रगल=झगड़ा। रेवोल्यूशन=परिवर्तन। तिरस्कार=बुराई। बौडम=बहादुर मनुष्य।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. 'वे टेंडर लेकर जा रहे थे।'' लेखक ने किस भाव से प्रेरित होकर यह पंक्ति लिखी है––

उत्तर–(ख) व्यंग्य।

प्रश्न 2. चौबेजी ने दस हजार रुपये अतिरिक्त क्यों माँगे ?

उत्तर–चौबेजी लालची थे और दहेज के रूप में पहले तय हुई रकम से दस हजार ज्यादा लेकर ही शादी की सौदेबाजी करना चाहते थे। दूसरी बात उन्होंने यह सोची होगी कि अशोक की अच्छी नौकरी के लोभ से उन्हें पैसे मिल सकेंगे।

प्रश्न 3. मिश्रजी ने चौबेजी की मांग पर क्या किया ?

उत्तर–उन्होंने पत्र का जवाब पत्र द्वारा ही दिया। उन्होंने चौबेजी की अप्रत्याशित माँग को ठुकराते हुए लिख दिया कि मेरी पुत्री का भी आई. ए. एस में सलेक्शन हो गया है और वह जूनियर सरकारी नौकर से शादी नहीं करेगी।

प्रश्न 4. अविनाश ने अपने पिता द्वारा अधिक दहेज की मांग पर कौनसा कदम उठाया ? क्या आप अविनाश के उस कार्य को उचित समझते हैं सकारण उत्तर दें ?

उत्तर–अविनाश ने बिना दहेज लिए ही शादी करने का कदम उठाया। यह उचित भी था क्योंकि वास्तव में दहेज लेने के बाद अविनाश की पत्नी अपने ससुर को नीच समझती।

प्रश्न 5. अगर आपके पिताजी भी पैसे के आधार पर आपकी शादी तय करना चाहें तो उस स्थिति में आप क्या करेंगें ?

उत्तर–उस प्रस्ताव को नकार देंगे या उन्हें इस विषय पर समझाने की कोशिश करना चाहेंगे ताकि ऐसा कार्य घृणित रूप से न हो। विवाह जैसे पवित्र बंधन को घृणित रूप देना वास्तव में औचित्यहीन है।

प्रश्न 6. क्रांतिकारी की पत्नी ने उसे बुर्जआ बोडम क्यों कहा ?

उत्तर–क्योंकि वह क्रांति केवल कह ही सकता था करनहीं सकता था। दूसरी बात उनकी विचार द्वारा बुर्जआ वर्ग जैसी थी और वह उसी श्रेणी में कहा जा सकता था। जिस श्रेणी के उसके पिता थे।

प्रश्न 7. क्या विवाह की तीन कथायें मिलकर एक कहानी का रूप धारण करती है युक्ति युक्त उत्तर दीजिऐ ?

उत्तर–विवाह की तीनों कथायें कहानी जैसी अवश्य है किन्तु तीनों की सम्बद्धता विच्छिन्न है। यदि लेखक अपने एक कहानी के पात्रों में ही तीन बार तीन प्रकार की प्रक्रिया दिखलाता तो शायद कहानी का स्वरूप और भी रोचक होता।

प्रश्न 8. अपने लड़के की अच्छी नौकरी पाकर भी चौबेजी दुखी क्यों हुए ?

उत्तर–क्योंकि उसकी शादी इससेपहले कम पैसों में तय हो चुकी थी। चौबेजी लालची थे अतः उन्हें पैसे कम मिल पाने का दुःख था।

प्रश्न 9. "अक्ल मारी जाना, लीक से हटना, सिर धुनना" ये तीनों मुहावरे हैं। अक्ल, लाक और सिर शब्द से बनने वाले तीन मुहावरे बताइये।

उत्तर–1. अ ल के घोड़े दौड़ना। 2 लीक के पीछे सरपटा 3. सिर मुडना।

प्रश्न 10. "भारतीय समाज में दहेज प्रथा" विषय पर संक्षिप्त निबन्ध लिखें ?

उत्तर–स्वयं करे

3. लाल इमारतों का नगर

पाठ परिचय–प्रस्तुत पाठ में जयपुर नगर का भव्य वर्णन है। जयपुर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र होने के कारण विशेष स्थान समझ कर लेखक ने उसके सौन्दर्य को प्रकृतिपालित की भांति अपनी लेखक कला से पुष्ट किया है। यह यात्रावृत है किन्तु वर्णनात्मकता के परिवेश में इसे हम रेखाचित्र कह सकते हैं।

शब्दार्थ–भग्नावशेष=टूटी-फूटी बस्तिया। सिहरन=शरीर की सहम। तिलस्मी=जादुई। सिंदूरी=सिंदूरी सम्मलित। बीभत्व=डरावना। आधिपत्यन =साम्राज्य। समद्=छत। कापालिक=ताबिक। कुण्डलिनि=एक नाड़ी का नाम। चञ्चु=चोंच। हिंगल=पीछे। जलवृष्टि=बरसात। नामोनिशान = स्थिति

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक ने राजस्थान को "पीला दर्द भरा देश" क्यों कहा है ?

उत्तर–(च) युगों तक शोषण सतप्त एवं प्राकृतिक संपदा से वंचित होने के कारण।

प्रश्न 2. जयपुर की भीड़-भाड़ और रोनक की तुलना लेखक ने किससे की है ?

उत्तर–भागती हुई दुनियाँ से

प्रश्न 3. सांगानेरी गेट की उपमा लेखक ने किससे दी है ?

उत्तर–समाधिपुरुष से।

प्रश्न 4. अलबर्ट हाल किस बात के लिए मशहूर हैं ?

उत्तर—रिक्शों और इक्कों के लिए।

प्रश्न 5. लेखक ने "माणक चौक" का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में अंकित कीजिए।

उत्तर–लेखक ने इसे जयपुर का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध चौराहा बतलाया है। जिसमें चौड़ी-चौड़ी चार सड़कें निकलती हैं बीच में एक चबूतरा है जो हरी-हरी दूब से ढका हुआ है। चबूतरे पर अजीबोगरीब किस्म के व्यक्ति दिखते हैं चारों तरफ टोकरियों में फूलमाला बेचने वाली स्त्रियाँ,

बगल की चहारदीवारी में नाइयों की लम्बी कतार । एक ओर दुकान में मोटे ज्योतिषीजी, बगल में सिख धर्मगुरुओं के चित्र बेचते हुए सरदार जी। एक ओर अदालती काम से आये ग्रामीण थके-थके से निर्द्वन्द्व भाव से अपनी गठरियाँ लेकर छांह में बैठे हुए। सामने के मोड़ पर हवामहल ।

प्रश्न 6. मोती डूंगरी को देखकर लेखक के मन में जो भाव उठे उनका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ?

उत्तर–मोती डूंगरी को देखकर लेखक के मन में राजाओं के समय का चित्र उभर आया। वे सोचने लगे-राजस्थानी रजवाड़े अब न रहे। रानी का यह महल इस भूरी पहाड़ी पर वीरान सा लगता है। उस जमाने में फूल हार की चोटी से झांक कर देखने का मजा कुछ और ही होता था। आज मन में विरक्ति तो नहीं है, जीवन का संतुलन भी समतल पर नहीं मालूम होता। फिर भी इस डूंगरी को देखने को जी हो आया मानो "नयनतिरपित मेल' हो अभी वातावरण चटकीला था। काली-भूरी पहाड़ी पर हल्के सफेदिया बादल आषाढ़ के आरम्भ में घिर आये थे। बादलों को देखकर एक बटोही कह उठा–'बाप रे जो इतने बड़े पहाड़ को निगलने के लिए झुका जा रहा है वह मेरी छोटी सी 'धन' को कैसे छोड़ेगा।

प्रश्न 7. निम्नांकित का आशय स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर–(क) श्वेत सर्द सीपियों का सम्पुट—

विरहिणी के लिए रात की शीतलता का वर्णन करते हुए लेखक ने समुद्र में मोती बनने की प्रक्रिया में शीत के योगदान की सम्भावना की है। उसका कहना है कि सफेद रंग की दो सीपियाँ (नर व मादा) मिलकर स्वांति की बूंद के लिए मुंह खोलते हैं तो सर्दी के कारण वे बूंदे उनके मुंह में ऐसी जम जाती हैं कि उनका युग्म शरीर ही मोती के रूप में दिखाई देने लगता है।

(ख) **दन्तवीणोपदेशी वायु**–

प्रातः कालीन वायु की शीत स्थिति को उभारने के लिए लेखक ने दन्तवीणोपदेशी शब्द का प्रयोग किया है। दांतों की आवाज को वीणा की आवाज का मानो वह वायु उपदेश दे रहा था अर्थात् अत्यधिक कम्पा रहा था।

(ग) **पुष्पगंध की डोर**—

ज्योतिषी जी की दृष्टि का मूल्यांकन करते हुए लेखक ने यह शब्द प्रयुक्त किया है। पुष्पगंध की डोर ज्योतिषीजी की दृष्टि का आधार है इसे यदि "अनुमान की राह,' के अर्थ में लें तो तर्क संगत बैठता है।

(घ) ऊर्ध्वमुखी प्रज्ञा–

यह शब्द आत्मज्ञान का द्योतक है और अनृत डूंगरी पर हरिदास को ज्ञान प्राप्ति के प्रसंग में आज का स्थिति को द्योतित करते हुए कहा गया है।

(द) सौन्दर्य प्रमत्ता डूंगरी–

यह शब्द जयपुर की सुप्रसिद्ध मोतीडूंगरी के लिए विशेषण रूप में प्रयुक्त किया गया है। वर्षा ऋतु की प्रारम्भिक स्थिति में यह विशेषण वस्तुतः अपन औचित्य भी रखता है।

प्रश्न 8. नीचे दिये गये समस्त पदों का विग्रह कीजिए ?

उत्तर–तुषारमण्डित=तुषार से मण्डित (तत्पुरुष)

आस-पास=आस (अव्यय पद)+पास (अव्ययी भाव)

छोटी बड़ी=छोटी और बड़ी (द्वन्द्व समास)

फूल विक्रेता=फूलों के विक्रेता (तत्पुरुष)

पुष्पगन्ध=पुष्प की गन्ध (तत्पुरुष)

आकाश स्पर्शी=आकाश का स्पर्श करने वाला (तत्पुरुष)

रूपगर्विता=रूप के कारण गर्वित (तत्पुरुष)

रक्तपिपासु रक्त का पिपासु (तत्पुरुष)

या–रक्त का पिपासु है जो (बहुव्रीहि)

4. जीवन का मार्ग

पाठ सारांश –जीवन सुखी और दुखी परिस्थितियों में पला दोहरे पहलू वाला एक पक्ष है। वह किसी के लिए सुखी क्यों हैं और किसी के लिए क्यों दुखी है–इस प्रश्न का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करना यहाँ लेखक का उद्देश्य रहा है।

शब्दार्थ–दृढ़ता कठोरता। बाट जोह रही है=राह देख रही है। कल्पनों=कल्पित विचारों। रुचि = ग्रहण शक्ति। मनःस्थिति = दिल की हालत। उपजाऊ=उपज के योग्य। चिराग=प्रकाशपुंज।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. सुख-दुख, आशा-निराशा–

उत्तर–(क) अपनी मनस्थिति से उत्पन्न होने वाली चीजें हैं।

प्रश्न 2. लेखक ने जीवन के कितने मार्ग बतलाये हैं ?

उत्तर–दो मार्ग बताये हैं। एक पराजय का दूसरा विजय का।

प्रश्न 3. सफलतायें किसी बाट जोहती रहती हैं ?

उत्तर–विजय का मार्ग अपनाने वाले जीवन की।

प्रश्न 4. लेखक ने मन को किन-किन उपमाओं से उपमित किया हैं ? लगभग दस शब्दों में उत्तर दीजिए ?

उत्तर–किस्मत का देवता, सुख-दुख, आशा-निराशा का प्रदाता एवं आंतरिक शक्तिपुंज इत्यादि।

प्रश्न 5. आशावादी व्यक्ति का जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण होता है ?

उत्तर—आशावादी जीवन को उन्नत बनाने का दृष्टिकोण रखता है। उसे जीवन में सफलता का रास्ता दिखाई देता है उसकी आकांक्षाएं उभरती है। वह श्रम में जुटने से घबराता नहीं और अन्ततः सफलता पा भी लेता है।

प्रश्न 6. निराशावादी व्यक्ति का जीवन कैसा होता है ?

उत्तर—निराशावादी के जीवन से प्रकाश का लोप हो जाता है। जीवन का हरेक पहलू उसके लिए शंका का विषय बना होता है। भाग्यवाद ही सहारा होता है वह श्रम से घबराता है तथा स्वतः हार मान लेता है अतः जीवन में कुछ कर भी नहीं पाता।

प्रश्न 7. आशावादी और निराशावादी के जीवन एवं व्यक्तित्व का अंकन लगभग 100 शब्दों में करें।

उत्तर–प्रश्न 5 व 6 का उत्तर देखें।

प्रश्न 8. 'उपज' शब्द में 'आऊ' प्रत्यय लगाने से उपजाऊ बना। 'आऊ' प्रत्यय लगाकर इसी प्रकार के तीन और शब्द बनाइये ?

उत्तर–दिखाऊ ढंग, सरसाऊ जमीन, बरसाऊ हवा।

5. साहित्य : जीवन का प्रतिबिम्ब

पाठ सारांश - साहित्य और जीवन का क्या संबध है इस प्रश्न को उठाते हुए लेखक ने साहित्य को साधन माना है और जोवन को साधना। दोनों के सम्बन्ध का निर्धारण साध्य है। यही इस पाठ में मुख्य रूप से बतलाया गया है।

शब्दार्थ-हृदयगम=ग्रहण। चैतन्य=चेतना। समावेश=सम्मिलित। परिपूर्णता चरमता। व्याप्त=सर्वत्र स्थिति। चिरयुनीत बहुत समय से पवित्र। अधिष्ठित=सँस्थिति अवलोकन=दृष्टिकोण (ध्यान)। प्रतिष्ठा= स्थापना।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार जीवन उपयोगी हो सकता है ?

उत्तर-(घ) साधना से

प्रश्न 2. प्राण के दो रूप कौन-कौन से हैं ?

उत्तर-प्रथम तेज या बल और दूसरा माधुर्य, सौकुमार्य या सौन्दर्य।

प्रश्न 3. साहित्य के दो रूप कौनसे हैं ?

उत्तर-(1) भावप्रधान एवं (2) ज्ञान प्रधान।

प्रश्न 4. लेखक के अनुसार हमारे नव साहित्य में किन-किन बातों का सामञ्जस्य होना चाहिए ?

उत्तर-लेखक के अनुसार एक सच्चे साहित्य में तेज युक्त रस या रस-तेज का होना नितान्त अनिवार्य है अतः उन्होंने नव साहित्य के सम्बन्ध में अपना यह मत निर्धारित किया है कि, नव साहित्य एक जीवनदायी साहित्य हो अर्थात् उसमें तेज और रस दोनों को स्थान दिया गया है। नये साहित्य की प्रवृत्ति जीवनस्पर्शी हो, जीवन के विकास और उसकी पूर्णता की साधना के लिए तेज और बल का उचित सामञ्जस्य हो।

प्रश्न 5. लेखक ने जीवन को क्या परिभाषा दी है ?

उत्तर-'जीवन' की वैज्ञानिक, शास्त्रीय, दार्शनिक या अन्य परिभाषायें चाहे कुछ भी हो लेकिन लेखक के अनुसार जीवन की परिभाषा है- चैतन्य। चैतन्य ही जीवन का सबसे बड़ा और प्रथम लक्षण है। गति, प्रवाह, वेग आदि कई महत्वपूर्ण भाव जो जीवन साधना के आवश्यक अंग हैं,

चैतन्य पर ही आधारित रहते हैं अतः जीवन उसे कहना चाहिए जिसमें परिवर्तन करने, बढ़ने या विकसित होने का गुण हो। यदि यह क्रिया ज्ञान-युक्त हो तो सार्थक होती है, अतः जीवन का अर्थ हुआ ज्ञानयुक्त विकास-शीलता और अन्ततः परिपूर्णता।

प्रश्न 6. लेखक के अनुसार सत्साहित्य किसे कहा जाय ?

उत्तर—लेखक के अनुसार जीवन में यदि असत् का, बुराई का बहि-ष्कार न हो, न ही सत् की प्रतिष्ठा की गई हो तो ऐसे जीवन का कोई मूल्य नहीं। जीवन को मूल्यवान बनाने में साहित्य को सत से जोड़ा जाना चाहिए अतएव जीवनदायी साहित्य को ही हम सत्साहित्य कह सकते हैं और सत्-साहित्य वही ठहरा जो सद्भावों सद्गुणों सत्यशक्तियों को बढ़ावें, हमेशा सत्प्रेरणायें दें और सत्यक्रियाओं में ही हमें लगावे। आज हमारा हमारे समाज का, हमारे राष्ट्र का, और विराट रूप में सम्पूर्ण मानव जगत का जो अभाव है उसे दूर करना ही सत्साहित्य का उद्देश्य होना चाहिए।

प्रश्न 7. लेखक ने स्त्री और पुरुष की प्रकृति में क्या मूलभूत अन्तर बतलाया है ? स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—पुरुष तेज-बल के प्रताप या प्रभाव के द्वारा और स्त्री रसदा के द्वारा जीवन व समाज की अमूल्य सेवा करती हैं। तेज से हीन रस शृंगार विलास में तथा से हीन तेज हृदयहीनता, निष्ठुरता व आततायीप में परिणित हुए बिना नहीं रहता।

प्रश्न 8. लेखक ने भावप्रधान और ज्ञान प्रधान साहित्य सृजन के क्य आधार बतलाए हैं ?

उत्तर—लेखक के मतानुसार साहित्य के दो रूप हैं भावप्रधान औ ज्ञानप्रधान। कल्पना विलास और भाव प्रवाह के फलस्वरूप जो साहित्य सृजि होता है वह भाव प्रधान साहित्य है। इसके विपरीत जो साहित्य लेखक व्यक्तिगत अध्ययन, मनन, अनुभव और साधना के बाद रचा जाता है व होगा ज्ञान प्रधान साहित्य। भाव भावं प्रधान साहित्य का आधार हुआ जीवन का गौण-सत्य और ज्ञान प्रधान साहित्य का आधार हुआ जीवन क प्रधान सत्य। इसी प्रकार जीवन दोनों का उपादान है।

प्रश्न 9. "जीवन कोरा आनन्द नहीं साधना है" इस पंक्ति के अभि-प्राय का युक्तियुक्त प्रतिपादन कीजिए ?

उत्तर-भावप्रधान साहित्य कल्पनाजन्य होता है अतः जीवन में चिर आनन्द को न देखकर वह एक अस्थाई रसानुभूति का जनक होता है किन्तु जीवन केवल इसी उद्देश्य के लिए हुए नहीं है। वह एक कसौटी है जिस पर उसकी यथार्थता को परखना है। अतः जब जीवन की साधना होती है तो ज्ञानप्रधान साहित्य को आधार बनाया जाता है। तब ही अपने लिए, अपने समाज के लिए, राष्ट्र के लिए और मानव जगत् के लिए उपयोगी बन जाता है। इस भूमिका में हृदय, मस्तिष्क, भावना एवं बुद्धि का परस्पर सम्न्ध किया जाना चाहिए।

प्रश्न 10. नीचे लिखे शब्दों के मूल रूप लिखिये।

उत्तर–1. माधुर्य=मधुर। 2. सौन्दर्य=सुन्दर। 3. सौकुमार्य=सुकुमार।

प्रश्न 11. साहित्य के साथ सत् शब्द जुड़कर सत्साहित्य शब्द बना है। प्रस्तुत पाठ में सत्' के योग से बने अन्य दो शब्द छाँटिए?

उत्तर–(1) सद्भाव (2) सद्गुण (3) सत्शक्ति (4) सत्यप्रेरणा।

प्रश्न 12. प्रस्तुत पाठ को लिखने में लेखक का क्या उद्देश्य रहा है?

उत्तर–साहित्य और जीवन के पारस्परिक सम्बन्ध का निर्धारण।

6. परमाणु विस्फोट और मानव जाति का भविष्य

पाठ सारांश–इस पाठ में वैज्ञानिक विकास के फलस्वरूप मानवता को जो खतरा पैदा हो गया है उसका वस्तुभूत चित्रण है। शांत वातावरण में भी आज की वैज्ञानिक प्रक्रियाएं क्यों और कैसे दुष्परिणामकारी हैं इसे भी लेखक ने भली भाँति स्पष्ट किया है। लेखक ने युग के भविष्य का उपाय बतलाते हुए यह सिद्ध किया है कि आज की परस्थितियों में अध्यात्म भी उतना ही विकसित हो जितना कि विज्ञान।

कठिन शब्द--वक्तव्य=भाषण। विस्फोटक=विघातक। रासायनिक=रसायनों से बने। तल्यांक=मापक चिन्ह। मेगाटन=शक्ति का परिमाण। विभीषिका=भयानक दृश्य। तांडव नृत्य भयावह अभिनय। प्रक्षेपणास्त्र=आकाश में छोड़े जाने वाले अस्त्र। साध्य=सिद्ध करने योग्य। त्रिकिरण=बहुत सी किरणों का केन्द्र।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. आज मानवता के सम्मुख भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई है, क्योंकि–

उत्तर–(ग) विज्ञान और अध्यात्म का सन्तुलन गड़बड़ा गया है।

प्रश्न 2. सब कुछ भूल कर हमें किस बात को याद रखना चाहिए ?

उत्तर–सब कुछ भूलकर भी हमें मानवता को याद रखना चाहिए ?

प्रश्न 3. "मेगा डेथ" का पैमाना कितनी लाख मौतों के बराबर होता है ?

उत्तर–मेगा डेथ का पैमाना दस लाख मौतों के बराबर होता है।

प्रश्न 4. परीक्षण से मुक्त होने वाली रेडियो सक्रीय कार्बन 14 के कारण कितनी मौतें हो सकती हैं ?

उत्तर–इसके कारण 30 लाख मौतें हो सकती हैं।

प्रश्न 5. रासायनिक विस्फोटों की तुलना में परमाणु अस्त्रों को बनाने की लागत कम क्यों पड़ी ?

उत्तर–क्योंकि परमाणु अस्त्रों में सस्ते यूरेनियम का इस्तेमाल भी कामयाब हो जाता है।

प्रश्न 6. परमाणु युद्ध की विनाश लीला से तटस्थ और पड़ौसी देश भी क्यों नहीं बच पायेंगे ?

उत्तर–परमाणु का प्रभाव क्षेत्र की दृष्टि से पड़ेगा, न कि जनसंख्या की दृष्टि ।

प्रश्न 7. हाइड्रोजन बम के विस्फोट से होने वाली विनाश लीला को अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर–हाइड्रोजन बम इतना घातक है कि उसकी केवल लपटें और आग ही एक हजार वर्ग मील क्षेत्र को नष्ट कर देती है। 10 हजार वर्गमील का क्षेत्र उसके स्थानीय फाल आउट एवं रेडियों सक्रिय विस्फोट तत्वों से नष्ट हो जाता है। इससे स्पष्ट है कि संसार के बड़े से बड़े नगर को नष्ट करने के लिए एक हाइड्रोजन बम की आग और लपटें ही काफी हैं।

प्रश्न 8. शान्तिकालीन परीक्षणों से मुक्त होने वाले 'स्ट्रोंशियम 90' नामक तत्व के क्या विनाशक प्रभाव उत्पन्न होंगे ?

उत्तर–अब तक के परीक्षणों में जितना भी 'स्ट्रोंशियम 90' तत्व मुक्त हुआ है उससे ही आगामी 30 वर्षों में ल्यूकेमिया रोग से डेढ लाख लोगों की मृत्यु सम्भावित है। उसी अवधि में 50 हजार लोगों की मृत्यु गिल्टीरा बोन ट्यूमर रोग से सम्भव है। अवशिष्ट प्रभाव से मृत्यु संख्या की दर और अधिक बढ़ जायेगी।

प्रश्न 9. परमाणु व हाइड्रोजन बमों के परीक्षणों से मानव जाति के भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर–परमाणु व हाइड्रोजन बमों के परीक्षणों से मानव जाति समूल नष्ट हो जायेगी उसकी सभ्यता और संस्कृति का नामोनिशान भी न रहेगा। परमाणु विस्फोट के कारण ही देश वीरान हो जाते हैं। 10 वर्ग मील क्षेत्र का सम्पूर्ण विनाश हो जाता है तो हाइड्रोजन बम से देश का काफी हिस्सा लगभग 40 हजार वर्ग मील का क्षेत्र तो हाइड़ोजन बम की लपटों से ही नष्ट हो सकता है। अब तक इनके जो परीक्षण हुए हैं उनसे ही भविष्य में रोग व मृत्यु के बढ़ने की सम्भावना है।

प्रश्न 10. यदि तृतीय महायुद्ध हुआ तो इस विश्व की क्या स्थिति होगी ?

उत्तर–यदि तृतीय विश्व युद्ध हुआ तो परमाणु की विनाश लीला केवल युद्धरत देशों तक ही सीमित न रहेगी वरन् इसके संहारकारी प्रभाव से तटस्थ देश भी नहीं बच सकेगे। परमाणु अस्त्रों से मुक्त रेडियो संक्रिय पदार्थ और विकिरण से ही वातावरण का क्षेत्र काफी व्याप्त हो जायगा। और बिना लड़े ही विश्व जनसंख्या का 5 से 10 प्रतिशत हिस्सा नष्ट हो जायेगा।

प्रश्न 11. निम्नलिखित शब्दों के वैज्ञानिक अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर–(i) **मल्टी मेगाटन**–10 लाख टन का बहुगुणित परिणाम होता है जिसके आधार पर परमाणु शक्ति की केन्द्रीयता आंकी जाती है।

(ii) **फाल आउट**–परमाणु विस्फोट से निकले रेडियो सकिय पदार्थों के कणों के आकाश से पृथ्वी पर गिरने को फाल आउट कहते हैं।

(iii) **स्ट्रोंशियम 90**–यह कैलशियम वर्ग की एक धातु होती है जो काफी समय तक अपनी रेडियो सक्रियता कायम रखने की क्षमता रखती है। मनुष्य की हड्डियों से कैल्शियम का बलापहरण करती है अत- मनुष्य पर स्वास्थ्य की दृष्टि से यह काफी खतरा पैदा करती है।

(iv) रेडियो सक्रिया कार्बन–14 यह कार्बन का ही मूल तत्व है। फिर भी अधिकांश तत्वों के परमाणु सभी बातों में समान नहीं होते "कार्बन –14" और "कार्बन में भी यही अन्तर है। दोनों के परमाणु भार में अन्तर होता है।

प्रश्न 12. नाश के आगे 'वि' उपसर्ग लगाकर "विनाश" शब्द बना है। इसी प्रकार 'वि' उपसर्ग लगाकर 5 अन्य शब्दों का निर्माण कीजिए।

उत्तर–विकास, विज्ञान, विच्छिन्न, विभाग, विघटित।

प्रश्न 13. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उत्तर––प्रगति=पतन, अभ्यास=अनभ्यास, अध्यात्मक=विकास (अनात्मक), विकास=बचाव।

7. सर्कस का खेमा

पाठ सारांश–इस पाठ में सर्कस का एक रूपक खेंचा है। सर्कस का खेमा सबके आकर्षण का केन्द्र होता है। इनके मूल में छिपी हुई भव्य अद्भुत अमानवीय क्रियाएं एवं दिव्यसृष्टि आदि इन सभी बातों पर लेखक का ध्यान गया है। इस पाठ से सामाजिक शिक्षा मिलती है वह है–समाज में मनोरंजन की आवश्यकता।

कठिन शब्दार्थ–उमस=गर्मी। बयार=हवा। नीरवता=शान्ति। धन=आजाव। थिएटर=नाटकगृह। चसका=चाव। कनात=बगल का पर्दा। सुर=स्वर। कानाफसी=धीमे स्वर में बातें। निरूपायता=बेबसी। बेतहाशा=बहुत ज्यादा। पुरजा=पर्चा। झंकृत=मुखरित। मसखरों=मजाकिया। पराकाष्ठा=चरमोत्सकर्ष। जिज्ञासा जानने की इच्छा।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सर्कस के खेमे में प्रवेश करने के बाद लेखक का दिल 'धड़-धड़' करने लगा क्योंकि—

उत्तर–(स) सर्कस के कुछ अद्भुत आकर्षक और भव्य देख पाने की सम्भावना थीं।

प्रश्न 2. बहुत दिनों के बाद सर्कस देखने का मौका पाने के बाद जिस मनुष्य के मन में सर्कस देखने की इच्छा न जगे ऐसे मनुष्यों के लिए लेखक ने किन शब्दों का प्रयोग किया है?

उत्तर—'मुक्त' और 'पशु' शब्द का प्रयोग इस दृष्टि से लेखक द्वारा पाठ में किया गया है।

प्रश्न 3. लेखक ने पहली बार सर्कस को देखकर कैसा अनुभव किया ?

उत्तर—लेखक ने पहली बार सर्कस देखा तो अनुभव किया मानो उसकी सूने अरमान रूपी लालसा सहसा तुष्टि पा गई हो। कुछ अद्भुत भव्य अमानुषीय व आँखें चौंधियाने वाली दिव्य सृष्टि का पास से दर्शन करने की खुशी भी महसूस हुई।

प्रश्न 4. लेखक को नाटक की तुलना में सर्कस क्यों अधिक पसन्द आया ?

उत्तर—क्योंकि कुछ अद्भुत और भव्य देखने की जो लालसा थी वह नाटक द्वारा पूरी न हो सकी थी। सर्कस में इसकी अनुभूति पाकर लेखक ने उसकी अपेक्षा सर्कस को अधिक पसन्द किया।

प्रश्न 5. लेखक ने सर्कस की दुनियां की कौन-कौनसी विशेषताएँ बतलाई हैं ?

उत्तर—सर्कस का खेमा हास्य रस से युक्त तालसुरों पर नाचने वाली ध्वनियों की जगमगाहट में दमकने वाली अमानुषिक अद्भुत और दिव्य दुनियां है। जीवन, साहस, विक्रम, आवेश, मस्ती, श्रृंगार, हंसी, आदि को इस दुनिया की आत्माएँ कह सकते हैं।

प्रश्न 6. सर्कस के खेमे में एकाएक सब तरफ से प्रचण्ड हँसी क्यों गूँज पड़ी ?

उत्तर—पराकाष्ठा को पहुँची गम्भीर जिज्ञासा को मुँह की खानी पड़ी। वह एकाएक प्रचण्ड हँसी की जननी थी। सर्कस का खेमा भी एक ऐसा आधार था जहाँ यह सिद्धान्त सीधे सादे प्रत्यक्ष रूप में सामने आ रहा था।

प्रश्न 7. सर्कस, नाटक और चित्रपट तीनों में से आप किसे सबसे अधिक महत्व देंगे और क्यों ?

उत्तर—तीनों में से सर्कस ही श्रेष्ठ रहेगा क्योंकि नाटक में कोरा आदर्श होता है यथार्थ का सही मूल्यांकन वहाँ सम्भव नहीं। इसी प्रकार चित्रपट में भी दृश्यों का उपस्थापन अप्रत्यक्ष होता है जबकि सर्कस में यथार्थता प्रत्यक्ष होती है।

प्रश्न 8. आपने भी अगर कोई सर्कस देखा हो तो उसका वर्णन सही शब्दों में कीजिए ? **उत्तर**— छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 9. नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं उनके आगे या पीछे शब्दांशों को अलग करते हुए उनके मूल रूप लिखिए।

उत्तर–(i) विमोहित=वि + मोह + इत्–(मोह)

(ii) असम्भव=अ + सम् + भव–(भव)

(iii) लड़कपन – लड़क + पन–(लड़का)

(iv) जनानखाना = जनान + खाना–(जनाना)

(v) निरुपायता – निः + उपाय + ता–(उपाय)

(vi) अ + मानुष + इय=अमानुषीय–(मानुष)

(vii) भव्यता + भव्य + ता–(भव्य)

8. नारीत्व का अभिशाप

पाठ का सारांश–नारी की स्थिति का चित्रण करते हुए प्रस्तुत लेखिका ने यह सिद्ध किया है कि नारीत्व का क्या समाज और राष्ट्र में कोई योगदान नहीं है ? नारी को त्याग भावना और बलिदान उसके मत में प्रसंशनीय है फिर उसकी हीन स्थिति क्यों ? इस वि पर तीव्र विरोध की अभिव्यक्ति यहाँ देखी जा सकती है।

कठिन शब्दार्थ—चरितार्थ = उपयुक्त । स्पर्धा=होड़ । अ अवनति । साकार=आर्घातिमय । क्षुद्र=नगण्य । निर्मल निर्दय । =निर्भय । युगांतर दीघ=कालातीत । उद्यत-तैयार । अभिशाप=प्रति न्यूनता – कमी । अतीत=भूतकाल । संस्पर्श • परिचय । यंत्रणाए आहत=पीड़ित । विदुषी=ज्ञानसम्पन्न । विडम्बना=विपरीतता ।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सीता को पृथ्वी में समाहित होते देखकर भी हृदय विदीर्ण नहीं हुआ क्योंकि—

उत्तर—(घ) राम मर्यादा निर्वाह के कारण चुप रहने को वि

प्रश्न 2. नारी के बलिदान को पुरुष ने क्या समझा ?

उत्तर—नारी के बलिदान को पुरुष ने एक दुर्बलता मात्र

प्रश्न 3. नारी की दुर्बलता को कौनसा शानदार नाम देक शोषण सदियों से किया जा रहा है ?

उत्तर–नारी की दुर्बलता को कोमलता का शानदार नाम देकर उसका सदियों से शोषण किया जा रहा है। अतः दुर्बलता उसके लिए अभिशाप के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं।

प्रश्न 4. लेखिका ने नारी के आज़ और अतीत के बलिदानों में क्या अन्तर बतलाया है?

उत्तर—लेखिका के मतानुसार नारी के आज और अतीत के बलिदानों में उतना ही अन्तर है जितना स्वेच्छा से स्वीकृत नारीत्व की गरिमा से गौरववती के जौहर व्रत और बलात् लाठियों से घेर-घार कर बलि पशु के समान झौंकी जाने वाली नारी के अग्नि प्रवेश में।

प्रश्न 5. लेखिका ने भारतीय नारी के जीवन को निर्जीव-सा क्यों बतलाया है?

उत्तर–क्योंकि हमारे समाज ने उसे पाषाण प्रतिमा के समान सर्वदा एकरूप, एकरस, जीवित मनुष्य के स्पन्दन, कम्पन और विकार से रहित होकर जीने की आज्ञा दी है। अतः उसके जीवन का इस क्रम में निर्जीव सा हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पौराणिक कथाओं को अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर–(i) **सीता की अग्नि परीक्षा**–रावण वध के उपरान्त सीता के चरित्र की विशुद्धता प्रमाणित करने के लिए भगवान राम ने सीता को परीक्षा देने को कहा था। सीताजी ने अग्नि में प्रवेश किया और वे जली नहीं इस प्रकार वे सच्चरित्रा प्रमाणित हुईं।

(ii) **परशुराम का मातृवध**–परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि एक बार अपनी पत्नि रेणुका पर रुष्ट थे उन्होंने अपने पुत्र परशुराम से उसका सिर काट देने का कहा। परशुराम पिता के तपोवल से परिचित थे अतः उन्होंने शीघ्र अपनी माता का सिर काट डाला। बाद में प्रसन्न पिता ने वर मांगने को कहा तो माँ को जिन्दा करने का वर मांगा इस पर पिता ने अपने तपोवल से उसे पुनः जीवित कर दिया।

प्रश्न 7. महादेवी ने हिन्दू नारी की पितृगृह में जो स्थिति बतलाई है? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर–अपने पितृगृह में उसे वैसा ही स्थान मिलता है जैसा किसी दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता है जिसके रखने और बेचने दोनों में ही

दुकानदार को हानि की सम्भावना रहती है। नारी की यह स्थिति वास्तवि
है क्योंकि पिता का संरक्षण अस्थाई होता है और जहाँ तक वह उसक
सुरक्षा करे इसकी कोई गारन्टी सम्भव नहीं फिर भी नारी का संरक्ष
पितृगृह की सीमा तक हिन्दुस्तान में निधि ही माना जाता है।

प्रश्न 8. महादेवी के अनुसार हिन्दू समाज में पतिगृह में नारी व
स्थिति कैसी है ?

उत्तर--पतिगृह में नारी का जीवन एक विशेष सांचे में ढलता है
उसके चरित्र की एक विशेष रूपरेखा उभरकर सामने आती है। नारी रूप
अपेक्षित प्राणी को पतिगृह में पलभर भी आशंका से रहित स्थिति नहीं देख
को मिलती। उसके प्रति सहानुभूति का कोई स्थान नहीं होता। थोड़ा
भी दोष या प्रतिकूलता उसके तिरस्कार के लिए पर्याप्त है। दोषों का निता
अभाव होने पर भी अप्रसन्नता की दोषी है उसे दासत्व ही स्वीकार कर
पड़ता है न कि स्वामित्व।

प्रश्न 9. "नारी ने अपनी शक्ति को कभी जाना और कभी न
जाना" लेखिका के इस कथन के संदर्भ में ऐसी तीन भारतीय नारियों
परिचय दीजिए जिन्होंने अपनी शक्ति को पहचानकर अपने शौर्य की अ
छाप छोड़ी।

उत्तर--इस क्षेत्र में जौहरव्रत करने वाली क्षत्रिय वीरांगनाओं
शत्रुओं से युद्ध तक करके लोहा लेने वाली बहादुर नारियों के उदाहरण
सकते हैं। इस क्षेत्र में पद्मनी, पन्नाधाय, रानी लक्ष्मीबाई आदि का मु
नाम लिया जा सकता है। पद्मनी राणा रत्नसिंह की पत्नी थी। अलाउ
के आक्रमण के समय क्षत्रिय सेना के पराजय की आशंका पर इसने जौह
करके अपने नारीत्व एवं शौर्य का परिचय दिया। पन्नाधाय ने भी प्रता
पुत्र कुंवर अमरसिंह की रक्षा की थी और अपने पुत्र चन्दन का बलि
दे दिया था, रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी थी और अपने ना
से सबको चकित कर दिया था।

प्रश्न 10. 'वर्तमान समाज में नारी' विषय पर एक संक्षिप्त नि
लिखिए।

उत्तर--वर्तमान समाज में नारी की महत्ता प्रायः शून्य है। पि
में रहते समय भी उसके चरित्र की आशंका से आज का समाज अछूता

पति के कुल में भी उसके लिए कोई सहानुभूति नहीं। वह आज की परिस्थिति में पुरुषों के हाथों कष्ट सहने की इतनी अभ्यस्त हो गई है कि, उसमें अपने क्लेश को तीव्रता से अनुभव करने की चेतना भी शेष नहीं रही है। नारी की इस दुर्बल स्थिति को देखकर आज का सामाजिक कोमलता मात्र का आवरण देखता है वह केवल भोगविलास की पूर्ति का साधन ही नारी को समझता है या फिर अपने लिए सेवा करने को उसकी दासता को काम याब समझता है।

9. संस्कृत को सतरंगिनी

पाठ का सारांश–भारत राष्ट्र में अनेक विविधताओं के बावजूद भी परम्पराओं, रितिरिवाजों, प्रथाओं एवं कार्यों के आधार पर भारतीय संस्कृति की मूलभूत एकता छिपी हुई है। लेखक इसी का गौरव निदर्शन इस पाठ में प्रस्तुत कर रहा है।

कठिन शब्दार्थ–आयत=चौकोर खेत। मरकत=चमकते हुए। अमेचर=प्रस्तावक। आंचल=वस्त्र। करिशमा=आश्चर्य कार्यवाही। बाल्हे=कण्ठ। पगे=भरे पूरे। जामे=अधोवस्त्र। दीर्घसूत्री=बहुत देर तक होने वाली। गदराना-पियराता=लहलहाता। लरजता=ठंडा होता। फँस=घेरे। अलिंद=गुम्बज रज्जु=रस्सी। कोड=गोद। बैयरबानियों=स्त्रियों। उदात्त=सौम्य। बुनियादी = मौलिक। गुमराह=भटकना।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "सांस्कृतिक विभिन्नताओं के अस्तित्व में" हम अनुभव करते हैं।

उत्तर–(च) देश की महिमा और उल्लास का स्रोत।

प्रश्न 2. मद्रास में कर्नाटक संगीत सुनकर लेखक को भारतीय संस्कृति की कौनसी विशेषता का ध्यान हो आया?

उत्तर-विविधता का।

प्रश्न 3. लेखक ने संस्कृति की तुलना किससे की है?

उत्तर–संस्कृति की तुलना आँचल से की है।

प्रश्न 4. "सामाजिक जीवन के बारीक और उदात्त विकारों को ही संस्कृति की प्रेरणा कह सकते हैं।" इस वाक्य में आये विकार शब्द का आशय क्या है?

उत्तर—विकार शब्द इस पंक्ति में विविधता का द्योतक है।

प्रश्न 5. लेखक ने हिन्दी की कौन-कौनसी उपभाषाओं का उल्ले किया है? लगभग 20 शब्दों में उत्तर दीजिये ?

उत्तर–भोजपुरी, मैथिली, मगधी, अवधी, ब्रज, बुन्देलखंडी, माल राजस्थानी, बघेलखण्डी, कूर्माचली इत्यादि उपभाषाओं का उल्लेख क हुए लेखक ने संस्कृति की बुनियाद का परिचय दिया है।

प्रश्न 6. लेखक ने हिन्दी भाषा की क्या विलक्षणता बतलाई है

उत्तर–हिन्दी भाषा की विलक्षणता बतलाते हुए लेखक लिखता कि अनेकत्व की बुनियादों पर ही एक संस्कृति की बुनियाद खड़ी होती उदाहरणतः हिन्दी भाषा की सबलता के मूल में बहुत सी उपभाषाओं होना ही उसकी आधारभूत स्थिति की एक विलक्षणता है। साहित्य का समावेश भी सभी के समुन्नयन पर ही संभव है।

प्रश्न 7. लेखक ने भारतीय संस्कृति के लिए 'विविधता को यादी क्यों माना है ?

उत्तर–क्योंकि विविधता स्वाभाविक है। इसे किसी भी परि में नष्ट नहीं किया जा सकता और नष्ट करने के प्रयत्नों की प्रतिक्रिय राष्ट्र को हानि भी उठानी पड़ सकती है। इसी तथ्य के कारण विचा ने समन्वयवाद का ही प्रवर्तन किया न कि मूलभूत विभेदताओं को समझकर नष्ट करने का।

प्रश्न 8. लेखक किस बात के प्रति आशावान है ?

उत्तर–लेखक इस बात के प्रति आशावान है कि आधुनिक भौ वाद का अधड़ जो विविधता के नाम पर संस्कृति के विनाश को लक्ष्य हुआ है एक दिन नष्ट होगा और उत्तर भारतीय मानव दक्षिण की भा को, दक्षिण के साहित्य की परम्पराओं को और सभ्यता को प्रेम ग्रहण करेंगे, इसी प्रकार दक्षिण भारतीय भी उत्तर भारत की भाषा, म्पराओं व मान्यता को ग्रहण करेंगे।

प्रश्न 9. लेखक ने बद्रीनाथ की परिक्रमा को विचित्र भूल भु क्यों कहा है ?

उत्तर–देश के सभी भागों से आकार इकट्ठे हुए मानवों में की विविधता को देखकर लेखक ने वहाँ की परिक्रमा को विचित्र भुलैया कहा है।

प्रश्न 10. लेखक ने विविध भारतीय नृत्यों की जो विशेषतायें बतलाई हैं उन्हें लगभग 100 शब्दों में लिखिए ?

उत्तर—नागानृत्य में नर्तकी सफेद और लालधारी वाले लघु वस्त्र पहने है, हाथ में बर्छियाँ हैं, पुष्ट मांस पेशियाँ हैं, पतली आंखे हैं, चेहरा गम्भीर है मानो किसी कुंभकार की कृति हो। मन्द गति है और गहन स्वर है। राजस्थानी लोक नृत्य में युवक-युवती दोनों का सहनृत्य होता है। घूमर की तीव्र गति एवं मस्ती का उछाह मन को हर लेता है। हिमाचली नृत्य में ऊनी वस्त्र और 'पगड़ी ही वेशभूषा है। दीर्घसूत्री प्रतिध्वनि हाथों में ढ़फ की आवाज, कदमों की त्वरित गति का परिचय देती है। केरली नृत्य में मोपलों की मँडली, नर्तकी के उर्ध्वाङ्ग नंगे बदन है, अधोभाग में तहमद है। लकड़ियाँ हाथों में हैं और गायन व वाद्य प्रयोग में नहीं लिया जाता इस प्रकार भारत का कोई एक राष्ट्रीय लोक नृत्य नहीं है।

10. गुरुनानक देव

पाठ का सारांश—प्रस्तुत पाठ में सिख धर्म प्रवर्तक गुरु नानक के संदेशों और उपदेशों को पथप्रदर्शक के रूप में सिद्ध करते हुए उनके राष्ट्रीय व्यक्तित्व के महत्व का चित्रण किया गया है, वह आज भी राष्ट्र की श्रद्धा और उपासना का प्रतीक कहा जा सकता है।

कठिन शब्दार्थ—मृदुमन्थर=मृदु व मंद। उद्वेल=चंचल। आविर्भाव= प्राकट्य। असें=बहुत काल। पार्थिव=नश्वर। अह्लाद=खुशी। मानस=मन संकीर्ण=संकुचित। वामी = पुराने। कुंठित =ग्रस्त। लोकोत्तर=अलौकिक। मुमुर्ष = प्रेमामृत। वेधक=मर्मस्पर्शी। दुर्धर=असह्य। निरीह=निरूपम।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'लोकोत्तर' शब्द का सही अर्थ है–

उत्तर–(घ) लोक से परे।

प्रश्न 2. चन्द्रमा के कितनी कलायें होती हैं ?

उत्तर—चन्द्रमा के सोलह कलायें होती हैं।

प्रश्न 3. गुरु नानक देव ने मनुष्य जाति को किस बात का संदेश दिया ?

उत्तर—गुरु नानक देव ने मनुष्य जाति को प्रेम का संदेश दिया।

प्रश्न 4. पंडित और विद्वान गुरुनानक की कौनसी विशेषता से चकित हैं ?

उत्तर—गुरुनानक की वाणी की सहज वेधक शक्ति से पण्डित और विद्वान भी आज चकित हैं क्योंकि ऐसी वाणी भटकती जनता को राह बताने में अपूर्व लक्ष्य लिए हुए है ।

प्रश्न 5. लेखक ने गुरु नानक को सबसे निराला क्यों माना है ?

उत्तर—क्योंकि सन्त के रूप में वे सभी भांति लोकोत्तर हैं, उनका उपचार प्रेम मैत्री है । उनका शास्त्र महानुभूति और हित चिन्ता है । वह कुसंस्कार के अन्धकार को अपनी स्निग्ध ज्योति से भेदता है । मुमूर्ष प्राण धारा को अमृत का भाण्ड उडेलकर प्रवाहशील बनाता है । वह भेदों में अभेद देखता है । नानात्व में एकता का साधन बताता है अतः सचमुच उसमें एक निरालापन है ।

प्रश्न 6. गुरुनानक के व्यक्तित्व का अंकन अपने शब्दों में कीजिए ?

उत्तर—गुरु नानक भारत के महान् एवं परम पूज्य धर्म प्रवर्तक के रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र की श्रद्धा और उपासना के केन्द्र रहे हैं । आज से पाँच सौ वर्ष पहले की परिस्थिति में भारत में कई मतमतान्तर और भेद-भाव तथा साम्प्रदायिकता का बोलाबाला था । इस संकटकाल में विघटन को रोककर एकता और मैत्री की भावना का संदेश लेकर यह महामानव इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ । उन्होंने भेद में अभेद का दर्शन किया, अनेकता में व्याप्त एकता को पहचाना और उसी का उपदेश दिया जो आज भी हमारा पथ-प्रदर्शक बना हुआ है ।

प्रश्न 7. धर्म और प्रेम सम्बन्धी गुरुनानक के विचारों का प्रतिपादन कीजिए ?

—धर्म के सम्बन्ध में गुरुनानक का विचार था—आज दुनिया जिस ब्रह्माण्ड को धर्म समझ रही है वास्तव में वह धर्म नहीं है । मूल सम्का को आस्था मानना भी धर्म के प्रतिकूल है क्योंकि धर्म तो तू स्वयं है जिसः भगवान ही धर्म की साक्षात मूर्ति के रूप में विराजमान है । उसी अगम अगोचर प्रभु की शरण पकड़ । क्या पड़ा है, इन थोथे अहंकारों में । ये मुक्ति के नहीं अपितु बन्धन के हेतु हैं ।

प्रेम के सम्बन्ध में गुरु नानक कहते थे—प्रेम मनुष्य जीवन का चरम प्राप्तव्य है । प्रेम ही उसका स्वभाव है, उसका साधन है । अरे ओ मुग्ध

मनुष्य ! सच्ची प्रीति से ही तेरा मान-अभिमान नष्ट होगा, तेरी छोटाई की सीमा समाप्त होगी, परम मंगलमय शिव तुझे प्राप्त होगा। अतः सच्चे प्रेम की साधना तेरे जीवन का चरम लक्ष्य है।

प्रश्न 8. गुरुनानक के जन्मकालीन भारत वर्ष की परिस्थितियों का वर्णन निबन्ध के आधार पर कीजिए ?

उत्तर--गुरुनानक के जन्मकाल के समय भारतीय जनजीवन अनेक मतमतान्तरों में भटका हुआ था। देश में यह कुसंस्कारों का फल था कि यहाँ जातियों, सम्प्रदायों, धर्मों और संकीर्ण कुलाभिमानों से खण्डशः विभक्त होने को ग्रस्त था। देश के नवीन धमागन्तुकों के समक्ष एक विकट समस्या थो। अर्थहीन संकीर्णता को दूर करना परमावश्यक था।

प्रश्न 9. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि विच्छेद कीजिए ?

उत्तर--निरहंकार=निः + अहंकार । सर्वाधिक=सर्व + अधिक । कुलाभिमान=कुल + अभिमान । ज्योतिष्मान्=ज्योतिष् + मान् । अनाडम्बर= अन + आडम्बर । अमृतोपम=अमृत + उपम ।

प्रश्न 10. नीचे दिये गये शब्दों का वाक्यों में इस तरह प्रयोग करें कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाये ?

उत्तर--(i) पार्थिव = पार्थिव शरीर की क्षणभंगुरता में अनुमाव कैसा ?

(2) आविर्भूत=क्षितिज पर नये वादल आविर्भूत हुए।
(3) अनुष्ठान आज ही इस नये कार्य का अनुष्ठान किया था।
(4) उद्वेल=उसकी बातों पर मेरा मन मानो उद्वेल हो उठा।
(5) समष्टि = समष्टि का कल्याण ही वास्तविक आत्मकल्याण है।
(6) मुमुर्ष = प्राणधारा को अमृत प्रवाह के रूप में उंडेल दिया।
(7) दुर्धर=यह सब मेरे लिए दुर्धर था।
(8) अहमिका = इस वात पर मेरी अहमिका विगलित हो चुकी थी।
(9) आप्लावित=इससे आप्लावित उस आनन्द की अनुभुति विचित्र ही थी।

1. कबीर

पद्य 1. "कब देखूं……दरसन दीजै ॥"

अर्थ—हे प्रिय राम ! मैं कब आपके दर्शन करूँगा। जिन आपके बिना मेरा यह शरीर दुःख पा रहा है, उन आपकी मैं राह देख रहा हूँ। हे

अन्तर्यामी ! आप कब मिलोगे । जैसे पानी के बिना मछली तड़पती है वैसे ही है हरि ! आपके बिना मेरा जी तड़फ रहा है । मुझे रात-दिन नींद नहीं आती क्योंकि ये आँखें तेरे दर्शनों की प्यासी है, फिर भी हे राम ये क्यों सकुच रही है। हे प्रभु, अब आप देर मत करो और मुझे अपना समझकर दर्शन दो।

शब्दार्थ- सनेही - प्रिय । देही=शरीर । पंथ - रास्ता । निद्रा = देखूं । मिलहुगे=मिलोगे । तलपे तड़पे । पियासी=प्यासी । विलंब=देर । मोहीरू = मुझे दरसन=दर्शन ।

पद्य 2."दरियाव..........गोयम ।"

अर्थ—हे भाई ! समुद्र की लहर समुद्र के भीतर ही रहती है अत समुद्र और लहर में क्या फर्क रह गया । वहाँ जहाँ भी देखो वहां पानी ही तो है समुद्र भी पानी ही है और लहर भी पानी ही है। वहाँ पानी से भिन्न कुछ भी नहीं है । फिर भी लहर का अलग नाम रखा है तो क्या लहर कहने से ही हम पानी नाम को कहना बन्द कर दें ? नहीं । इसी तरह यह दुनियाँ है इसी में आत्मा है और उसे ही ब्रह्म नाम दे दिया है यह हम ज्ञान से देखा है जो अब तक गुप्त था ।

शब्दार्थ—दरियाव=समुद्र । कोयम=क्या (कौन) । नीर पानी । होयम=होवे । फेरके=परिवर्तित करके । खोयम = खो दें । जग जगत (संसार) । गोयम - गुप्त ।

पद्य 3. "मो को..........सांस में ।।"

अर्थ हे भक्त ! तू मेरे को कहाँ ढूंढता है, मै तो तेरे पास ही हूं मैं न तो मन्दिर में हूं, न मस्जिद में रहता हूं न काबा में ही और न कैलाश पर्वत पर ही मेरी स्थिति है । क्रिया कर्म में भी मेरी एकान्त स नहीं है। योग तथा वैराग्य में भी मुझे मत समझो । अगर तुम मुझको खो तो क्षण भर तलाश करने पर ही में शीघ्र मिल सकता हूँ । मैं तो शहर बाहर रहने वाला हूं किन्तु मेरी राजधानी तो शहर की ही एक बस्ती है। कबीर जी कहते हैं कि यह सब केवल श्वास में ही समझो ।

शब्दार्थ-मोको=मुझको । ढूंढे = ढूंढता है । बन्दे = भक्त । दे मन्दिर । काबै=काबा (अरब का एक स्थान) । कोई = नहीं । जोग बैरा योग और वैराग्य । तुरतै=शीघ्र । तालास=तलाशी । मवास=बस्ती ।

साखी 1. "मन..........कोय ।"

अर्थ—कबीर दास जी कहते हैं कि यह मन कई प्रकार से आचरण करने वाला है। हर क्षण इसका रास्ता बदलता रहता है। जिसका मन एक ही रास्ते पर चलने वाला हो ऐसा मनुष्य तो कोई बिरला ही होता है।

शब्दार्थ—बहुलक=अनेकों। रग=आचरण (मार्ग)। छिनछिन=प्रति क्षण। एकै = एक ही। बिरला=अद्वितीय।

साखी 2. "मत·········एक।"

अर्थ—कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य! तू इस मन के विचार से मत चलना क्योंकि इसके कई विचार होते हैं। जो इस मन पर नियन्त्रक है ऐसा सज्जन तो कोई ही होता है।

शब्दार्थ—मते=विचार से। असवार=सवारी करने वाला (नियन्त्रक) साधू=सज्जन।

साखी 3. "मैं मन्ता·········पीस।"

अर्थ—हे मनुष्य! तू अहंकार, ममता और मन को नियन्त्रित कर और धीरे-धीरे परिश्रम कर तब ही यह तेरी सुन्दर काया सुख पावेगी और तेरे उस परिश्रम में ही ब्रह्म की झलक (साक्षात्कार) होगी।

शब्दार्थ—मैं=अहंकार। मन्ता=ममता। मारि रे=नियन्त्रित कर। नान्हाँ=धीरे-धीरे। पीस = परिश्रम। सुन्दरी=देह (शरीर)। झलके=प्रतीति। सीस=सिर।

साखी 4. "मन·········पिछांणि।"

अर्थ—हे मनुष्य! यह मन ही मथुरा तीर्थ है और दिल को ही तू द्वारिकापुरी समझ। यह काया ही काशी है। (सभी तीर्थ तेरे पास ही है तू क्यों तीर्थ जाता है।) अब तो तू केवल इस दस इन्द्रियों से शरीर में ही उस परम ज्योति की पहचान कर।

शब्दार्थ—काया=शरीर। जाँण=समझ। द्वारा = द्वारों वाला। देहुरा=शरीर। तामै=उसमें। जोति=ज्योति। पिछाणी=पहचान।

साखी 5. "आसन·········पचास।"

अर्थ—हे मनुष्य! (ईश्वर साक्षात्कार के निमित) तू आसन लगाकर क्यों बैठता है (तेरे आसन लगाने से क्या लाभ हो सकता है) क्योंकि तेरे मन में आशा (तृष्णा) अभी नष्ट नहीं हुई। जैसे की तेली के बैल को घर में ही पचास कोस दूरी तय करता है वैसे ही तू भी ये सब व्यर्थ श्रम करता है।

शब्दार्थ—भया=हुआ। मुई=मिट्टी। आस=आशा (तृष्णा)।

साखी 6. "दाढी ....खोट।"

अर्थ—हे मनुष्य! तू दाढ़ी और मूंछों को कटवा कर मुण्डी (सन्यासी) क्यों हो गया है? तू अपने मन का मुण्डन क्यों नहीं करता जिसमें बहुत सी बुराइयाँ भरी हुई हैं।

शब्दार्थ—मुण्डाय=मुण्डन कराकर। घोटम घोट=सिर मुण्डा (सन्यासी) जासे=जिसमें। भरिया=भरा हुआ है। खोट=बुराई।

साखी 7. "करनी ....बात।"

अर्थ—अज्ञानवश मानव बिना कुछ किये ही दिन रात केवल कथनी कहा करता है और उस सुनी हुई एक ही बात को लेकर हमेशा कुत्ते की तरह भौंकता रहता है।

शब्दार्थ—बिनु=बिना। कथै=कहता है। कूकर=कुत्ता। ज्यों=जैसे। भूंकत=भौंकता है।

साखी 8. "कथणी.........जाइ।"

अर्थ—यदि कर्त्तव्य नहीं किया तो कहने मात्र से क्या लाभ। जैसे कि कल्पनाओं द्वारा बनाया गया परकोटा देखते ही ढह जाता है।

शब्दार्थ—कथणी=सैद्धान्तिक बात। करणी=कर्त्तव्य. नां ठहराइ=नहीं स्थिर किया। कालबूत=कल्पनाएँ। कोट=परकोटा (चहार दीवारी)। देषत=देखते ही। ढही जाइ गिर जाता है।

साखी 9. "पानी... ...प्रभात।"

अर्थ—मनुष्य का यह जीवन पानी के बुलबुले की तरह है। यह देखते देखते वैसे ही लुप्त हो जायेगा जैसे प्रातःकाल में तारे लुप्त हो जाते हैं।

शब्दार्थ—केरा=का। बुदबुदा=बुलबुला। अस=यह। जात=जीवन।

साखी 10. "इक..........जाहि।"

अर्थ—हे मानव! जिन्दगी में एक दिन ऐसा भी आयेगा कि तो किसी के प्रयोजन का न रहेगा। घर की पत्नी को भी पुकारता रहेगा कि तेरे शरीर की नाड़ी तब तक बन्द हो चुकी होगी।

शब्दार्थ—इक-एक। होइगा=होगा। कोउ=कोई भी। का

किसी । नारी = स्त्री । नारी = नाड़ी (इडा, पिंगला आदि) ।

साखी 11. "कबीर............पार ।"

अर्थ—कबीर दास जी कहते हैं कि मैं इस दुनिया को कितनी बार समझाऊँ (यह मानता ही नहीं) यह तो भेड़ की पूँछ पकड़ कर ही पार उतरना चाहता है (जो कि कभी संभव नहीं) ।

शब्दार्थ—कै = कितनी । उत्रया चाहैं = उतरना चाहता है ।

साखी 12. "लघुता... ... ...धूरि ।।"

अर्थ—नम्रता से महानता मिल जाती है किंतु महानता से महान् व्यक्ति दूर ही रहते हैं (वे अपनी बड़ाई नहीं करते) या ऐश्वर्यमान लोगों से ईश्वर दूर ही रहता है । चींटी को शक्कर मिल गई है अतः वह अपने रास्ते चल रही है किंतु हाथी के सिर पर धूल ही चढ रही है ।

शब्दार्थ—लघुता नम्रता । प्रभुता = महानता । प्रभु=ईश्वर, महान् व्यक्ति । शक्कर शक्कर । धूरि=धूलि ।

साखी 13. "आँखड़िया... ... ...पुकारि पुकारि ।।"

अर्थ—हे प्रभु ! तेरी राह देखते-देखते आँखे चकरा गई हैं और तेरा नाम लेते-लेते जीभ में छाले पड़ गये हैं ।

शब्दार्थ—आँखड़िया=आँखों में । झाँई दृष्टिक्षय । पंथ=रास्ता । निहारि=देखकर । जीभड़ियाँ = जीभ में ।

साखी 14. "आछे...... ....खेत ।"

अर्थ—जो अच्छे दिन थे वे सब अतीत के गर्भ में ही चले गये हैं । क्योंकि हमने गुरु से ज्ञान के हितार्थ साधना नहीं की अब पछताना पड़ रहा है लेकिन पछताने से क्या होता है क्योंकि चिड़ियायें खेत को चुग चुकी हैं ।

शब्दार्थ- आछे=अच्छे । पीछे =पीछे (भूतकाल) । हेतु=प्रेम । पछितावा=पश्चाताप ।

साखी 15. "कबिरा..............लाइ ।"

अर्थ—कबीर दासजी कहते हैं कि हे मनुष्य ! तू पढ़ने को रहने दे और पुस्तकों को भी जाने दे । तू तो बावन अक्षरों की वर्णमाला से केवल 'र' और 'म' इन दो अक्षरों को ही चित्त में दृढ़तापूर्वक लगा ले (अर्थात् राम में अपना मन एकाग्र कर दे) ।

शब्दार्थ—पढिबा पढाई (अध्ययन) । बहाइ = बहाना । आषिर= अक्षर । सोधि=शीघ्र । ररैं ममैं रकार और मकार । चित्त लाइ ध्यान लगा ।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "मैं मन्ता..............सीस" में रेखांकित का आशय है

उत्तर–(ग) सहस्रार चक्र में ईश्वर के दर्शन हो सकेंगे।

प्रश्न 2. कबीर ने सच्चा साधु किसे माना है ?

उत्तर–कबीर के मत में जिसने मन पर नियन्त्रण कर लिया है व सच्चा साधु है।

प्रश्न 3. कबीर ने मनुष्य को पानी के बुलबुले के समान बतलाया है ?

उत्तर–क्योंकि मनुष्य का शरीर पानी के बुलबुलें के समान नश्वर

प्रश्न 4. कबीर के अनुसार ईश्वर का निवास कहाँ है ?

उत्तर–कबीर के मत में ईश्वर का निवास मानव की आत्मा में

प्रश्न 5. कबीर ने आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता को रूप के द्वारा स्पष्ट किया है ?

उत्तर—जल एवं लहर की समुद्र में स्थिति को रूपक बनाकर ने शरीर में आत्मा व परमात्मा की स्थिति स्पष्ट की है।

प्रश्न 6. प्रभु के वियोग में कबीर की मनोदशा कैसी हो रही थी

उत्तर—प्रभु के वियोग में उनकी आँखों में भांइयां पड़ गई हैं वे बार प्रभु की राह देखते रहते हैं। जैसे जल के बिना मछली तड़पती ही उनका दिल एक तड़प का अनुभव कर रहा है उन्हें नींद नहीं क्योंकि उनकी आँखें प्रभु के दर्शनों की प्यासी हैं। प्रभु का नाम ले उनकी जीभ में छाले पड़ गये हैं।

प्रश्न 7. किसका नाम पुकारते-पुकरते कबीर की जिह्वा में पड़ गये हैं ?

उत्तर– ईश्वर का नाम लेते-लेते।

प्रश्न 8. कबीर ने जिन-जिन दोहों में पाखंड का विरोध उनका सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर—इसके लिए दोहा स. 4, 5, 6, 8 और 11 का अर्थ अर्थ पहले दिया जा चुका है।

प्रश्न 9. "घर की नारी को कहै तन की नारी जाहिं" में 'नारी' शब्द किन-किन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर—नारी शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। पहली बार नारी शब्द का अर्थ है स्त्री और दूसरी बार नारी शब्द का अर्थ है नाड़ी।

प्रश्न 10. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

उत्तर–(i) दरसन=दर्शन (ii) सनेही=स्नेही
(iii) बैराग=वैराग्य (iv) सांस=श्वास
(v) बिरला=विरला (vi) छिन छिन=क्षण क्षण
(vii) मिरग=मृग (viii) आपिर=अक्षर
(ix) पुहुप=पुष्प।

प्रश्न 11. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखिए।

उत्तर—(i) हूँ=मैं (ii) मोको=मुझे (iii) भया=हुआ
(iv) मुई=मर गई (v) कोउ=कोई
(vi) काहू का=किसी का (vii) जु=जो।

2. सूरदास

पद्य 1. "अविगत..............गावै।"

अर्थ—हे प्रभु ! तेरी स्थिति (सत्ता) अज्ञात है जो कहते नहीं बनती। जैसे गूंगा व्यक्ति मुदुफल के रसास्वाद को केवल अन्तरात्मा से ही सराहता है (बाहर उसे प्रकट नहीं कर सकता)। परमात्मा का जो आनंद है वह तो हमेशा चित्त में अपरिचित तुष्टि उत्पन करता है। मन एवं वचन से अगम्य (परे) तथा अगोचर (अदर्शनीय) उस (परमात्मा) को वही जान सकता है जो उसे प्राप्त करता है। स्वरूप, गुण, जाति एवं युक्ति से रहित यह मन बिना सहारे सब तरफ चक्कर काटता फिर रहा है। इसने विचार किया तो पता चला कि ईश्वर सभी तरह से अगम्य है (सुगम नहीं है) अतः सूरदास जी भी सगुण ईश्वर की लीलाओं को पद्य रूप में गाते हैं।

भाव–निर्गुण ब्रह्म का विषय गूढ़ है अतः सगुण का अवलम्बन लेना उचित है।

शब्दार्थ—अविगत= अज्ञात। आव=आती= (बनती)। भावै=अच्छा लगता है। अमित= अपरिमित। अगम=अगम्य। अगोचर= =अलक्ष। जुगुति=युक्ति। निरालम्ब=बिना सहारे। चक्रन=चक्कर काटता हुआ। धावै=दौड़ता है।

पद्य 2. "किलकत··· ···पियावति ।।"

अर्थ—भगवान् कृष्ण किलकारी मारते हुए घुटनों के बल चल हैं। नंदजी के मणिजड़ित फर्श वाले आंगन में अपने मुँह की परछाई देख कर वे उसे पकड़ने दौड़ते हैं। कभी वे अपनी ही छाया को देख पक का मन करते हैं। वे फिर शब्द करते हुए हँसते हैं। उनके दोनों दाँत सुन्दर लग रहे हैं और बार-बार मानो आनंद की हँसी में अवगाहन (स्न करते हैं। स्वर्णमयी धरती पर हाथ पैरों की छाया एक सुन्दर उपमा भाँति शोभा पाती है। प्रत्येक मणि में विम्बित प्रत्येक हाथ व पैर, लग यह पृथ्वी कमल पर सजी बैठी हो। ऐसे बाल्यावस्था के आनन्द को देख यशोदा बार-बार नंदजी को बुलाती है और अपने आंचल (वस्त्र) में को ढक कर दूध पिलाने लगती है।

शब्दार्थ—कान्ह=कृष्ण। घुटरुवनि=घुटनों के बल। आवत= हैं। कनक=स्वर्ण। पकरिवे=पकड़ने के लिए। निरखि=देखकर। छ छाया। चित्त=मन। राजत=शोभा देता है। इदँतियां=दोनों दांत। =उसमें ही। बैठकी=आसन। साजत = सजधज कर। तर=तले (नीचे अंचरा=आंचल (वस्त्र)। पियावति=पिलाती है।

पद्य 3. "मैया··· ···पूत।"

अर्थ-हे माँ! यह बलदेव भैया मुझे बहुत चिढ़ाते हैं। ये कहते हैं कि तू मूल्य देकर खरीदा गया है, तू यशोदा के कब पैदा ह क्या कहूँ इसी रोष से तो मैं खेलने नहीं जाता (और जब जाता हूँ तो) बार-बार कहते हैं कि तेरी माँ कौन है तेरा पिता कौन है। देख नंद यशोदा का वर्ण तो गोर है और तेरा शरीर काला है। इस प्रकार वे सिखा देते हैं। जिससे सभी ग्वाल बाल चुटकियां बजा कर मेरी हँसी हैं। उस पर भी तू मुझे ही पीटती है, बलदेव भैया पर तो कभी रीस करती। इस प्रकार कहते हुए कृष्ण के मुँह पर आक्रोश देख कर उनकी बातें सुन कर यशोदा बहुत दया व्यक्त करती है—अरे कृष्ण! बलदेव तो जन्म से ही धूर्त और चुगलखोर है। मैं इन गायों की खाकर कहती हूँ मैं ही तुम्हारी माँ हूँ और तुम मेरे ही पुत्र हो।

शब्दार्थ=दाऊ=बलदेव। जायो=पैदा किया। एहि=इस। रिस= हौं=मैं। जातु=जात। सिखै देत=सिखा देते हैं। लखि=देख कर। चुगलखोर। जनमत=जन्म से ही। गोधन=गायें। सौं=सौंगध। पूत

पद्य 4. "विधाताहिं ....पुरानो ।।"

अर्थ--(कोई गोपी कहती है-) मैंने यह जान लिया है कि उस विधाता (ब्रह्मा) ने ही गलती कर दी है जो उस कृष्ण को बार-बार देखकर और समझकर मैं पछताती रहती हूँ। मैंने प्रयत्नपूर्वक सोचा है और सभी अंगों में चतुरतापूर्वक एक ही चतुराई की ठान ली है। उस रोम रोम में व्याप्त कृष्ण पर यह दृष्टि नहीं डाली गई मानो इतनी-सी कला बाकी रही हो या इतनी नष्ट हो गई हो जिससे मुझे अत्यन्त आनन्द होता है। दोनों आँखों में उत्साह पैदा होता है। फिर भी मैं पानी भर कर चली जा रही हूँ। सूरदासजी (ऐसे अपरिमित आनन्द को देखकर) कहते हैं कि, सुमेरु पर्वत कहाँ तक समावे उसके लिए तो यह बुद्धि भी एक पुराना बर्तन (निवास-स्थान)हो गया है।

शब्दार्थ--विधाताहिं = विधाता में (ब्रह्मा में)। चूक = भूल। दीठि=दृष्टि। दई=डाली। नसानी=नष्ट हो गई। दुईनैंनां=दोनों नेत्र। धौं=तक। बासनी=बर्तन।

पद्य 5. "बूझत..........मोरी ।।"

अर्थ-भगवान कृष्ण पूछते हैं कि-हे गौर वर्णवाली गोपी ! तुम कौन हो ? कहाँ रहती हो ? किसकी लडकी हो ? ब्रज की गलियों में तो तेरे को कभी नहीं देखा। इस पर वह गोपी (राधा) कहती है-हम ब्रज में क्या लेने आएँ ? हम तो अपने घर ही खेलती रहती है सुना है वह नंदजी का लाडला बेटा कृष्ण रहता है जो रोजाना दही और मक्खन की चोरी करता रहता है। (इसे सुनकर) कृष्ण कहते हैं-हम तेरा क्या चोर लेंगे देखें हमारे साथ आओ और खेलने चलें। सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण भी रसिकों के सिरमोर हैं, उनकी बातों से वह भोली राधा और भोली हो गई (अर्थात् वह उनकी बातों में आ गई।)

शब्दार्थ-बूझत = पूछते हैं। खोरी=गली। ब्रजतन = ब्रज तक। पोरी घर का बरामदा। स्रवनन=कानों से। ढोटा=पुत्र। जोरी जोड़ी। भुरई=भोली बन गई।

पद्य 6. "संदेसो...............संकोचा ।।"

अर्थ (यशोदा नन्दगांव जाने वाले किसी पथिक से कह रही है-) हे पथिक ! तुम जाकर देवकी से यह संदेश कहना मैं तो दौड़कर हमेशा तेरे

पुत्र इस कृष्ण की मदद ही करती रही हूँ। यद्यपि तुम उसकी आदत जान
हो वह मुझसे भी वैसा ही करता है। जब सवेरे उठता है तो तेरे कृष्ण
मक्खन रोटी ही अच्छी लगती है। वह तेल, उबटन (क्रीम) और गर्म प
को देखते ही भागता है। वह जो-जो चीज मांगता है, वही-वही चीज मैं
देती हूँ, तब जाकर कहीं वह नहाता है। हे पथिक ! सुनो। मेरे दिल में र
दिन यही चिन्ता बनी होती है कि कृष्ण मेरी आंखों का प्यारा है फिर
वह देवकी क्यों संकोच करती है।

शब्दार्थ–तिहारे=तेरे। मया=मदद। टेव=आदत। तऊ=
हो। अरु=और। तातो=गर्म। भजि जाने=भाग जाता है। रैनदि
रात-दिन। अलक लड़ैतो=प्यारा। हाँ=वह।

पद्य 7. "ऊधो·····················सोय।"

अर्थ–(गोपियाँ कह रही हैं) हे उद्धव ! यह मन हमारे हाथ में
(क्योंकि मन चंचल होता है) हमारे मन को तो भगवान कृष्ण जब म
गये तो अपने साथ ही रथ पर बिठाकर ले गये। अन्यथा हम आपके
को क्यों छोड़तीं। तुम तो बड़ी खुशी से लेकर आये हो। हम तो
कृष्ण की करतूतों को जानती हैं जो हमारा मन लेने के बाद योग
तुमको भेजा है। अगर हम आज भी अपने मन को प्राप्त करे लें तो
हमारी कुछ बात हो। हमें तेरी करोड़ों सौगंध हैं, हम वे ही कर लें
तुम कहोगे (किन्तु मन तो पास में हो)।

शब्दार्थ–ऊधो=उद्धव। जबै=जिस समय। सिधारे=प्र
किया। नातरु=अन्यथा। छांडहि=छोड़ती। ल्याए=लाये। भख
जानती हैं। पठाए=भेजे। अजहूँ=आज भी।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. यशोदा देवकी को कृष्ण के सम्बन्ध में संदेश क्यों भेज
उत्तर–(क) कृष्ण के प्रति अत्यधिक ममता के कारण।

प्रश्न 2. "तुम्हारो कहा चोरि हम लैहैं" यह पंक्ति श्री कृ
किस मनोभाव को व्यक्त करती है–

उत्तर–(घ) रसिकता।

प्रश्न 3. यशोदा श्री कृष्ण को विश्वास दिलाने के लिए
सौगंध खाती है ?

उत्तर–यशोदा श्री कृष्ण को विश्वास दिलाने के लिए गायों की सौगन्ध खाती है।

प्रश्न 4. सूर ने 'अगम' 'अगोचर' किसको बतलाया है?

उत्तर–सूर ने ये विशेषण निर्गुण ब्रह्म को लक्ष्य करके कहे हैं। उनके मत से निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती और न ही उसका साक्षात्कार हो सकता है।

प्रश्न 5. श्री कृष्ण राधा के अनुसार क्या चुराते रहते हैं?

उत्तर–राधा के अनुसार श्री कृष्ण दही और माखन चुराते रहते हैं?

प्रश्न 6. सूर सगुण ब्रह्म की उपासना के पक्षधर क्यों हैं?

उत्तर–क्योंकि निगुण ब्रह्म स्वरूप, गुण, जाति व युक्ति से रहित होता है और इस कारण मन को सहारा न मिल पाने से मनुष्य चक्कर खाता रहता है और मनुष्य को न तो वह प्राप्त होता है न उसका साक्षात्कार ही होता है क्योंकि वह अगम और अगोचर है?

प्रश्न 7. बलराम श्री कृष्ण को क्या-क्या कहकर चिढ़ाते हैं?

उत्तर–बलराम श्री कृष्ण को कहते हैं कि तेरे माँ बाप कौन है? तू तो मूल्य देकर खरीदा गया है। नन्द यशोदा तो गौरवर्ण के हैं और तू श्यामवर्ण का है फिर कैसे उनका लड़का हो सकता है।

प्रश्न 8. 'बूझत स्याम कौन तू गोरी' पद के आधार पर श्री कृष्ण की विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर––इस पद्य में कृष्ण की चंचलता, चपलता, रसिकता तथा किशोरावस्था की सहज भावुकता झलकती है। इसके अतिरिक्त खेलने का शौक, माखन व दही चुराने का कार्य आदि भी उनकी विशेषताएं कही जा सकती हैं।

प्रश्न 9. पठित पदों के आधार पर श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन करो।

उत्तर–बचपन में श्री कृष्ण प्रकृति परिवेश की सहज भावुकता को लिए हुए हैं वे घुटनों के बल चलते हैं। किलकारी मारना उनकी स्वाभाविकता या आदत सी हो गई है वे अपनी परछाई को कभी फर्श में देखते हैं तो कभी धूप में और उसे पकड़ने दौड़ते हैं। ग्वालों के साथ वे खेलते हैं किन्तु बलराम आदि दूसरे पक्षधरों द्वारा चिढाये जाने पर माँ से सहज भाव में प्रश्न करते हैं तथा माँ के प्रति आक्रोश भी व्यक्त करते हैं। किशोरावस्था में

वे चंचल एवं चपल हो गये हैं। गोपियों को चिढ़ाना उनके लिए स्वा
है। दही, मक्खन को चुराने में भी वे प्रवीण हैं।

प्रश्न 10. बलराम श्री कृष्ण की शिकायत सुनते तो क्या जवा

उत्तर– वे या तो माँ के सामने मना करते या झूठे बहाने ब
टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहकर कृष्ण को और उलझा देते।

3. गोस्वामी तुलसीदास

पद्य 1. "राम……………… कौर रे ॥"

अर्थ–हे बावले मनुष्य ! तू 'राम' ही का जप कर। इस घो
को समुद्र और राम नाम को अपनी नौका समझ। यह राम नाम रू
ही एक ऐसा साधन है जिससे तू अपनी सब सिद्धियों को प्राप्त कर
युग रूपी रोग एक ओर ग्रस रहा है। एक ओर योग, संयम औ
जैसे कठिन उपाय हैं। यहाँ जो भी अच्छा-बुरा है या जो भी दाया
वह सब कोई काम देने वाला नहा है। अन्त समय में राम नाम
काम आने वाली चीज है। यह संसार रूप आकाश पुष्प का उद्य
रहा है, यहाँ आनन्द देने वाले आरामदायक महल भी हैं किन्तु इ
देखकर तू उस राम नाम को मत भूल क्योंकि यदि राम को
अन्य का भरोसा करेगा तो तेरी स्थिति उस कुत्ते की तरह होगी
गये भोजन को छोड़कर ठंडी रोटी के टुकड़ों को ही मांगता है।

शब्दार्थ–जपु जपकर। बावरे=बावले (भोले) । भव
संसार समुद्र। जोग=योग मार्ग। पोच=बुरा । बाम=बायाँ ।
=आकाश पुष्प गृह। फलि फूली=विकसित हुई। धुवा=आनन्द (वि
धौरहर=महल। छाड़ि=छोड़कर। कूर=कुत्ता। कौर=ठंडी रोटी।

पद्य 2. "मन पछिते हैं………बहु धीते।"

अर्थ–मौका निकल जाने पर ही यह मन प्रायश्चित कर
मनुज ! तूने दुर्लभ मनुष्य देह प्राप्त की है अतः मन, वचन और
ईश्वर के श्री चरणों का ही भजन कर। बलराम मृत्यु से सहस्रबा
जैसे राजा भी न बच सके। यहाँ सबने मेरा-मेरा करते हुए भी धन
को छोड दिया। अन्त समय में वे भी खाली हाथ गये अतः हे
स्त्री आदि सभी को स्वार्थ युक्त ही समझ। और इन सब सांसा
से आसक्ति मत रख। हे पामर ! ये सब अन्त में तेरे को छोड़

ी से इनको क्यों नही छोड़ देता। अब ईश्वर में प्रेम रख। तू जागृति । हे मूर्ख ! अपने हृदय से दुष्ट आशा (तृष्णा) को छोड़। विषय भोग ी घी की आहूति से यह कामाग्नि बुझने वाली वस्तु नहीं है।

शब्दार्थ--पछितै=पश्चाताप करना। पाइ=प्राप्त करके। दसवदन= ाण। कालबली=बलवान मृत्यु। धाम=सम्पत्ति (भवन आदि)। संवारे= टना चाहा। बनितादि=स्त्री आदि। नेह=प्रेम। आथहि=प्रभु में। जीतें दय से।

पद्य 3. "धूत………दोऊ।"

अर्थ--हे मनुष्य ! तुझे यह दुनियाँ चाहे धूर्त बतलावे या संन्यासी, नपूत कहे या जुलाहा। दुनियाँ में यही काम है कि किसी को बेटी किसी बेटे से नहीं ब्याही जाती। क्योंकि जाति बिगड़ती है सो यह क्या (मामला) । मुझे तो (यह सब बेकार लगते हैं, कारण कि) राम का नाम ही सर्व- ष्ठ लगता है। बाकी दुनिया जैसा जी में आवे वैसा कहे क्योंकि हम री न्दर्गी में तो 'माँग कर खाना, मस्जिद में सोना और किसी से लेना न सी से देना' ही एक सिद्धान्त बन चुका है।

शब्दार्थ--जोलहा=जुलाहा। बिगार=बिगाड। रुचे=अच्छा लगे। ो=खाना। मसीत=मस्जिद। सोइबो=सोना। लेबै=लेना।

पद्य 4. "कीर के…………नाई।"

अर्थ-(राम वनवास का वर्णन करते हुए तुलसी दासजी कहते हैं, कि) ने के पंखों की भाँति राजाओं के वस्त्राभूषणों ने अंगों पर उपमा (शोभा) न्त कर रखी है। अयोध्या को मार्ग निवास के (लिए उपयुक्त) वृक्ष की ति समझ कर छोड दिया है। आज वे केवल रास्ते के ही साथी हैं जैसे य आदमी और औरतें हैं। उनके साथ भाई है और पवित्र प्रियतमा सीता मानो धर्म ने ही क्रियात्मक रूप में एक शोभायमान शरीर धारण कर ा हो। ऐसे वे कमलनेत्र भगवान् राम अपने पिता दशरथ के राज्य को ड़ कर राहगीर की भाँति चले जा रहे हैं।

शब्दार्थ--कागर=पंख। नृपचीर=राजसी वस्त्र। उप्पम=शोभा। ानि=अंगों में। औध=अयोध्या। मगवास=मार्गनिवास। रूख=वृक्ष। ीवलोचन=कमलनेत्र।

पद्य 5. "कागर कीर…………नाई।"

अर्थ—पंखों वाले तोते की तरह आभूषणों और वस्त्रों से शरीर श
हो रहा है। जैसे काई से युक्त जल को तोता छोड़ देता है (वैसे ही रा
भी अयोध्या को छोड़ दिया है) माता-पिता व सभी प्रियजनों का सम
करके प्रेमयुक्त स्वभाव से आत्मीयता वाले राम के साथ उनकी प्रिया
है और भाई लक्ष्मण हैं। अयोध्या में अब वे केवल दो दिन के ही मेह
है। ऐसे में राम अपने पिता का राज्य त्याग कर साधारण पथिक की
चल रहे हैं।

शब्दार्थ—लस्यौ=शोभित हुआ। काई=कुत्सित आवरण। सनम
सम्मान करके। सुभाय=स्वभाव। सनेह=प्रेम। सगाई=आत्मीयता। द्वै
पहुनाई=अतिथि।

लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध

चौपाई—"नभ…………रोकै।" ॥1–4॥

अर्थ—उस मेघनाद ने आकाश में चढ़कर दहकते हुए अंगारे ब
शुरू कर दिये हैं और उनकी माया से पृथ्वी पर जल फूट रहा है। पि
और पिशाची अनेक प्रकार से 'मारो, 'काटो' की आवाज करते हुए नृत्य
रहे हैं। कभी वह माया से विष्ठा, कलल, रक्त, बाल व हड्डियों को ब
है तो कभी पत्थर ही छोड़ता है। उसने धूल की बरसात करके अंधेर
दिया है जहां खुद का फैलाया हाथ भी नहीं दिखाई देता। मेघनाद क
माया को देख कर बन्दर व्याकुल हो उठे। वे सोचने लगे कि इस तर
सबकी मौत निश्चित है। बन्दरों की कातरता और प्रतिपक्ष के उत्सा
कौतुक (कृत्रिमता) को देख कर भगवान् राम मुस्कराये और उन्होंने ज
सोचा कि बन्दर डर गये हैं, तो एक बाण से उस माया को नष्ट कर
जैसे सूर्य अंधेरे को नष्ट कर देता है। बन्दर, भालू भगवान् की इस
दृष्टि को देख कर अपने में उत्साह भरते हैं और युद्ध से नहीं रुकते।

शब्दार्थ- महि=पृथ्वी। धुनि=आवाज। पूय=कलल (मज्जा)।
बाल। हाड़ा=हड्डियां। उपल=पत्थर। धूरी-धूल। पसारा—फैल
एहि लेखे—इस तरह। सभीत=डरे हुए। बान-बाण। तिमिर निक
अंधकार समूह को। रन=युद्ध।

दोहा—"आयसु…………हाथ।" ॥1॥

अर्थ—राम से आज्ञा लेकर अंगद इत्यादि बन्दरों के साथ लक्ष्मण हाथ में धनुष बाण लेकर क्रोधी की भाँति (युद्ध के लिए) चले ।

शब्दार्थ-आयसु=आज्ञा । मागि=माँग कर । पहि से । सरासन=धनुष ।

चौपाई—"छतज............अनदा" ॥5–9॥

अर्थ-उन लक्ष्मण के नेत्र शीतल हैं । हृदय और भुजाएं विशाल(पुष्ट) हैं । हिमालय पर्वत के समान शरीर कुछ लालिमा लिए हुए है । इनके विपक्ष में रावण ने कई वीर भेजे हैं वे अनेक भाँति के हथियारों को लेकर दौड़ते हैं । पर्वतों, नाखूनों एवं वृक्षों को ही हथियार के रूप में धारण करने वाले बन्दर भी भगवान राम का जयघोष करते हुए दौड़ते हैं । जोड़ी के साथ जोड़ी वाले वे राक्षस और बंदर भिड़ जाते हैं । सर्वत्र जय शब्द और (विजय के प्रति) उनकी गहरी इच्छा है । वे मुट्ठियों, लातों और दाँतों से प्रहार करते हैं । बन्दर भी उनको रोकते हैं । यही आवाजे चारों ओर सुनाई देती हैं कि, मारो, काटो, पकडो । सिर तोड़ दो या भुजा उखाड़ लो । नवों द्वीपों में ऐसी ही आवाजें गूँज रही हैं । प्रचड धड़ इधर उधर दौड़ रहे हैं । इस वातावरण को देख कर आकाश में देव समुदाय कभी आश्चर्य करता है तो कभी आनन्द का अनुभव करता है ।

दोहा–"रुधिर..............छाइ" ॥2॥

अर्थ–गाढ़ा रक्त गड्ढों में भर कर जम गया है । ऊपर धूल उड़ रही है । मानों अंगारों के समूह पर लाशों का धुआँ छा रहा हो ।

शब्दार्थ—छतज=शीतल । बिसाला=पुष्ट (विशाल) । निभ=समान । लाली=लालिमा । सुभट=वीर । भूधर=पर्वत । विटप=वृक्ष । धाए=दौड़े । जोरिहि=जोड़ी । (समकक्षता । धोरी=क्रम । पूनि=प्रतिध्वनित । वृंदा= समुदाय । बिसमय=विस्मय (आश्चर्य) । रासिह=राशि पर ।

चौपाई–"घायल.................हयागें ।" ॥9–1?॥

अर्थ–इस युद्ध में घायल वीर ऐसी शोभा पाते हैं मानो पुष्पित किंशुक के पेड़ हों । युद्ध में लक्ष्मण और मेघनाद दोनों अतुलित बलशाली हैं जो अत्यन्त क्रोध करते हुए लड़ रहे हैं । एक व्यक्ति अकेला नहीं जीत सकता । अतः राक्षक कपटपूर्वक अन्याय का आचरण कर रहे हैं । वे अत्यन्त क्रोधित हैं और (मेघनाद के पक्ष में) उन्होंने बहुत कुछ किया है । अतः लक्ष्मण भी

मेघनाद के रथ को तोड़ देते हैं और सारथी समेत रथ चकनाचूर हो जाता है। अनेक विध प्रहारों से शेषावतार लक्ष्मण जी मेघनाद को केवल प्राण जिसके अवशिष्ट हों ऐसा कर देते हैं। मेघनाद भी मन में यह अनुमान कर लेता है कि बड़ा सकट है मेरे प्राण हर लिये जायेंगे। (किंतु संभल कर) वीरघातिनी शक्ति छोड़ देता है। शक्ति का तेज पुंज लक्ष्मण के हृदय में प्रविष्ट हो जाता है शक्ति लगने पर वे मूर्छित हो जाते हैं अतः राक्षस निर्भय होकर उनके पास चले जाते हैं।

शब्दार्थ–बिराजहिं=शोभा देते हैं। कुसुमित = पुष्पित। अनीती = अन्याय। अनंता=लक्ष्मण। भजेउ=भग्न कर दिया। सेषा=लक्ष्मण। हरि =हर लेगा। सांगी=शक्ति। मुरुछा=मूर्च्छा (बेहोशी)।

दोहा "मेघनाद..................खिसिआइ।" ॥3॥

अर्थ–मेघनाद जैसे करोड़ों योद्धा लक्ष्मण को उठा रहे हैं किन्तु शेष रूप से सम्पूर्ण पृथ्वी के आधार हैं वे कैसे उठ सकते हैं, हिल सकते या खिच सकते हैं।

शब्दार्थ––सम=समान। कोटिसत=करोड़ों-सैकड़ों। जोधा=योद्धा। खिसिआइ=खिचना।

चौपाई–"सुनु..................तुरन्ता।" ॥13–16॥

अर्थ–हे पार्वती ! मनो जो अपने क्रोध से चौदह भुवनों को ही सकते हैं उन्हें युद्ध में कौन जीतने वाला है। इस संसार में देवता मनुष्य भी उसकी पूजा करते हैं। इस रहस्य को तो वही जान सकता जिस पर भगवान राम की कृपा है। सायंकाल होने पर दोनों सेनाएं शिविरों में लौटती हैं तथा अपने पक्ष के मृतक वीरों को ढूंढती हैं सर्वव्यापक अजेय भुवनों के स्वामी और साक्षात् ब्रह्मा हैं वे ही दयालु पूछ रहे हैं कि लक्ष्मण कहाँ है ? इतने में हनुमानजी लक्ष्मण को लेकर जाते हैं। (उस अवस्था में) छोटे भाई को देखकर राम दुःख का अनुभव करते हैं। जामवंत बोले कि सुखैन वैद्य तो लंका मे ही रहता है उसे लाने हेतु किसे भेजा जाय ? तब अत्यन्त सूक्ष्म शरीर से हनुमानजी गये उसको घर समेत वहाँ उठा लाये।

शब्दार्थ—जारइ=जलाता है। जानइ=जानता है। फिरी=लौटी। द्वौ=दोनों। सभारन=संभालने (ढूंढते)। अनी=सेना। पठई =भेजे।

दोहा–"राम..................लेन।" ॥4॥

अर्थ–सुखेन वैद्य वहाँ आ गया और उसने भगवान् राम के चरण-कमलों में सिर झुकाया। उन्होंने उस पर्वत का और उस पर पाई जाने वाली उस औषधि का नाम बताकर कहा कि हे हनुमान ! तुम्हीं उस औषधि को लेने जाओ।

शब्दार्थ–पदार बिन्द=चरणकमल। नायउ=झुकाया। सुषेन=सुखेन। जाहु=जाओ। लेन=लेने के लिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "मांगो के खैबो, मसीत को सोइबो" से कवि की कौनसी प्रवृत्ति उजागर होती है ?

उत्तर—(च) सन्तोष की।

प्रश्न 2. "सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू। जारइ भुवन चारिदस आसू॥
सक संग्राम जीती को ताही। सेवहि सुर नर अग जग माहीं॥"
उपर्युक्त पंक्तियों में "सेवहि सुर नर अग जम माहीं।" किसके लिए आया है ?

उत्तर— (क) लक्ष्मण के लिए।

प्रश्न 3. घायल वीरों की उपमा तुलसी ने किससे दी है ?

उत्तर—पुष्पित किंशुक वृक्षों से घायल वीरों की उपमा दी गई है।

प्रश्न 4. तुलसी ने किस देह को दुर्लभ कहा है ?

उत्तर—मनुष्य देह को दुर्लभ कहा है।

प्रश्न 5. "हम हम करि धन धाम संवारे" इस पंक्ति में "हम-हम" मनुष्य की कौनसी मनोवृत्ति का द्योतक है ?

उत्तर–यह अहंकार का द्योतक है।

प्रश्न 6. "राम नाम ही सों अन्त सब ही को काम रे।" तुलसी के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर—तुलसी राम के अनन्य भक्त हैं और मनुष्य के पारलौकिक बोध हेतु उनकी उक्त पंक्ति सफल प्रेरक भी है। इस दृष्टि के तथा धर्मानुकूल कर्त्तव्य के रूप में भी औचित्यपूर्ण होने से उपादेय है।

प्रश्न 7. तुलसी के अनुसार सुत वनितादि से नेह क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर—ये सब स्वार्थरत हैं तथा सब छोड़ देने वाले हैं इनका साथ हमेशा का साथ नहीं है।

प्रश्न 8. पठित पद के आधार पर राम के राज त्याग का वर्ण
अपने शब्दों में कीजिए ?

उत्तर–इस हेतु पद्य सं. 4 व 5 का अर्थ देखें। पूर्व में दिया
चुका है।

प्रश्न 9. पठित अंश के आधार पर बंदरों के युद्ध कौशल का वर
अपने शब्दों में करें ?

उत्तर—चौ. सं 5–9 से अन्तर्गत दिया जा चुका है।

प्रश्न 10. तुलसी ने धर्म और क्रिया की तुलना किससे की है ?
उपमा क्यों दी गई है ?

उत्तर—तुलसी ने राम के लिए धर्म की और सीता के लिए क्रि
की उपमा दी है। धर्म की उपमा देकर "मर्यादा के महत्व को स्थापित कर
तुलसी का उद्देश्य रहा है। इसी तरह क्रिया की उपमा सीता को दी
है इसका कारण "उस मर्यादा रूप धर्म की क्रियाशीलता का वह साक्षात्
है" यह प्रकट करना है।

प्रश्न 11. पठित पदों के आधार पर तुलसी के भक्ति संबंधी भ
को लगभग 100 शब्दों में लिखिए ?

उत्तर—तुलसी राम के अनन्य उपासक हैं, उनके लिए सारा सं
राममय है, उनकी भक्ति सेवक भाव की है वे राम को स्वामी मानते
राम का नाम उनकी भक्ति का प्रथम सोपान है। वे अपने आपको भी
राम नाम का पुण्य स्मरण करने के लिए प्रबोधित करते हैं तथा अपने
हृदय को सांसारिकता से विरक्त होकर ईश्वर की उपासना करने के
प्रेरित करते हैं। प्रभु के समक्ष निश्चल और निष्पक्ष आत्मनिवेदन तु
की दृष्टि में भक्ति का ही दूसरा रूप है। निर्द्वन्द्व भाव से परमाराध
चिंतन उनकी निर्भीक भक्ति का सूचक है। वे लोकापवाद की कोई
नहीं करते। वास्तव में एक भक्त के रूप में उनका व्यक्तित्व नितान्त निस्

प्रश्न 12. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए ?

उत्तर—(i) कलिरोग=कलि रूपी रोग (कर्मधारय)

(ii) भव नीर निधि=संसार रूपी समुद्र (कर्मधारय)

(iii) धन धाम=धन और धाम (द्वन्द्व)

(vi) काम अगिनि=काम की अग्नि (तत्पुरुष)

(v) करुनाकर=करुणा के आकार (तत्पुरुष)

4. बिहारी

भक्ति-पद्य 1. "जगतु..........जाहि ॥"

अर्थ--जिस व्यक्ति ने सारे संसार को (अपने ज्ञान का) प्रदर्शन किया उसने (भी) ईश्वर को नहीं समझा जैसे आँखों से सब देखा जाता है लेकिन आँख स्वयं को नहीं देख सकती।

शब्दार्थ-- जनायौ=बतलाया। जिहि=जिसने। नाहिं=नहीं। जान्यो= समझा। आँखिनु=आँखों से।

पद्य 2. "अपने अपने..............नन्द किशोर ॥"

अर्थ---वादी (सिद्धांती) लोग अपने-अपने मत (सिद्धान्त) के लिए शोर मचा रहे हैं। सब को जैसे तैसे एक ईश्वर (कृष्ण) की ही सेवा करनी है।

भाव---एकेश्वरवाद के सिद्धांत का मूल उद्देश्य स्पष्ट है।

शब्दार्थ---लगे=लिए। आदि=सिद्धांती। ज्यों-त्यों=जैसे-तैसे। सेइबो=सेवा करना। नन्द किशोर=कृष्ण (ईश्वर)।

नीति पद्य 3. "दियो..............फेरि ॥"

अर्थ-जो वस्तु तेरे को दी गई है उसे तू सिर चढ़ाकर ग्रहण कर और अच्छी समझ कर सुरक्षित रख। जिससे सुख चाहने के लिए यह चीज ली है उसे उसके लिए दुःख के रूप में वापिस मत दे।

शब्दार्थ---दियो=दी हुई। चढ़ाइ=चढ़ाकर। लै=ग्रहण कर। आच्छो= अच्छी। अएरि = सुरक्षित रख। जापै=जिससे। दुखहि=दुःख रूप में। फेरी= वापस करना।

पद्य 4. "भजन..............गंवार।"

अर्थ---हे मूर्ख ! तुझे भजन करने को कहा तो तू भजने लगा। एक बार भी तूने भजन नहीं किया। जिसे दूर भागना कहते हैं उसी को तूने भजा।

भाव---आज के संन्यासियों एवं त्यागियों की स्थिति का यथार्थ चित्रण है।

शब्दार्थ-भज्यो=भागा। भज्यौं=भजन किया। दूरिभजन=दूर भागना। गंवार=मूर्ख।

पद्य 5. "बसै…………दानु ॥"

अर्थ—जिसके मन में बुराई ही निवास करती है उसका ही यहाँ सम्मान किया जाता है भले व्यक्ति को "यह तो भला है" ऐसा कहकर छोड़ देते हैं लेकिन खोटे (क्रूर) ग्रहों को प्रसन्न रखने के लिए जप दानादि किया ही जाता है।

शब्दार्थ—बसै=निवास करती है। जासु=जिसके। तन=शरीर। ताही=उस ही। सनमानु=सम्मान। छांडिए=छोड़ देते हैं। खोटे=क्रूर।

कृति-पद्य 6. "रनित…………समीर ॥"

अर्थ—सुन्दर बजते हुए घंटे वाला, झरते हुए मद जल वाला हाथी और वायु कुंज में धीरे-धीरे आ रहे हैं (वायु की आवाज भी प्रतिध्वनित होती है और आर्द्र वायु में नमी होती है और मदगति होती है अतः हाथी से उसका क्रिया साम्य बतलाया है।

शब्दार्थ—रनित=बजते हुए। भृंग=सुन्दर। भौंरा=चारों ओर मधु=मृदु, शहद। कुंजर=हाथी। समीर=वायु।

पद्य 7. "बैठि………छांहि ॥"

अर्थ—अत्यन्त घने वन में भी अपने शरीर में घर किए हुए वृक्षों की छायाएं जेठ की दोपहरी में मानो छाया की कामना कर रही हैं।

शब्दार्थ—पैठि=बनाकर। सदन=घर। तन मांहि=शरीर में दुपहरी=मध्यान्ह।

पद्य 8. "कौन सुने…………बदराह ॥"

अर्थ—मेरी कौन सुनने वाला है, मैं किससे कहूँ। हे नाथ ! तूने ध्यान ही छोड़ दिया है। अरे नीच रास्ते पर चलने वाले भाग्य ! अ… चलने की होड़ में तू क्यों बदला लेता है।

शब्दार्थ—कासों=किससे। सुरति=ध्यान। बिसारी=छोड़ दिया नाह=नाथ। बदाबदी=स्पर्धा (होड़)। बदरा=बदला (प्रतिशोध)। बद… =नीच रास्तगी।

पद्य 9. "सघन…………तीर ॥"

अर्थ—घने निकुंज हैं, सुखदायी छाया है, शीतल एवं सुगन्धित हवा है। मन होता है कि आज उसी यमुना के तीर पर चल पड़ें।

शब्दार्थ-सुरभि = सुगंधित। ह्वै जात = हो जाता है। अजौं=आज (अभी)। ह्वै = चले। उहि = उसी, उठकर। जमुना = यमुना।

सौन्दर्य प्रेम –"समै समै········होइ।" ।।10।।

अर्थ–सभी समय-समय पर ही सुंदर लगते हैं। कोई सुन्दर और कोई बदसूरत नहीं है। जिसके मन की जितनी रुचि होती है उसके प्रति दूसरों की भी उतनी ही रुचि होती है।

शब्दार्थ–समै = समय। सबै = सब ही। रूप = सुंदर। कुरूप = बदसूरत। जितै = होती है। तित = उतनी। तेती = वैसी ही।

पद्य 11. "लिखन········कूरी"।। 11 ।।

अर्थ–सब ही की भाग्य की लिखावट बैठी ही रह गई, क्योंकि सबने गर्व (घमंड) और गरूर (आत्मप्रशंसा) को ग्रहण कर लिया। वास्तव में इस संसार में ऐसे चतुर चित्त वाले हुए हैं ही कितने क्योंकि वे भी क्रूर तो हैं।

पद्य 12. "भवन········भारै।" ।। 1 ।।

अर्थ–इस सुन्दर शरीर पर यह आभूषणों का बोझा क्यों लादे हुए हो इसकी शोभा के भार से तो पैर भी सीधे नहीं पड़ते।

शब्दार्थ–गहि = ग्रहण किया। गरब = गर्व। चितेरे = चित्र वाले। कूर = क्रूर। भूपन = गहना। संभारिहै = लाद रखा है। ईहितन = इस शरीर पर। सूधे= सीधे। पाइ = पैर।

पद्य 13. "कहा········हाथ" ।।13।।

अर्थ–क्या हो गया जो तुम मेरे से बिछुड़ गये। फिर भी मेरा मन तो तुम्हारे मन के साथ ही है जैसे गुड़िया उड़ाने वाले के हाथ से वह कहाँ तक भी क्यों न उड़ायी जाये रहती उसी के हाथ में है।

शब्दार्थ–भयौ = हुआ। बीछुरे = बिछुड़ गये। मनु = मन। कितहूँ = कितनी। तऊ = फिर भी। गुड़ी = गुड़िया। उडाहक = उड़ाने वाला।

अन्योक्ति–14. "को छुट्यो········जात।।" ।।14।।

अर्थ–इस जाल में पड़ जाने पर व्याकुल हिरन की भाँति कौन मुक्त हुआ है। वह ज्यों-ज्यों सुलभः पाने के लिए भागता है वैसे-वैसे ही और उलभ जाता है। भाव सांसारिकता की यथार्थता।

शब्दार्थ–छुट्यो = मुक्त हुआ है। ईहि जाल=इस जाल में। कत = क्यों। कुरग = हरिन। अकुलात = व्याकुल। सुरभि = सुलझाने के लिए। भज्यों चहत = भागना चाहता है।

पद्य 15. "करि··········काहि ॥"

अर्थ–ग्रामीण लोग इत्र-वत्तिका का आचमन करके यह मीठा है ऐस कह कर सराहना कर रहे हैं। लेकिन अरे मन्दबुद्धि इत्र वेचने वाले तू क्य इनको इत्र दिखा रहा है (क्योंकि वे उसका सदुपयोग नहीं जानते।)

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "लिखन·········कूर" चतुर से चतुर चितेरा भी नायिक की सही तस्वीर नहीं बना सका, क्योंकि–

उत्तर–(च) नायिका के सौन्दर्य को देखकर चितेरे हतप्रभ रह गये

प्रश्न 2. याचक को छोटा भी बड़ा क्यों दिखाई पड़ता है ?

उत्तर–क्योंकि कुछ न कुछ पाने की आशा सभी मे रहती है।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार सुन्दरता का सम्बन्ध किससे है ?

उत्तर–मन से।

प्रश्न 4. कवि के अनुसार नायिका के पांव धरती पर सीधे क्यो न पड़ रहे हैं ?

उत्तर–आभूषणों के भार से।

प्रश्न 5. संसार में बुरे व्यक्ति का सम्मान क्यों किया जाता है

उत्तर–उससे अनिष्ट की आशंका रहती है अतः भय वश व्यक्ति बुरे व्यक्ति का भी सम्मान करते हैं।

प्रश्न 6. 'कुंज समीर' और 'कुंजर' में क्या समानता दिखलाई

उत्तर–दोनों ही स्वरित होते हैं दोनों में आर्द्रता होती है और की गति में मन्दता पायी जाती है।

प्रश्न 7. बिहारी के भक्ति सम्बन्धी विचारों का प्रतिपादन कीजि

उतर–यद्यपि बिहारी मुख्यतः शृंगार रस के कवि हैं फिर भी अनेक दोहों में भक्ति, विनय, वैराग्य, प्रेम आदि के स्वरूप दृष्टिगत हैं। भक्त से विह्वल होकर परमात्मा के प्रति अपना अकुल प्रेम नि बिहारी की विशेषता रही है। उनकी भक्ति एक निवेदन की भक्ति है एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं और ईश्वर के नाम पर ढोंग करने से दूर रहते है उन्हें कृष्ण की भक्ति प्रिय है।

प्रश्न 8. अग्रलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए ?

उत्तर–सलिलु = सलिल। दीरघ = दीर्घ। दुति = द्युति। उज्जलु= उज्जवल। सीतल = शीतल। समै = समय। गरब = गर्व। सोभा = शोभा। चखनु = चक्षुओं। सरोजु = सरोज।

5. रहीम

पद्य 1. "रहिमन·········हार॥"

अर्थ–रहीमदास जी कहते हैं कि इस विषय में कोई क्या करे। क्योंकि यहां पर सभी जुआरी, चोर और बकवादी हैं यदि किसी की लाज रखने वाला है तो एकमात्र मक्खन चखने वाला वह कृष्ण ही है।

शब्दार्थ–कोऊ = कोई। ज्वारी = जुआ खेलने वाला। चोर=चोरी करने वाला। लबार = बकवादी। पत = लाज। राखनहार=रखने वाला। चाखनहार = चखने वाला।

पद्य 2. "अमर·········कहि॥"

अर्थ–जड़रहित अमरता रूपी लता को जो पल्लवित करने वाला है, ऐसे प्रभु को छोड़कर हे मनुष्य ! तू किसे ढूंढता फिरता है।

शब्दार्थ– वेलि = लता। मूल = जड़। प्रतिपालत = बढ़ाता है। तजि = छोड़कर। काहि = किसे।

पद्य 3. "प्रीतम·········जाय॥"

अर्थ–जिसकी आँखों में प्रियतम की ही कांति बस रही है उसे दूसरे की छवि से क्या अर्थात् दूसरे की छवि उसकी आँखों में कैसे समा सकती है जैसे कि सराय को भरी हुई देख राहगीर अपने आप लौट जाता है।

शब्दार्थ–प्रीतम = प्रियतम (ईश्वर)। छवि = कांति। समाय = समाविष्ट हो। सराय = धर्मशाला। लखि =देखकर। पथिक = राहगीर। फिरि जाय = लौट जाता है।

पद्य 4. "रहिमन·········बैल॥"

अर्थ–रहिमदास जी कहते हैं कि प्यार का रास्ता बहुत संकरी गली है, वहाँ चींटी का पैर भी विचलित हो सकता है जबकि दुनियाँ बैलों को लदाने जा रही है।

शब्दार्थ–पैंडा = रास्ता। निपट = बिल्कुल। सिलमिली = सकरी। गैल = गली।

पद्य 5. "रहीमन·········पड़ जाय।"

अर्थ–रहीमदासजी कहते हैं कि, प्रेम के धागे को तुम खेंच मत तोड़ो, क्योंकि टूट जाने पर यह दुबारा नहीं जुड़ता है और जुड़ता है गाँठ रहती ही है (एक बार प्रेम में फर्क आने पर पहले जैसी निश्छलता रहती।)

शब्दार्थ–धागा=सूत। छिटकाय=खेंच कर।

पद्य 6 "**टूट**..........**मुक्ताहार**।"

अर्थ–यदि सज्जन का सम्बन्ध टूट जाता है तो सौ बार भी उसे लीजिए जैसे मोतियों के हार को बार-बार टूट जाने पर भी पुनः करते ही हैं।

शब्दार्थ–सजन=सज्जन। मनाइये=प्रसन्न करिये। पोइये= करिये। मुक्ताहार=मोतियों का हार।

पद्य 7. "**मथत मथत**..........**ठहराय**।"

अर्थ–बार-बार के मथने से मक्खन बन गया और दही ढुलक गई। रहीमदासजी ने कहा कि मित्र वही है जो दुःख आने स्थिर रहे।

शब्दार्थ–माखन=मक्खन (घी)। मही=पृथ्वी पर। बिलगाय गया। मीत=मित्र। भीर=दुःख। ठहराय=स्थिर हो जाय।

पद्य 8. "**जिहि**..........**कौन**।"

अर्थ–जिसने इस तन और मन को ले लिया है और हृदय स्थान बना लिया है उसे दुःख सुख कहने के लिए अब बात ही क्या है।

शब्दार्थ–जिहि=जिसने। हिए = हृदय के। भौन = स्थान (तासों=उससे।

पद्य 9. "**हरि**..........**दूर**।"

अर्थ–रहीमजी कहते हैं कि भगवान ने मेरे साथ ऐसा किया बाणों से भरा हुआ कमान करता है। उसने अपनी तरफ खेंच कर दूर फेंक दिया है।

शब्दार्थ–हरि=ईश्वर। सर पूर=बाणों से भरा हुआ। डा डाल दिया।

पद्य 10. "**रहिमन**..........**नाहि**।"

अर्थ—रहीमजी कहते हैं कि अगम्य (जो समझ के बाहर हो)। ऐसी बात की कहा-सुनी नहीं हुआ करती। जो उसे जानते हैं वे कहते नहीं है और जो कहते हैं वे नहीं जानते हैं।

शब्दार्थ—अगम्य = ईश्वर, दुर्लभ, समझ से बाहर। जे = जो। ते = वे।

पद्य 11. "सदा..........मुकाम।"

अर्थ – आठों पहर (हमेशा ही) कूच का (संसार से चले जाने का) नगारा बज रहा है। ऐसे इस अस्थिर संसार में आकर तू क्यों निवास कर रहा है।

शब्दार्थ—नगारा = वाद्य। कूच = जाने का। जाम = पहर। जग = संसार। आइकै = आकर। मुकाम = निवास।

पद्य 12. "रहिमन..........समेत।"

अर्थ–चित्त में चिन्ता का चिन्तन चिता से भी ज्यादा कठिन होता है क्योंकि चिता मरे हुए को जलाती है और चिन्ता जिन्दे को ही जला देती है।

शब्दार्थ—चितान = चिता से। चेत = चिन्तन। चिता=आग। दहति = जलाती है।

पद्य 13. "जैसी..........जाय।"

अर्थ—जिसकी जैसी बुद्धि होती है वह वैसी ही बात बनाता है अतः उसका बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि उससे अच्छी बुद्धि वह कहां लेने जावे।

शब्दार्थ–ताको = उसका। लेन = लेने के लिए। कहां सू=क्यों, कैसे।

पद्य 14. "रहिमन..........पयातन।"

अर्थ – दान, मान और सम्मान तब तक ही ठहरते हैं जब मान हानि को देखते ही तुरंत चलता बने (एक बार मान-हानि सह लेने पर हमेशा मान हानि होती ही है।)

शब्दार्थ—लगि = तक। घटत = घटता हुआ। देखिय = देखें। तुरतहि = तुरन्त, शीघ्र। पयान = प्रयाण, चलाना।

पद्य 15. "कमला..........होय।"

अर्थ – यह तो सभी जानते हैं कि लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती। (किन्तु क्यों ? यह सुनिए) वह पुराण पुरुष की पत्नी है अतः चंचल क्यों नहीं होगी

शब्दार्थ—थिर = स्थिर । पुरातन = प्राचीन, पुराना ।

पद्य 16. "जैसी............मेह ।"

अर्थ—यह शरीर जिस पर जैसी गुजरती है वैसा सहन करता ही है सर्दी, गर्मी और बरसात पृथ्वी पर ही गिरते हैं ।

शब्दार्थ—सहि रहै = सहन करता है । देह = शरीर । सीत = सर्दी घाम = गर्मी । औ = और । मेह = मेघ, बरसात ।

पद्य 17. "धूर..............गजराज ।"

अर्थ—यह हाथी रोजाना सिर पर धूल उछालता है, ऐसा क्यों (ऐसा इसलिए कि, यह उस धूलि को ढूंढता है जिससे मुनि की पत्नी अहल्या को मुक्ति मिली थी ।

शब्दार्थ—धूर = धूलि । नित = रोजाना । पै = पर । केहि काज = किस लिए । तरी = मुक्त हुई । सो = उसे ।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "पुरुष.......... होय" इस पंक्ति में कौनसा भाव अभिव्यक्त हुआ है ?

सही उत्तर—(च) व्यंग्य ।

प्रश्न 2. रहीम ने चिता से भी अधिक दारुण किसे कहा है ?

उत्तर—चिन्ता को ।

प्रश्न 3. जब मान-सम्मान को घटता हुआ पाये तो क्या करना चाहिए ।

उत्तर—तुरन्त वहां से चल देना चाहिए ।

प्रश्न 4. "सदा..............जाय" इस पंक्ति में कवि ने किस ओर इशारा किया है ?

उत्तर—शरीर की नश्वरता की ओर ।

प्रश्न 5. सज्जन के बार-बार रूठने पर भी उन्हें क्यों मनाना चाहिए ।

उत्तर—क्योंकि वे अपनी सज्जनता कभी नहीं छोड़ते ।

प्रश्न 6. प्रेम के सूत्र को क्यों नही तोड़ना चाहिए ?

उत्तर—क्योंकि टूट जाने पर वह कभी जुड़ता नही, जुडे भी तो गांठ रहती ही है ।

प्रश्न 7. रहीम की दृष्टि में सच्चा मित्र कौन है ?

उत्तर—जो दुःख में भी स्थिर रहे ।

प्रश्न 8. "पुरुष पुरातन की वधू" और "माखन चाखन हार" कह कर किन-किन की ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर—'विष्णु' एवं 'कृष्ण' की ओर।

प्रश्न 9. हाथी अपने सिर पर धूल क्यों डालता है।

उत्तर – मानो वह उस धूल को ढूंढता हो जिससे अहल्या विमुक्त हुई थी।

प्रश्न 10. "जेहि रज मुनि पतनी तरी" इस पंक्ति में जिस पौराणिक कथा का संकेत है उसे लिखिए ?

उत्तर—यह कथा अहिल्या के विषय में है रामायण में इसका विशेष विवरण है। चन्द्रमा के व्यभिचार दोष के कारण पति के शाप से उसे शिला बनना पड़ा था। जब राम जनकपुरी जा रहे थे तो रास्ते में इस शिला को देख उन्होंने विश्वामित्र से पूछा था फिर उस पर चरण स्पर्श किया था उस समय अहल्या को मुक्ति प्राप्त हुई थी।

6. मैथिलीशरण गुप्त

देखी मैंने आज जरा

पद्य 1. "देखी ....तरा ॥ 1 ॥

अर्थ—आज ही मैंने इस वृद्धावस्था को देखा है। क्या मेरी यशोधरा भी ऐसी ही हो जायेगी। उसका वह सौन्दर्य जो सोने के समान खरा (विशुद्ध) है क्या एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा ? आज जो यह हरा-भरा बाग दिखता है क्या वह भी कभी सूख जायेगा जैसे बंधे हुए पशु के सामने सैंकड़ों रोग पड़े हुए हों। धिक्कार है मुझे जो मेरे होते हुए मेरे चैतन्य (प्राण परिवार) की ऐसी आस्था हो। क्या अन्तर्भाग में सब कुछ शून्य है, बाहर से तो सब कुछ भरा-पूरासा लगता है। अगर मैंने ऐसे सूने संसार को भी पार नहीं किया तो वास्तव में मैंने कुछ भी नहीं किया।

शब्दार्थ–जरा = वृद्धावस्था। वर्ण-सुवर्ण = सौन्दर्य रूपी सोना। खरा = विशुद्ध। उपवन = बाग। सम्मुख = समक्ष। चेतना = चैतन्य। रिक्त = खाली। सूना भव = शून्य संसार। तरा = पार किया।

कृष्णोपदेश

पद्य 1. "जो धर्म......................बन्धन हीन है।"

अर्थ – हे अर्जुन जो व्यक्ति मर्यादा के विपरीत आचार वाला है
विषयों को ही जिसने भोग का साधन समझ रक्खा है उसकी ही मृत्यु सं
में शोक के योग्य है, इसके विपरीत जो व्यक्ति इन्द्रियों को वश में क
धर्म के आचरण में तल्लीन है उसे मृत्यु का क्या फिक्र वह तो मुक्त
समझो, क्योंकि सभी बन्धनों से वह रहित है।

शब्दार्थ–विमुख = विपरीत। भोग्य = भोग योग्य साधन। धर्माच
= मर्यादानुसार चालचलन। मुक्त=स्वतन्त्र। बंघनहीन = सांसारिकता
रहित।

पद्य 2. "संसार में.........खेल है।"

अर्थ–इस दुनियां में सभी जीव अपने शरीर तक ही सम्बन्धी रहते
मोह के बन्धन में गिरकर मनुष्य खुद ही अन्धा बन जाता है यहां शरी
धारियों का मिलन तो केवल चार दिन का है। इसी चार दिन के मिलन
मोह की खातिर सब खेल बिगड़ जाता है (मनुष्य लक्ष्य भ्रष्ट हो जाता है

शब्दार्थ – मोह बंधन = मोहरूपी बन्धन। मनुज = मनुष्य।
धारियों = प्राणियों। मिल = मिलन। मोह = ममत्व।

पद्य 3. "सम्पूर्ण......... बना रहे।"

अर्थ – हे अर्जुन ! इस संसार में सारे दुःखों का आ मिलना ही
का कारण होता है किन्तु होनहार के लिए बेकार ही मन में दुःख का
भव मनुष्य की भूल ही तो है। अपने अभीष्ट की पूर्ति के लिए वह
संसार समुद्र की धारा में बहता है, लेकिन पानी से कमल की तरह
लिप्त रहे (तभी यह सम्भव है)।

शब्दार्थ–भावि विषय = होनहार। व्यर्थ = बेकार। इष्ट = अभी
बहे = बहता है। नीरज सदृश = कमल की तरह। अलिप्त = निर्लिप्त।

पद्य 4. "उत्पत्ति....................कार्य है॥"

अर्थ – जहां पैदाइश है वहां मौत भी होती है, जहां विकास हो
है वहां पतन भी होता ही है। हे मित्र ! जहां सुख होता है वहां भी
तो रहता ही है यह एक अनिवार्य शर्त समझो। क्योंकि निरन्तर नि
से अपना कार्य करती रहती है।

शब्दार्थ – उत्पत्ति = पैदा होना। ह्रास = पतन। सौख्य = आन
अविराम = निरन्तर।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "हाय... सरा" इस पंक्ति में आये सुवर्ण शब्द का अर्थ

उत्तर – (क) सोना।

प्रश्न 2. "सुख……………हरा।" इस पंक्ति में आये 'उपवन' शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर—पारिवारिक समृद्धि। परिवार का रूपक कवि ने यहां उपस्थित किया है।

प्रश्न 3. "कुछ………तरा।" कवि ने भव को सूना क्यों कहा है ?

उत्तर— उसकी निस्सारता देखकर कवि ने संसार को सार से शून्य ही माना है।

प्रश्न 4. "देखो………जरा" कविता के आधार पर गौतम बुद्ध के मन में वृद्धावस्था को देखकर आये भावों का वर्णन लगभग सौ शब्दों में कीजिए ?

उत्तर—पद्य संख्या 1 का अर्थ देखें। कवि द्वारा प्रस्तुत भावात्मक द्वन्द्व को छात्र अपनी भाषा में लिखने का स्वयं अनुभव करें।

प्रश्न 5. "अविराम" अलिप्त, विमुख ,उपवन, सुवर्ण" ये शब्द किन किन उपसर्गों के योग से बने हैं ?

उत्तर – 'अविराम' और 'अलिप्त' में 'अ' उपसर्ग है। 'विमुख' में 'वि' उपसर्ग है। 'उपवन' में 'उप' तथा 'सुवर्ण' में 'सु' उपसर्ग प्रयुक्त हुए हैं ?

प्रश्न 6. संसार में किसकी मृत्यु शोचनीय होती है ?

उत्तर—जो धर्मपालन से विमुख है। साथ ही विषयों को ही जो मात्र भोग का साधन समझे हुए है उसकी मृत्यु ही संसार में सोचने योग्य है।

प्रश्न 7. मानवीय दुःखों का मूल कारण क्या है ?

उत्तर—दुःख स्वाभाविक है, प्रकृति की क्रियाशीलता ही इस नियम को निरन्तर साधे हुए है कि वह किसी न किसी रूप में बना रहे।

प्रश्न 8. जीवनमुक्त किसे कहा जा सकता है ?

उत्तर—जो इन्द्रियों को वश में करके मर्यादापूर्वक धर्म का पालन करने में लगा है।

प्रश्न 9. श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया है उसे अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर–यहाँ कृष्ण ने अभिमन्यु की मृत्यु से खिन्न एवं विषादग्रस्त अर्जुन का मोह भंजन करने हेतु आत्मा के अमरत्व का उपदेश दिया है। (इस भाग में कृष्णोपदेश के पद्यों का अर्थ संक्षिप्त करके जोड़ दें)।

7. जयशंकर 'प्रसाद'

(क) हिमालय के आंगन में

पद्य 1. "हिमालय.......... अशोक ॥"

अर्थ – हिमालय के प्रांगण में हिमालय को पहली रश्मियों क
हार (तोहफा) देकर प्रातःकाल की अधिष्ठात्री देवी उषा ने मन्द ह
साथ स्वागत किया और मानो हीरों का हार उसे पहनाया। हम
सजग हुए और विश्व की जाग्रति हेतु प्रयत्नशील हुए। इसके परिणाम
पुनः (एक नवीन) प्रकाश फैला। आकाश से अन्धकार का समूह नष्
और हृदय से अज्ञान का समूह नष्ट हुआ। सारा संसार शोक रहित हो

शब्दार्थ–आंगन = प्रांगण। किरणों=रश्मियों। हीरक = ही
बना हुआ। जगे = सजग हुए। आलोक = (प्रकाश) ज्ञान। व्योमतमपु
आकाश का अन्धकार समूह या हृदय का अज्ञान समूह। अखिल = स
संसृति = संसार। अशोक=शोक रहित।

पद्य 2. "विमल वाणी.... .... अभीत ॥"

अर्थ–निर्मल वाणी (वाक्शक्ति या सरस्वती) ने अपने क
कोमल हाथों से प्रेमपूर्वक वीणा को ग्रहण किया। सातों समुद्रों
स्वर मुखरित हो उठे। हमने भी कारण रूप में स्थित संसार को
करके अपनी नौका पर प्रारम्भकालीन ठंड को सहन करके लाल ध्व
में ली और पश्चिम में निर्भयतापूर्वक आगे बढ़े।

शब्दार्थ – कमल कोमलकर=कमल की तरह कोमल हाथ।
प्रेमपूर्वक। सप्त स्वर = सातों सुर। सामसंगीत=सामवेदीय मंत्रों की
गेयपदों से युक्त गान। अरुण केतन = लाल ध्वजा। वरुण पथ =
दिशा। अभीत = निर्भीक। झेल = सहन करके।

पद्य 3. "सुना है.... .... राह।

अर्थ—इसी क्रम में दधीचि का वह त्याग सुनाई दिया जिन
जातीयता अर्थात् सामाजिकता का विकास हुआ था। और इन्द्र ने
अस्थि युग का इतिहास लिखा। (वह इतिहास भी) समुद्र की भाँ
एवं गहरा था तथा निकाले हुए उत्साह के समान था। रत्नाका
रास्ता अब भी टूटा हुआ और कुछ डूबा हुआ-सा दिखाई दे रहा है

शब्दार्थ—जातीयता = सामाजिकता। पबि = वज्र। अस्थियुग = प्रागैतिहासिक काल। अथाह = गहरा। निर्वासित = निकाला हुआ, प्रकट किया। भग्न = टूटा हुआ। मग्न = डूबा हुआ। रत्नाकर = समुद्र। राह = रास्ता।

पद्य 4. "धर्म का.... ....घूम ॥"

अर्थ—अब तक धर्म के नाम पर जो बलि दी जाती थी वह बन्द कर दी गई है। शांति का संदेश हम ही ने (हिन्दुस्तान के लोगों ने) विश्व को दिया। विश्व के लिए आनन्द देकर भी हम भूखा थे। यह विजय लोहे की नहीं थी (लोहयुग में हिन्दुस्तान का वैभव मात्र नहीं था) अपितु धर्म की विजय थी (उस युग में भी धर्म का प्रभाव था यह तथ्य हिन्दूधर्म की सनातनता का सूचक है) जिसकी इस पृथ्वी पर धूम मची हुई है (यह काफी फला-फूला था)। (इसी धर्म के कारण) यहां के राजा भी भिक्षु की तरह रहते थे। घर-घर जाकर दया दिखाते थे।

शब्दार्थ—बलि = भेंट (बलिदान)। हमीं = हम ही। लोहे = लौहयुग। घूम = प्रसिद्धि।

पद्य 5. "यवन.... .... नहीं ॥"

अर्थ—मुसलमानों को हमने दया दान में दी। चीन के लिए धर्मरूपी नजर दी, स्वर्ण भूमि (सुमात्रा द्वीप को) रत्न प्रदान किये तथा लंका को शील का संदेश दिया। हमने किसी देश का कुछ नहीं हथियाया। हम समझते थे कि प्रकृति का पालन यही तो है (इस हिन्दुस्तान के अतिरिक्त नहीं है) तथा हमारी मातृभूमि भी यही था। हम कहीं से भी आकर यहां नहीं बसे थे।

शब्दार्थ—यवन = मुसलमान। धर्म्म = धर्म (बोद्धधर्म)। सृष्टि = आविष्कार। पालना = पालन, झूला। जन्मभूमि = मातृभूमि।

पद्य 6. "जातियों का.... ....विपन ॥"

अर्थ—यहां कई जातियाँ आईं और गईं, कई विकसित हुईं, कई विनष्ट हो गईं। आंधी, वर्षा, तेज हवा को भी हमने देखा और हँसते-हँसते सहन किया। क्योंकि हम प्रलयकाल में पले हुए वीर थे। चरित्र के पुत्र थे हमारी बाजुओं में ताकत थी। हमारी विनम्रता हमेशा सम्पन्न रही। हृदय के गौरव में गर्व था, हमने किसी को विपत्ति में नहीं देखा।

शब्दार्थ—झड़ी = वर्षा। झेला = सहन किया। चरित = चरित्र। पूत = पुत्र। सम्पन्न = ऊंचा, उच्चकोटि की। विपन्न = विपत्तिग्रस्त।

पद्य 7. "हमारा···· ···· ····भारतवर्ष ।।"

अर्थ—हमारे पास दान का संचय था (काफी धन था)। अतिथि ह हमारे लिए देवता थे। हमारी वाणी में सच्चाई थी। हृदय में तेज था प्रण में ही अपनी आदत थी। आज भी वही खून है, वही देश है, वही साहस और वही ज्ञान है। वही शांति है, वही ताकत है और दिव्य आर्यों क सन्तान हम भी वही हैं। यदि हमने जीवन धारण किया है तो उसी लिए हमें स्वाभिमान रहे इसकी हमें खुशी है। हम सब कुछ बलिदान क दें क्योंकि हिन्दुस्तान हमें प्यारा है।

शब्दार्थ – संचय = धन। देव = देवता। टेव = आदत। दिव्य आ = देवताओं की भाँति गुणों वाले आर्य लोग। अभिमान = गर्व। निछाव =बलिदान। सर्वस्व = सब कुछ।

(ख) उद्बोधन (गीत)

पद्य 1. "अब···· ···· ···गीत ।।"

अर्थ—हे मेरे जीवन के प्रातःकाल तुम जाग्रत होओ। आज पृ पर तुम ओस की तरह बिखरे हुए हो। मेरे आँसू बर्फ के कणों की तरह क्योंकि ये क्षुब्धता से भरे हुए हैं। मेरे शरीर को ये लाल रंग वाली उष सराबोर कर रही हैं तुम अब तो जाग्रत होओ। या लाल शरीर वाली उ उन आँसुओं को बटोर रही है।

भाव – (दुःखमय जीवन बीता जा रहा है अतः सफलता के लि जाग्रति की कामना स्वाभाविक सी बन पड़ी है।)

शब्दार्थ—प्रभात = प्रातःकाल। वसुधा = पृथ्वी। हिमकन = बर्फ कण। क्षोभ = क्षब्धता (छिछलापन)। बटोरती = समेटती है। गात = श

पद्य 2. "तम···· ···· ····प्रभात ।।"

अर्थ—अब रश्मियों के समूह में अन्धकार के नेत्रों की सभी पुतलि मानो मूंद सी रही हैं। मलयपर्वत की हवा सुखदायी चल रही है। वातावरण में ही जीवन के प्रातःकाल तुम जाग्रत होओ (क्योंकि यह जा की आवश्यकता का समय है।)

शब्दार्थ–तमनयनों = अन्धकार के नेत्रों या अंधकाररूपी ने तारायें = पुतलियां। किरणदल = रश्मि समूह। सुखद = आनन्ददायी। =वायु।

पद्य 3. "रजनी···· ···· ····प्रभात ।।"

अर्थ – हे जीवन के प्रातःकाल अब तो मेरी जीवन रात्रि की

ो दूर करो। पक्षियों की मुखरित ध्वनि से भेंट करो। सूर्योदय की सुन्दर ला में वायु चल रही है अतः तुम जाग्रत होओ।

शब्दार्थ – रजनी = रात्रि। लाज = लज्जा। समेटो = दूर करो। ंटो = भेंट करो। कलरव = पक्षी ध्वनि। अरुणाचल = सूर्योदय या उदय-गरी पर्वत। वात = वायु।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. कवि के अनुसार उषा ने हमारे देश का हँसकर अभिनन्दन किया, क्योंकि–

उत्तर – (ग) हमारे सांस्कृतिक आदर्श बहुत ऊँचे थे।

प्रश्न 2. "जिये तो सदा उसी के लिए" यहाँ पर 'उसी' शब्द का प्रयोग किसके लिए है ?

उत्तर – 'उसी' शब्द का प्रयोग जन्मभूमि के लिए है।

प्रश्न 3. कवि ने भारतवासियों को "प्रलय" के पले वीर क्यों कहा हैं ?

उत्तर—क्योंकि प्रलय जैसे संकटकाल में पाले गये वीर प्रलय से भी नहीं डरने वाले हैं उन्हें इस बात का अनुभव है कि वे इसे किस रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

प्रश्न 4. भारत को हिमालय का आंगन क्यों कहा गया है ?

उत्तर—क्योंकि हिमालय ही विश्व के प्रदेश द्वार पर स्थित था। पूर्व काल में विश्व के देशों के आने-जाने का प्रवेश द्वार हिमालय ही था। जिससे उसके घर की कल्पना की गई है।

प्रश्न 5. 'गीत' में कवि किस बात की प्रेरणा देना चाहता है ?

उत्तर—उद्बोधन नामक गीत में कवि जनजागरण की प्रेरणा देना चाहता है।

प्रश्न 6. "कलरव से उठकर भेंटों तो" का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—सांसारिकता से मिलो ताकि तुम उसकी अच्छाई-बुराइयों से परिचित होकर जीवन मार्ग के लिए उपयोगी बन सको।

प्रश्न 7. 'हिमालय के आंगन में' कविता में कवि भारतवासियों को क्या प्रेरणा देना चाहते हैं ?

उत्तर—इस कविता में कवि ने देश की जनता में राष्ट्रीय स्वाभि एवं नवनिर्माण की चेतना जाग्रत करने की प्रेरणा दी है।

प्रश्न 8. "प्रसाद" ने भारत के पौराणिक और ऐतिहासिक का स्मरण क्यों दिलाया है?

उत्तर—प्रसादजी ने भारत का पौराणिक एवं ऐतिहासिक इसलिए स्मृति में उभारा है कि भारतीय अपने अतीत के महत्व को और राष्ट्रीय स्वाभिमान की नींव को मजबूत करें।

प्रश्न 9. छात्र स्वयं करें। इसके लिए संस्कृति व सभ्यता का हास तथा भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास की सहायता ले सकते हैं।

8. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(क) धारा

पद्य 1. "बहने···· ···· ···पाया था।"

अर्थ यौवन रूपी मस्ती की नदी की बाढ़ किसी को भी देखकर झुकी है? वह तो रोकने पर भी नहीं रुकती अतः उसे बहने दो। वह गर्ज कर क्या कहती है (इसे मत सोचो उसे कहने दो।) स्वेच्छा से या गति से उसे बहने दो। हमने सुना है कि कोई हाथी उसे रोकने को आया था लेकिन उसकी क्या स्थिति हुई और उसे क्या परिणाम मि (यह सुनो)—

शब्दार्थ – मद = मस्ती। प्रबल = तीव्र। कुंजर = हाथी। दश स्थिति। फल = परिणाम।

पद्य 2. "तिनका···· ···· ···थर्राती है।।"

अर्थ—तिनके की तरह वह हाथी मारा-मारा फिरा। बेचारा में अपने गर्व को खो बैठा। उसने हार मान ली अतः सुनो, यदि तु करके इसके सामने (प्रतिपक्षी के रूप में) आओगे तो अपनी हालत बि ओगे और बह जाओगे। क्या तुम देख नहीं रहे यह (यौवन की मस्ती नदी) तेज गति से घहराती है (घुमाव खाती है) यहां पर तो नंगे प्रल का ही मानो ताण्डव (विनाशकारी नृत्य) हो रहा है। इसकी चाल मस्ती लिए हुए है मानो प्रकृति को देख आँखें मींच कर डर के मारे हुई हो और काँप रही हो।

शब्दार्थ – तरंगों = लहरों। गँवाया = खोया। हारा = हार मान ली दुर्दशा = बुरी हालत। प्रलय = मृत्यु का समय। त्रस्त = डरी हुई। थर्राती = कांपती।

पद्य 3. "आज···· ···· ····कालिका।"

अर्थ – आज सभी बन्धन (सांसारिकता के आयाम) ढीले हो गये हैं। प्राणों को आजादी मिल गई है। दया का संपूर्ण क्रन्दन (रुदन) मानों रुका हुआ है, क्योंकि उसकी मस्त धारा कैसी (भयावह रूप में) बह रही है। दीन की भांति सारी दुनियाँ जिसे हाथ जोड़कर देख रही है। स्वाभिमान के आधिक्य से खड़े रहने वाले पर्वतों ने जिसको बच्ची समझा था उसे शिला-खण्डों को बरसाते देखकर आज वे ही थर-थर काँपते हैं और पत्थर के टुकड़ों रूपी नर मुण्डों की माला वाली कालिका देवी के नाम से उसे पुकारते हैं।

शब्दार्थ – बन्धन = परतंत्रताएं। मुक्त = स्वतंत्र। करुण क्रन्दन = दया से भरा रुदन। पागल = मस्त। दीन = बेचारा। दम्भ = आत्मगर्व। भूधर = पर्वत। ढहते = गिराते। शिलाखण्डमय=शिलाखण्डों के समूह को। उपलखण्ड नर मुण्डमालिनी = पत्थर के टुकड़ों रूपी नरमुण्डों की माला वाली।

पद्य 4. छूटी ···· ··· संग।"

अर्थ— इस नदी की धाराएं रूपी लटियां इधर-उधर बिखरी हुई हैं और धरती के श्यामल वक्ष स्थल पर क्रीड़ाएं कर रही हैं। मानो सोने की रश्मियों की रेखायें हों। इनमें भी एक धारा पर नजर थोड़ी ठहरती है। क्योंकि वहां एक कली विकसित हुई नजर आती है। इसकी लहरों पर चंचल लहरें नाचती हैं। इस बात की जाँच करने की बात हमें याद नहीं थी। उससे कोई प्रश्न करता तो वह पागल की तरह हँसती और बहती हुई यही कहती कि–यही तो जीवन की अचूक उत्साह राशि है मैं भी सीमा पार करके अपने प्रेमी से निर्बाध संग पाने के लिए चली जा रही हूँ।

शब्दार्थ – चंचल = गतिशील। नाच = नृत्य। प्रबल = निर्बाध। असीम निस्सीम।

(ख) ध्वनि

पद्य 1. "अभी···· ···· ····अन्त।"

अर्थ—ध्वनि कह रही है अभी मेरा विनाश नहीं होगा, क्योंकि हाल ही तो मेरे उद्यान में बसन्त ऋतु का आगमन हुआ है अभी से कैसे अन्त हो जायेगा।

अर्थ– देखो ये हरे पत्ते हैं, टहनियां हैं, कोमल शरीर वाली कलि
हैं। मैं स्वयं अपना मृदुल सपने का हाथ इन सोयी हुई कलियों पर घुमाऊ
और एक सुन्दर प्रातःकाल को जगाऊँगा।

पद्य 2. "हरे हरे···· ···· ····अन्त।"

अर्थ—मैं प्रत्येक पुष्प से आलस्य से अलसाई इच्छा का अपकर्ष क
लूंगा। और अपने नये जीवन के अमृत को प्रसन्नतापूर्वक सींच दूंगा औ
जिस जगह मेरे अनन्त दरवाजे हैं, उन्हें अच्छी तरह खिला दूंगा। इ
प्रकार अभी मेरा अन्त नहीं होगा।

पद्य 3. "मेरे जीवन···· ···· ····अन्त।"

अर्थ–जब यह मेरे जीवन काल का पहला ही चरण है तो इसमें मृ
कहाँ से। अभी तो जीना है सब कुछ जवानी सारी की सारी बाकी प
हुई है, सोने की किरण जैसी लहरों पर यह दिल बच्चे की तरह बह जाता है
मेरी विकसित न हुई लालिमा से हे भाई अभी दिशाओं का ओर छोर वि
सित होगा। अतः अभी मेरा विनाश नहीं होने का।

शब्दार्थ–(ध्वनि–पद्य–1, 2, 3)

मृदुल = सुहावना। पात = पत्ते। डालयाँ = टहनियां। गात = शरी
निद्रित = सोयी हुई। प्रत्यूष = प्रातःकाल। तन्द्रालसलालस = प्रमादव
आलस्य की इच्छा। राग = लालिमा। दिगन्त = दिशाओं का छोर।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "धारा" कविता में 'धारा' शब्द का प्रतीकार्थ क्या है

उत्तर – (घ) युवा चेतना का प्रवाह।

प्रश्न 2. 'धारा' कविता में कवि ने मुख्य रूप से कौनसा भ
व्यक्त किया है ?

उत्तर – धारा कविता के माध्यम से कवि ने अतीतजीवी पुरा
पंथियों के प्रति युवा चेतना के प्रवाह रूप प्रतिपक्ष की सबलता दिखलाने
उद्देश्य से विद्रोह का भाव अभिव्यक्त किया है। सचेत करते हुए बतला
है कि, युवा क्रांति का विरोध करने वाले अपनी स्थिति नहीं संभाल सकें

प्रश्न 3. 'धारा' सीमा को पार करके किससे मिलने के लिए अ
की ओर बढ़ रही है ?

उत्तर—प्रियतम असीम के संग मिलने के लिए।

प्रश्न 4. 'धारा' को किनारे के शिलाखंड गिराते देख कवि को किसका ध्यान आता है ?

उत्तर–उपलखण्डनमुण्ड मालिनी का ।

प्रश्न 5. 'ध्वनि' कविता में कवि ने मन को किससे उपमित किया है ?

उत्तर – बालक से उपमित किया है ।

प्रश्न 6. 'धारा' को रोकने का प्रयास करने पर इसके क्या परिणाम होते हैं ?

उत्तर–आत्मविनाश, बह जाना, स्थिति बिगड़ जाना आदि परिणाम हो सकते हैं ।

प्रश्न 7. 'धारा' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

उत्तर–प्रश्न संख्या 2 का उत्तर देखें ।

प्रश्न 8. ध्वनि कविता का भावार्थ लिखिए ?

उत्तर–ध्वनि कविता में आशावादिता का स्वर प्रबलता से मुखरित हुआ है । कवि आशावादिता के लिए स्वयं को उपादान चुनता है । वह कहता है कि अभी तो उसका जीवन बहुत शैशव से बीता ही है । सारी जवानी अभी बाकी है फिर अभी से मृत्यु कहां । जीवन का बसन्त भी अभी आया ही है । संभावनाओं से भरा संपूर्ण भविष्य तो अभी देखना बाकी है फिर अभी से जीवन में निराशा का क्या काम ।

प्रश्न 9. निम्नलिखित समास पदों का विग्रह कीजिए ?

उत्तर–यौवनमद = यौवन रूपी मद, यौवन का मद । शिलाखण्डचय = शिलाओं के खण्डों का चय । नर-मुण्ड-मालिनी = नर के मुण्डों की माला जिसकी वह । स्वर्णकिरण रेखायें = स्वर्ण की किरणों की रेखायें । उपल खण्ड = उपलों के खण्ड । करुण-क्रन्दन = करुण है क्रन्दन वह ।

9. सुमित्रानंदन पन्त

(क) फूलों का ह्रास

पद्य 1. "लाई..................मोल" ॥ 1 ॥

अर्थ–अपने सौन्दर्य की विक्रेता प्रकृति इस दुनिया से कब रही है कि

हंसी लेकर आई हूँ क्या तुम उसे मूल्य देकर खरीद लोगी इस
...क मेरे पास टपकते हुए तुषार का उपवन भी है क्या उसे खरी
सकोगी । उसमें भी उल्लास है ।

शब्दार्थ–हास=हंसी । तरल = आर्द्र । तुहिनवन = तुषार का उपव
उल्लास = आश्चर्यजनक, सुन्दरता ।

पद्य 2. "फैल....................मोल" ॥ 2 ॥

अर्थ–बसन्त ऋतु की लपटें चारों तरफ फैल चुकी है । बाग
टहनियाँ तक जलन महसूस कर रही हैं । यहां मञ्जुल स्वर वाली को
भी हैं क्या उन्हें तुम खरीदोगी ।

शब्दार्थ—मधु ऋतु = बसन्त ऋतु । ज्वाला = लपटें । डा
टहनियाँ । कोमल = मञ्जुल । बोला = स्वर ।

पद्य 3. "उमड़.................मोल" ॥ 3 ॥

अर्थ–अब बरसात का पिरोया जीवन उमड़ आया है । नये
पानी के झरने जहाँ-तहां फूट पड़े हैं मानो जिन्दगी की चचल लहरें
क्या तुम इन्हें खरीदोगी ।

शब्दार्थ–परिप्रोत = पिरोया हुआ जीवन । पावस = वर्षा ऋतु ।
= झरने । लोल = चंचल ।

पद्य 4. "विरल..................मोल" ॥ 4 ॥

अर्थ–देखो अब मेघ के समूह विरल (विच्छिन्न) हो गये हैं
अपनी आवाज खोल दी है । शरद ऋतु चांदी की भांति मुस्कराहट क
छा गई है यही तो सुन्दरता की बहुमूल्य चाँदनी है । क्या तुम इसे खरी

शब्दार्थ—विरल = विच्छिन्न । जलदपद = मेघसमह । अज
आवाज । रजत = चाँदी । ज्योत्स्ना=चांदनी । अनमोल = अमूल्य, बेशक

पद्य 5. "अधिक......................मोल" ॥ 5 ॥

अर्थ–अब अंत में दुनियां प्रकृति को जवाब दे रही है–हे प्र
अभी समय बहुत लाल है । पक्षियों के बाल बच्चे भी अभी तो जग
वापस सोने की चेष्टा में चटक रहे हैं अगर तुम प्रत्युत्तर चाहती हो
खोल कर सुन लो । आज मैं कुछ भी नहीं खरीद सकूंगी ।

शब्दार्थ – सकाल = प्रातःकाल । खगबाल = पक्षियों केब

(ख) पतझर

पद्य 1. "रिक्त..................नूतन ।।"

अर्थ–प्रकृति वृक्षों से कह रहा है–हे वृक्षों ! यदि आज तुम्हारी नियां खाली हो रही हैं तो तनिक भी मत डरो, क्योंकि ये फिर रक्तमय पुष्ट होंगी इनका जीवन फिर से सुघड़ होगा। मृत्यु हमेशा जन्म लेने लिए ही है और जीवन बार-बार मर कर भी अमर है। पुराना पत्ता ाना झड़ता है फिर नया वहां विकसित होता ही है।

शब्दार्थ–मासल=पुष्ट । जीवनरंजित = जीवन से हरित । पल्लवित वकसित ।

पद्य 2. "पतझर.... ....अभिनव ।।"

अर्थ–यह तो प्रकृति का पतझड़ था लेकिन मनुष्य जीवन में भी झड़ आ रहा है। सदियों के बाद आज यह युग परिवर्तन की नयी घटना रही है। बहुत सर्दियां, बरसात एवं गर्मियाँ निकल गईं। वैभव और भव भी खूब आये। यह सब क्यों हुआ–दुनिया के जीवन में पुनः एक वसंत आने के लिए।

शब्दार्थ—युगान्तर = युगों के बाद परिवर्तन । हिम = सर्दी । वर्षातप रसात व गर्मी ।

पद्य 3. "झरते..................नर ।"

अर्थ–यदि पत्ते झरते हैं तो झड़ जाने दो, तनिक भी मत डरो। यह पुनः नवीन विकसित मंजरियों से शोभा पायेगा। मनुष्यों की दुनियां या पतझड़ शताब्दियों बाद आया है। घबराओ मत तुम भी सदियों तक सन्त के वैभव (चहल-पहल) का वरदान सार्थक करोगे।

शब्दार्थ–किंचित = तनिक । नवल = नवीन । मुकुल = पुष्प की तरह न । सदियों = शताब्दियों । मधु = वसन्त । वर = वरदान ।

प्रश्न 1. पतझर से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—(ख) जीर्ण शीर्ण युग का अन्त ।

प्रश्न 2. "लोगी मोल लोगी मोल" से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर – (च) वह प्राकृतिक सौन्दर्य को चित्र रूप में उपस्थित करता है।

प्रश्न 3. "फूलों का हास" कविता का वर्ण्य विषय क्या है ?

उत्तर–(ग) प्रकृति।

प्रश्न 4. "जीवन की ये लहरें लोल" इस पंक्ति में कवि 'ल
क्या कहना चाहता है ?

उत्तर–कवि मानव की बाह्य प्रकृति की तुलना प्रकृति की चं
से करते हुए जीवन के ऊपरी सौन्दर्य को उभारना चाहता है।

प्रश्न 5. 'पन्त' की भाषा में प्रमुख रूप से कौनसा गुण
जाता है ?

उत्तर – सौन्दर्य भावना का श्रेष्ठता प्रतिफलन।

प्रश्न 6. 'पतझर' कविता के भावार्थ को अपने शब्दों में लि

उत्तर—पतझर कविता में जीर्ण-शीर्ण युग की झांकी प्रस्त
हुए कवि का वर्ण्य विषय एक जीवन सन्देश के रूप में उभरा है।
इस जीवन संदेश की दूतिका है। युग जीवन में पुरानी व्यवस्था
और नई व्यवस्था के पुनरागमन का आभास कविता का मु
रहा है।

प्रश्न 7. मानव और प्रकृति विषय पर संक्षिप्त निबन्ध लि

उत्तर—मानव प्रकृति का दिया हुआ जीवन सवारने
प्राणी ही है। इस प्रकार प्रकृति उसकी मां है। वह प्रकृति रू
गोद में असीम आनन्द अनुभव करता है। मानवीय प्रकृति की
उस मां प्रकृति के निस्वार्थ स्नेह का ही प्रतिफल है। मानव की
को भी सहन करने वाली वह प्रकृति उसे सीख देती रहती है अ
ने प्रकृति से उपादानों को ग्रहण किया है। जहां लोग मान
प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति का चित्रण करते हैं वहां तुलना के
को एक पक्ष बनाते हैं। प्रकृति सौन्दर्य के उभयक्षेत्रीय इस
छायावाद विशेष बन पड़ा है। पंतजी छायावाद के अग्रणी रहे
कविता में प्रकृति का जो रमणीय दिग्दर्शन है वही प्रस्तुत पा
का पहास और 'पतझर' कविताओं में उदाहरण के तौर
किया है।

प्रश्न 8. "शोभित" शब्द 'शोभा' शब्द में इत प्रत्
बना है। इस प्रत्यय के योग से पांच नये शब्द बनाइये ?

उत्तर--भावित (भाव् + इत), पठित (पठ् + इत), पूजित (पूजा + इत), चालित (चाल + इत), वादित (वाद + इत)।

प्रश्न 9. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कीजिए—

उत्तर—तुहिनवन = तुहिन का वन। जलस्रोत = जल के स्रोत। जलदपटल = जलदों का पटल। खगबाल = खगों के बालक। शरद्-रजत = शरद रूपी रजत।

10. सुभद्राकुमारी चौहान

झांसी की रानी की समाधि

पद्य 1. "इस···· ········ ····फेरी॥"

अर्थ—आज इस टीले को जिसे 'समाधि' नाम से जानते हैं इसमें उस राख की ढेरी छुपी हुई है जिसने कभी प्रदीप्त होकर स्वतंत्रता की अलौकिक आरती उतारी थी।

पद्य 2. "यह···· ···· ····मरदानी की॥"

अर्थ–यह समाधि जो लघु–आकार की है, पराक्रमी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की है जिसे उसकी अंतिम क्रीड़ा स्थली कहा जा सकता है। (क्योंकि यहाँ पर ही अंग्रेजों से लड़ते हुए वह मारी गई थी।)

पद्य 3. "यहीं···· ···· ····शाला सी॥"

अर्थ – विच्छिन्न हुई जयमाला की भांति उस रानी का अस्तित्व शायद यहीं किसी जगह बिखरा हो (कहीं खो गया हो) और मानो उसको दी गई श्रद्धांजलियों के पुष्प ही यहाँ पुञ्जित रूप में चढ़ाये हों जिससे यह यादगार के खजाने की तरह लग रही है।

पद्य 4. "सहे···· ···· ····ज्वाला सी॥"

अर्थ–इस रानी ने वार पर वार सहे थे और अन्तिम दम तक यह आगे ही बढ़ी (युद्ध में कभी पीछे नहीं हटी)। अन्तिम समय में भी चिता पर चढ़ाई गई आहूति की तरह गिर गई लेकिन सहसा एक ज्योति की तरह (इतिहास में) चमक गई।

पद्य 5. "वह···· ···· ····सोने से ।।"

अर्थ–जैसे सोने की भस्म सोने से भी ज्यादा कीमती होती है ही युद्ध में आत्मबलिदान देने के कारण वीर पुरुष का सम्मान अधिक जाता है।

पद्य 6. "रानी···· ···· ····चिनगारी ।।"

अर्थ–यही कारण है कि आज रानी से भी ज्यादा यह समाधि प्रिय लग रही है। इसी समाधि में आजादी की चिनगारी भी आशा ले बैठी हुई है।

पद्य 7. "इससे···· ···· ····गाते ।।"

अर्थ–यद्यपि दुनियाँ में इसकी अपेक्षा कई अधिक सौंदर्ययुक्त समाधि मौजूद हैं किन्तु उनकी गाथाएँ रात्रि में सियार ही गाया करते हैं (अ वे ऐतिहासिक महत्व की नहीं हैं अतः उन्हें कोई स्मरण तक नहीं करते

पद्य 8. "पर················बानी ।।"

अर्थ–लेकिन जहाँ इस समाधि का सवाल है यह कवियों की अ वाणी में एक ऐसी अमिट कहानी है जिसे वीर पुरुषों की वाणी, प्रेम विश्वास के साथ गाती है।

पद्य 9. "बुन्देले·············· ····रानी ।।"

अर्थ – इस समाधि की यह महत्वमय कहानी हमने बुंदेलखंडी चा से सुनी है क्योंकि इसकी अधिष्ठात्री वह पराक्रमी महिला थी जिसने में अंग्रेजों का डट कर मुकाबला किया था।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. लक्ष्मी बाई कवियों के लिए प्रेरणा स्रोत रही है ?

उत्तर–(च) शौर्य, स्वाभिमान एवं स्वातंत्र्य प्रेम के कारण।

प्रश्न 2. वीर का मान कब बढ़ता है ?

उत्तर–युद्ध में आत्मबलिदान देने पर ही वीर का मान बढ़ता है

प्रश्न 3. कवि ने रानी से भी अधिक रानी की समाधि को प्रि बतलाया ?

उत्तर – क्योंकि समाधि हमेशा के लिए उसके ऐतिहासिक मह पावन प्रतीक बन गई है मानो स्वयं अपने महत्व को तब तक विस्त

नहीं कर सकती थी जब तक की आत्मबलिदान न देती अतः समाधि का मूल्य उससे अधिक ही है।

प्रश्न 4. "यही..........माला सी।' पंक्ति में कवयित्री ने रानी को "भग्न विजयमाला सी" क्यों कहा है ?

उत्तर – क्योंकि अन्त समय में यहीं उसकी विजय की आशा कहीं खो गई थी वह बिना विजय पाये ही मारी जा चुकी थी।

प्रश्न 5. निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर झाँसी की रानी का चरित्र-चित्रण कीजिए ?

उत्तर–(क) **स्वातंत्र्य प्रेम**—झाँसी की रानी भारतीय प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अभिनेत्री थी। स्वतंत्रता ही इसका एकमात्र लक्ष्य था। स्वातंत्र्य प्रेम के कारण ही उसने अपने को अंग्रेजों की अधीनता मानने से इन्कार कर दिया और डट कर अंग्रेजों का मुकाबला किया। (ख) **शौर्य** – झाँसी की रानी आज वीरांगना के रूप में स्मरण की जाती है। स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों से युद्ध करने में वह तनिक भी नहीं घबराई। स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को लेकर अग्रदूत के रूप में उसने अंग्रेजों का सामना किया और कई बार अंग्रेजों को नीचा भी देखना पड़ा। (ग) **आत्म बलिदान**–ग्वालियर में अंग्रेजों से लड़ते हुए उसने अपने अंतिम प्राण छोड़ दिये। देश और देश की स्वतंत्रता के लिए यह तब तक लड़ती रही जब तक उसमें प्राणों का थोड़ा भी अंश शेष रहा।

प्रश्न 6. छात्र स्वयं भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास से ढूँढे।

11. डॉ. हरिवंशराय बच्चन

अंधेरी रात में

पद्य 1. "उठी— .... बैठा है॥"

अर्थ–आकाश में इस प्रकार बादल घिरे आये कि सब चाँद तारे छिप गये हैं एक तूफान जैसा उठा है सभी दीपक भी बुझ गए हैं लेकिन आज इस अंधेरी रात में भी आशा लगाकर जलते हुए दीपक की लौ की तरह कौन है जो दीपक जला कर बैठा हुआ है।

शब्दार्थ–घटा = बादल। औ = और। तूफान = तेज झंझावात।

पद्य 2. "गगन.... ....बैठा है ।।"

अर्थ – आकाश में स्वाभिमानपूर्वक बार-बार उठकर व आच्छ होकर ये बादलों के समूह कह रहे हैं कि अब दुबारा कभी प्रकाश नहीं लेकिन इसके बावजूद भी यह कौन है जो बहुत समय बाद होने वाले प्रकाश के प्रति अनन्य भाव को दिल में स्थायी बनाकर बैठा हुआ है

शब्दार्थ – गगन = आकाश । गर्व = स्वाभिमान । गरज = गर्जन घटाएँ = बादलों के समूह । उजाला = प्रकाश । चिरज्योति = बहुत बाद होने वाला अज्ञात प्रकाश । निष्ठा = अनन्यता ।

पद्य 3. "तिमिर.... ....बैठा है ।"

अर्थ – इस अन्धकार के रहस्य का ऐसा कठिन भय छाया कि जो भी पहले सिर उठा सकते थे उन्होंने भी अब सिर झुका लि फिर भी यह कौन है जिसने विद्रोह की आग जला रखी है (इसे अपने का भी फिक्र नहीं है) आज की अंधेरी रात में दीपक जलाकर य बैठा हुआ है ।

शब्दार्थ–तिमिर = अन्धकार । राज = रहस्य, राज । आतंक शीश=सिर । विद्रोह = विरोध, क्रांति ।

पद्य 4. "प्रलय....... ....बैठा है ।"

अर्थ – प्रलयकालीन वातावरण को सवार हुए यह विनाश आच्छन्न है । इसके कारण इस अन्धकार के बीच विनाशकारी श भी बन आई है (वे भी घबरा गई हैं ।) लेकिन फिर भी विनाश हु के पुनर्निर्माण के विषय में दृढ़ता के सिद्धान्त का प्रवर्तक यह अंधेरी रात में दीपक जला कर बैठा हुआ है ।

शब्दार्थ – समां = वातावरण । बांधे = संवारे । बन आई घटित हो गई । दृढ़ाए = दृढ़ करके ।

पद्य 5. "प्रभंजन.... ....बैठा है ।"

अर्थ – आज के वातावरण में तेज तूफानी हवा ने, बाद बिजली ने किस वस्तु की तोड़-फोड़ नहीं की ? देखो आकाश बीच में इसने किसी भी वस्तु को पूर्ववत् नहीं रहने दिया फिर भी

विश्वास को बचाकर अंधेरी रात में दीपक जलाये हुए कौन बैठा है।

शब्दार्थ–प्रभंजन = तूफानी हवा। मेघ = बादल। दामिनि = बिजली। धरा = पृथ्वी। सावित = पूर्ववत् अवशिष्ट।

पद्य 6. "प्रलय..........बैठा है॥"

अर्थ–क्या यह भी कल्पना सही हो सकती है कि विनाश की रात्रि में ही कोई प्यार की बात सोचे। लेकिन यह भी सही है कि प्रेम के बंध पड़ने के बाद ऐसा कौन है, जिसने अपना विवेक नहीं खो दिया। देखो यह किसी की राह में आँखें लगा कर बैठा है। यह कौन है जो अंधेरी रात में दीपक जला कर बैठा है।

शब्दार्थ–प्रणय = प्यार। समझ = विवेक। पलक बिछाये = एकटक आंखें लगाये।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. इस कविता में मुख्य रूप से किस भाव को व्यक्त किया गया है ?

उत्तर – (ग) संकल्प।

प्रश्न 2. "विनाशक..............बन आई।" विनाशक शक्तियों से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर – (च) निर्माण विरोधी नकारात्मक शक्तियां।

प्रश्न 3. तिमिरराज से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर–तिमिरारज से कवि निराशा एवं अव्यवस्था के सम्राज्य का संकेत करता है।

प्रश्न 4. जो शीश उठा सकते थे उन्होंने किस कारण से अपने शीश झुका लिए हैं ?

उत्तर – तिमिरराज के कठिन आतंक के कारण उन्होंने भी सिर झुका लिए हैं।

प्रश्न 5. 'प्रलय' और 'प्रणय' में विरोध क्यों प्रदर्शित किया है ?

उत्तर – क्योंकि एक निराशा का प्रतीक है तो दूसरा आशा का।

प्रश्न 6. "अंधेरी रात में" कविता के माध्यम से कवि कौन संदेश देना चाहता है ?

उत्तर–उक्त कविता में कवि का मुख्य लक्ष्य आशावादिता है। आस और विश्वास उसके दो मुख्य आधार स्तम्भ हैं। अज्ञात को उपाद बनाकर प्रकृति के भयावह वातावरण में कवि ने इनकी प्रेरणा देते हु आज के व्यक्ति को प्रकृति व नियति के प्रति चुनौती देने को सशक्त कि है। साहस और संकल्प के बल पर आस्था और विश्वास टिक सकते हैं अ इनसे आशाएं सफल हो सकती हैं।

प्रश्न 7. कवि ने अंधेरी रात की भीषणता व्यक्त करने के लि "प्रभंजन मेघ दामिनी" क्यों लिखा ?

उत्तर – अंधेरी रात को प्रलय की भीषणता के समकक्ष सिद्ध क के लिये।

12. रामधारीसिंह 'दिनकर'

(क) चांद और कवि

पद्य 1. "रात..........सोता है ॥"

अर्थ–आकाशीय चन्द्रमा रात्रि के समय मुझसे कहने लगा – म कैसा विचित्र प्राणी है यह स्वयं अपने लिए उलझनों का निर्माण करत और फिर उनमें फंसने के बाद इतना बेचैन (दुःखी) हो जाता है कि न तो जग ही पाता है और न सो ही सकता है।

शब्दार्थ–अनोखा = विचित्र। जीव = प्राणी। उलझनें = समस्या। बेचैन = दुःखी।

पद्य 2. "जानता..........सही करते ॥"

अर्थ–हे कवि ! मैं कितना पुरातन हूँ क्या तू इससे परिचित देख, मैंने कई बार मनु को भी जन्म और मृत्यु पाते हुए देखा है (जो मनुष्य जाति का अग्रज है) इसके अलावा तेरे जैसे पागल व्यक्तियों को चांदनी रात में बैठ कर विचार करते हुए लाखों मर्तबा देखा है।

शब्दार्थ – जनमते-मरते = जन्म और मृत्यु पाते हुए। सही = वि कल्पना।

पद्य 3. "आदमी का..........बनाता है ॥"

अर्थ—मनुष्यों का स्वप्न जैसे आचरण है क्योंकि उनका जीवन पानी के बुलबुले की भांति है जो आज बन जाता है, कल नष्ट हो जाता है। फिर भी धन्य है ठहरा भी तो आदमी हो। बुलबुले जैसे प्राणी से खेलता हुआ कविता का निर्माण करता है।

शब्दार्थ—बुलबुला = बुद्बुद्।

पद्य 4. "मैं..........है तू।"

अर्थ—कवि कहता है कि चन्द्रमा की बात सुनकर मैं चुप रहा लेकिन मेरी राग से न रहा गया वह बोली—अरे चांद तू मुझे फिर देख! क्या तू मुझे पहचानता है क्या स्वप्न ही मेरे बुलबुले हैं और क्या यह सब पानी ही है, (अरे भाई!) क्या तू आग को भी नहीं पहचानता।

शब्दार्थ—रागिनी = राग (स्वरमधुरिमा)।

पद्य 5. "मैं न........उठाती हूँ ॥"

अर्थ—मैं वह नहीं हूं जो केवल कल्पनाओं पर ही सब कुछ निर्धारण कर ले। देख, मैं उन सब निरर्थकताओं को आग में डालकर लोहा तैयार करती हूं (अर्थात् एक आदर्श का निर्माण करती हूं।) उस आदर्श पर एक नये भवन (नवीन-निर्माण) की नींव डालती हूं। इस तरह मैं फौलाद की दीवार खड़ी करने का काम करती हूँ।

शब्दार्थ—सही = निर्णय, निर्धारण। स्वप्न = कल्पनाएं, व्यर्थतायें। लोहा = आदर्श (यथार्थ का उज्जवल रूप)। फौलादी दीवार = सशक्त विकास

पद्य 6. "मनु नहीं..........होती है ॥"

अर्थ—सामने यह जो कवि है वह मनु नहीं है लेकिन मनु की संतान अवश्य है फिर भी इसकी कल्पना रूपी जीभ में एक धारा है जिससे निकलने वाले विचार मात्र बाण का ही काम नहीं करते अपितु जिस कल्पना को तुम स्वप्न कह रहे हो उसके हाथ में भी तलवार ही समझो।

शब्दार्थ — बाण = शर। धार = धारा।

पद्य 7. "स्वर्ग रहे हैं ये ॥"

अर्थ–अरे चन्द्रमा ! तेरा वश चलता है तो तू स्वर्ग के राजा से वि... यत कर दे कि ये मनु के पुत्र आकाश में चढ़ रहे हैं इन्हें रोक दिया ज... ये स्वप्न की भांति व्यर्थ आवास वाले हैं अतः स्वर्ग में चढ़ने का इनका प्र... जैसे भी हो रोक जावे।

शब्दार्थ–सम्राट = राजा। रोज = प्रतिदिन।

(ख) भगवान के डाकिये

पद्य 1. "पक्षी..........बांचते हैं॥"

अर्थ–पक्षी और बादल दोनों ही ईश्वर के पत्रवाहक हैं ये... देश से दूसरे महादेश को अर्थात् पृथ्वी से आकाश की ओर जाते हैं हम... गतिविधि नहीं समझते लेकिन उनके द्वारा लाई गई चिट्ठियों को... पौधे, पानी और पहाड़ पढ़ा करते हैं।

पद्य 2. "हम तो..........गिरता है॥"

अर्थ–इसके बारे में यही हमारा निष्कर्ष है कि किसी एक दे... पृथ्वी दूसरे लोक को सुगन्ध भेजती है क्योंकि हवा में तैरते हुए इन पक्षि... पंखों पर वह सुगन्ध गिरती हुई नजर आती है। इससे एक देश की... दूसरे में पानी बनकर गिरती हुई दिखाई देती है।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "चाँद और कवि" कविता में 'दिनकर' ने कवि के... में क्या विचार दिये हैं ?

उत्तर (च) कवि स्वप्न और यथार्थ का समन्वय करता है।

प्रश्न 2. कवि 'दिनकर' ने पक्षी और बादल को भगवान का ... कहा है, क्योंकि—

उत्तर—(क) दोनों ही मुक्त आकाश में विचरण करते हैं।

प्रश्न 3. मनुष्य को मनु पुत्र क्यों कहा गया है ?

उत्तर–पौराणिक गाथाओं में मनु से ही मनुष्यों की सृष्टि की... की गई है।

प्रश्न 4. स्वप्न को बुलबुला कहे जाने पर कवि को आपत्ति ...

उत्तर-क्योंकि उसमें यथार्थ छुपा हुआ है। चन्द्रमा इस बात से अपरिचित है।

प्रश्न 5. "कल्पना की जीभ में धार होती है।" इस पंक्ति में 'धार' से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर-तीक्ष्ण कार्य क्षमता

प्रश्न 6. "चाँद और कवि" कविता में स्वप्न और यथार्थ के लिए पृथक् पृथक् किन प्रतीकों का प्रयोग किया गया है ?

उत्तर—स्वप्न के लिए बुलबुला तथा यथार्थ के लिए फौलादी दीवार प्रतीक रूप में कहे हैं।

प्रश्न 7. स्वप्न अगर पानी का बुलबुला नहीं है तो फिर उसमें और क्या है ?

उत्तर-उसमें यथार्थ सूक्ष्मतः छुपा हुआ है जो तलवार की तरह प्रेरणा के लिए काफी कारगर चीज है।

प्रश्न 8. पक्षी और बादल किस रूप में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार करते हैं ?

उत्तर—डाकिये के रूप में।

प्रश्न 9. पक्षियों और बादलों द्वारा लाई गई चिट्ठियाँ कौन बाँचते हैं ?

उत्तर—पेड़, पौधे, पानी और पहाड़।

प्रश्न 10. "चांद और कवि" कविता में कवि और चाँद ने अपना-अपना पथ प्रस्तुत किया है। आप किसके वक्तव्य से सहमत हैं और क्यों ?

उत्तर – हम कवि ने वक्तव्य से सहमत हैं, क्योंकि अपने पक्ष के प्रस्तुतीकरण में कवि को यथार्थधर्मिता प्रतीत होती है। इसके विपरीत चाँद के वक्तव्य में कवित्व पर निरा आरोप ही द्योतित होता है।

13. नागार्जुन

(क) वे और तुम

पद्य—"वे·········गए हैं।"

अर्थ-(एक ओर जो श्रमिक है) वे लोहे को पीट रहे हैं अर्थात् कठिन

परिश्रम कर रहे हैं (दूसरी ओर) तुम (विद्वान और कवि) अपने मन को प रहे हो (दिमागी मेहनत कर रहे हो) वे श्रमिक एक-एक पैसे को जोड़ क काम चला रहे हैं तुम कल्पनाएँ गूँथ रहे हो। श्रमिकों का जो आत्मपीड़ है वह मानो उनकी हँसी में घुला हुआ सा है, क्योंकि वे सुख-दुःख का क अनुभव ही नहीं करते। विपरीत तुम्हारी आत्मपीड़ा अर्धनिद्रा की घड़ि में दूर होती है। वे भी खुश ही हैं क्योंकि अपने कृषि कर्म में जुट गए तुम भी खुश हो क्योंकि कल्पना लोक का आनन्द लेने में खोये हुए से हो वे दुःख व्यक्त करते हैं कि उनके द्वारा लगाई गई आम्र मंजरियाँ शीत नष्ट हो रही हैं। तुम्हें दुःख है कि जो कुछ रचना की उसे दीमक खा गई है

शब्दार्थ – पत्तर = पैसा । घुटन = आत्मपीड़न । ठहाकों = हँसी उनींदी = अर्धनिद्रित । हुलसित = उल्लासमय, खशी । तरुण = शीघ्र पैदा पाला=शीत ।

(ख) अकाल और उसके बाद

पद्य–"कई..............बाद ॥"

अर्थ–(जब अकाल का आगमन हो गया तो) कई दिनों तक चूल रोता रहा, चक्की उदास रही अर्थात् इनसे कोई काम नहीं लिया गय इनके पास काफी समय तक एक काली कुतियाँ पड़ी रहती। मिस्त्रियों छिपकलियाँ मानो गस्त लगा रही हैं अर्थात् सफाई में भी किसी का ध्य नहीं था कई दिनों तक चूहे भी परेशानी में रहे, उन्हें भी खाने को न मिला। काफी दिन गुजर जाने के बाद घर में अनाज दिखाई दिया त आंगन से धुआं उठा अर्थात् चूल्हा जलाया गया। घर की सफाई हुई पहले जैसा चमकने लगा। अब तो कौवा भी कुछ आशा बांधने लगा।

शब्दार्थ—उदास=उदासीन । गस्त = चौकसी । शिकरत = दुःखं हालत=स्थिति ।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. नागार्जुन की "वे और तुम" कविता के व्यंग्य का ल कौन है ?

उत्तर – (ग) आम जनता ।

प्रश्न 2. "चमक..................बार" क्योंकि—

उत्तर—(क) कई दिनों के बाद सुख का अनुभव हुआ था।

प्रश्न 3. कई दिनों तक घर के आंगन से धुआं नहीं उठने का क्या कारण था ?

उत्तर—अकाल की स्थिति में अनाज तक नही मिल पाया था अतः चूल्हे, चक्की आदि खान-पान के निर्मापक उपकरणों का प्रयोग ही नहीं होता था।

प्रश्न 4. "वे और तुम" कविता मे 'वे' कौन है और "तुम" कौन है ?

उत्तर—'वे' पद से जीवन संघर्ष में रत श्रमजीवी कृषकों का व 'तुम' पद से कल्पनाजीवी कवियों का संकेत ग्राह्य है।

प्रश्न 5. "पत्तर जोड़ने" और 'सपने जोड़ने' में क्या अन्तर है ? इनके प्रतीकार्थ को भी स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—पत्तर जोड़ने का मतलब है कमर तोड़ परिश्रम करके पैसा पा सकना और सपने जोड़ने का मतलब है कल्पित कथायें रचकर आनन्द उठाना।

प्रश्न 6. कवि और श्रमिक वर्ग की घुटन में क्या अन्तर है ?

उत्तर—कवि की घुटन रचना करने की चिन्ता है जिसे आदर्श एवं यथार्थ के समन्वय की कोशिश कह सकते हैं। श्रमिक की घुटन है दुःख पाकर भी हँसते हुए वही कमर तोड़ परिश्रम करना।

प्रश्न 7. "चूल्हा रोया" "चक्की उदास रही" से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—प्रश्न संख्या 3 का उत्तर देखें।

प्रश्न 8. "वे और तुम" तथा "अकाल और उसके बाद" कविता में समानता और विषमता को स्पष्ट करते हुए उनकी तुलना कीजिए ?

उत्तर—"वे और तुम" कविता में जो समानता और विषमता है वह एक सामान्य परिस्थिति का वर्णनात्मक शब्द चित्र है, जबकि "अकाल और उसके बाद" कविता में जो समानता और विषमता है वह आपातकालीन

परिस्थिति एवं सामान्य परिस्थिति का तुलनात्मक शब्द चित्र है। दोनों तुलनाओं का निष्कर्ष यही है कि मानव सुख एवं दुःख का एक साथ संवाह है।

नोटः–प्र. सं. 9 एवं 10 स्वयं करने योग्य।

14. भवानी प्रसाद मिश्र

इसे कहना तो पड़ेगा

"कविता.................. जाएगा ॥1॥"

अर्थ – यद्यपि परिवार नियोजन कविता का विषय नहीं है फिर कई ऐसे महत्वपूर्ण विषय होते हैं जिनके सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता महसूस होती है। हम इस विषय पर भी कुछ बताना आवश्यक समझते हैं अतः इस सम्बन्ध में कुछ कहेंगे। कारण यह है कि यदि हम चुप रहेंगे इस ओर हमारे भावी जीवन के दिन निरन्तर काली रात में (दुःख में) व्यतीत होंगें। जहाँ हमें कोई भी रास्ता नहीं दिखाई देगा और न नींद ही आ सकेगी (हमेशा के लिए चिन्तित हो जायेंगे)। (निर्धन देश की) बढती हुई भूखी गरीब जनता जो सख्या में विशाल होगी। हमारी छः हजार वर्ष पुरानी सभ्यता को इस तरह हिला देगी की आज तक किसी दूसरी चीज ने उसे रूप में न हिलाया होगा अर्थात् उसके पतन का साक्षात् रूप उपस्थित देगी)। बुरी चीजों में तब तक महामारी और युद्ध को नहीं गिनेंगे। तरह अच्छी चीजों में भी गाँधी व बुद्ध का महत्व नहीं समझेंगे क्योंकि सभी आदर्शों का पासा पलट जायेगा। हमारी सभी योजनाएँ रुक जायें दुर्गापुरा के इस्पात कारखाने, भाखड़ानांगल परियोजना, सिदरी का कारखाना उपयोगी होते हुए भी एक समस्या बन जायेंगे। फिर हमारी आदर्शात्मक वाणियों का क्या होगा जो परिवार नियोजन को अपना नहीं स्वीकार करतीं। जो सभ्यताएँ अपनी बुराइयाँ कहने में हिचकिचा देखते-देखते कभी नष्ट हो सकती है। हमारी सभ्यता भी जिससे कई इयाँ है कई दोष हैं उन दोषों में भी सबसे घातक दोष या घातक बुरा जनसंख्या वृद्धि की ओर संयम न बरतना।

वर्तमान परिस्थिति में कम या ज्यादा कैसे भी यत्न काम नहीं

अगर हमने जीवन को मोड़ दिया तो हमारी उन्नति का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकेगा। एक चौथाई शताब्दी से हमारी उन्नति का वह मार्ग डगमगा रहा है, लेकिन अब वह समय आ गया है जब हमें गाँव-गाँव और घर-घर जाकर लज्जा छोड़कर यह कहना पड़ेगा (कि वे परिवार नियोजन करायें)। यद्यपि आज भी कई भोले-भाले (ग्रामीण) व्यक्ति इस स्थिति का विचार नहीं कर रहे हैं, फिर भी जो प्रकाशयुक्त है उसे तो दीखता ही है। यद्यपि यह कवि विषय पर कविता नहीं रच रहा फिर भी (कविता के विषय की पुष्टि के लिए) इसे कहना आवश्यक होगा। अन्यथा भारतीयों की वंश वृद्धि इतनी समृद्धि हो जायेगी कि वन हो जायेगा जिसमें केवल कठिन ही नहीं किन्तु जीवन भी असंभव होगा।

शब्दार्थ – निशा = रात। बानियों=वाणियों। आक्रांत=घिरी हुई। मारक = घातक। ओट=मोड़। हस्ती = उन्नति, उत्साह। अखल=अव्यक्त। ज्योतिवत=प्रकाशमय।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. भूखे और नंगों की असंख्य हमारी प्राचीन सभ्यता के लिए लिए खतरा वन जायेगी क्योंकि –

उत्तर– (घ) असंख्य भूखों और नंगों की जरूरतें पूरी न होने के कारण वे विनाशक शक्तियों का रूप धारण कर लेंगे।

प्रश्न 2. हमारी सभ्यता के लिए संकट का सबसे बड़ा कारण क्या है?

उत्तर – जनसंख्या वृद्धि।

प्रश्न 3. जनसंख्या का विस्फोट रोका नहीं जा सका तो हमें किसका मुँह देखना पड़ेगा ?

उत्तर—नित्य नई परेशानियों का मुँह देखना पड़ेगा।

प्रश्न 4. परिवार नियोजन के बारे में चुप्पी साधने का परिणाम क्या होगा ?

उत्तर – देखते-देखते हमारी सभ्यता नष्ट हो जायेगी।

प्रश्न 5. हमें हमारी हस्ती का दिया जलाये रखने के लिए क्या करना पड़ेगा ?

उत्तर – झूठी लज्जा को न मान कर परिवार नियोजन (या सं मार्ग) का आश्रय लेना ।

प्रश्न 6. परिवार नियोजन की योजना कार्यान्वित नहीं हुई तो उलट-पुलट क्यों हो जायेगा ?

उत्तर – क्योंकि परिवार बढ़ेंगे और उनकी आर्थिक समस्याएं बढ़ उनका जीना असंभव हो जायेगा और वे या तो विनाश का सहारा लेंगे असभ्यता का ।

प्रश्न 7. हमारी विकास योजनाओं पर जनसंख्या के विस्फोट क्या परिणाम होता है ?

उत्तर – वे विकास योजनाएं केवल प्रलेख रूप में ही अस्तित्व र हैं वास्तव में उनकी क्रियान्विति नहीं हो पाती और इस कारण देश पिछ ही नहीं तत्कालीन लाभविशेष से भी वंचित रह जाता है ।

प्रश्न 8. छात्र स्वयं करें ।

प्रश्न 9. ज्योति के साथ 'वन्त' प्रत्यय लगाकर ज्योतिवन्त शब्द है । इसी प्रकार 'वन्त' प्रत्यय लगाकर पांच अन्य शब्द बनाइये ?

उत्तर—जसवन्त, बलवन्त, कर्मवन्त धैर्यवन्त, शौर्यवन्त ।

15. केदारनाथ अग्रवाल

(क) ऐसे भी लोग

"ऐसे……………………विदेह ।"

अर्थ–आज हिन्दुस्तान में ऐसे कई व्यक्ति मौजूद हैं जो देश वि नहीं मिल सकते । जो न तो अपने ही कहे जा सकते हैं और न पराये वे किसी भी काम में उपयोगी नहीं हैं कारण कि अभिमान के अंधे अपने अज्ञान रूपी अन्धेरे में भी कुछ जान लेने की इच्छा से चमड़ी आकाशीय एवं पार्थिव तत्वों की खोज करने लगते हैं । इन लोगों को मनुष्य ही कह सकते हैं न पदार्थ ही । इन्हें जीवित कह सकते हैं न मृ

शब्दार्थ–न घर के हैं न घाट के=किसी भी काम का न हो। खाल=चमड़ी। वस्तु=पदार्थ। विदेह=मृत। देह = जीवित।

(ख) मेरा आदर्श

"आदर्श····· ····· ·····आदमी है ॥"

अर्थ—जब तक आदर्श देवता की भांति कोरा आदर्श ही बना बैठा होता है, मैं कभी उसके समक्ष अपना सिर नहीं झुकाता। लेकिन जब यथार्थता के अन्तर्गत वह कई महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ दिखाई पड़ता है, तो मैं उसके प्रति गले लगकर सहानुभूति प्रकट करता हूँ। समझता हूँ कि, यह मेरा पुराना मित्र है और मैं प्रफुल्लित हो उठता हूँ। इस प्रकार मेरे विचार में आदर्श देवता नहीं है किन्तु भीड़ का यथार्थ आदमी है। अर्थात् आदर्श सिद्धांत रूप में नहीं व्यवहार रूप में ही मैं मानता हूँ।

शब्दार्थ - बाग बाग=प्रफुल्लित होना। यथार्थ=वास्तविक। आदर्श =सैद्धांतिक।

(ग) तुम जियो

"हम····· ····· ·····तरह।"

अर्थ–हे मित्र हम चाहे जीवें या न जीवें लेकिन तुम एक नौजवान कि हैसियत से जीओ। जैसे-खेत में धान अपनी बालियों पर झूमता है और बाण मृत्यु का भी संहारक बन जाता है, वैसे एक अपराजित मानव के रूप में तुम जीवित रहो। मृत्यु का युद्ध है, लेकिन इसमें भी तुम अमर रहो। जैसे कान तक ताना गया कमान काम में न लिये जाने तक एक ही स्थिति में रहता है।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "तुम जियो" कविता का मूल स्वर –

उत्तर—(ख) प्रगतिवादी है।

प्रश्न 2. लेखक आदर्श को कब गले लगाना चाहता है?

उत्तर—जब यथार्थ में उसका स्वरूप अन्य महत्वपूर्ण तत्वों की भूमिका के साथ प्राप्त हो।

प्रश्न 3. "ग्रह के अन्धे" से कवि का क्या आशय है?

उत्तर – अभिमानी केवल कहने वाला किन्त कर्त्तव्यविमुख।

प्रश्न 4. "ऐसे भी लोग हैं" कह कर किन लोगों पर प्रहार कि गया है ? ऐसे लोगों की मनोवृत्ति पर लगभग 30 शब्दों में प्रकाश डालि

उत्तर – "ऐसे भी लोग हैं" कहकर उन सिद्धांतविहीन एवं अवसरव लोगों पर व्यंग्य किया गया है, जो सबके साथ है. किन्तु वास्तव में वे कि के साथ नहीं हैं उनकी मनोवृत्ति अज्ञान के अन्धकार में कुछ जान लेने आशा लिए हुए है।

प्रश्न 5. "मेरे जीवनादर्श" विषय पर लगभग 200 शब्दों में लिखिए ?

उत्तर – छात्र स्वयं लिखने का अभ्यास करें।

प्रश्न 6. निम्नलिखित मुहावरों का स्वनिर्मित वाक्यों में कीजिए।

उत्तर–(i) सिर झुकाना–मैं ऐसे व्यक्ति को सिर झुकाना पसन्द करता जो निरे स्वाभिमान पर जीवन टांके हुए हो।

(ii) गले लगाना–कुछ दयालु लोग ही गरीबों को गले लग धनवान नहीं।

(iii) बाग-बाग होना–अपने बहुत पुराने मित्र से अचानक मि मैं बाग-बाग हो गया।

16. कन्हैयालाल सेठिया

क्षणिकायें

पद्य 1. "अन्तर.......................और ने ॥"

अर्थ—घोंसले और पिंजरे में यही फर्क है कि घोंसला तु बनाया है जबकि पिंजरा तुम्हारे लिए हो किसी और ने बनाया है।

शब्दार्थ – अन्तर = भेद। नीड़ = घोंसला।

पद्य 2. कलंकित...............भूमिका।"

अर्थ – काले रंग का कोयला सूर्य का चित्र जरूर बना चाँदनी का गीत भी वह लिख सकता है। यदि उसकी भूमिका क (तो उसकी उपयोगिता को कौन सदुपयोगी नहीं कहेगा)।

शब्दार्थ–कलंकित = काले रंग का । भूमिका = देन ।

पद्य 3. "मौन…………बोझ से ।"

अर्थ–मौन भाव से की गई प्रार्थनायें जल्दी ही ईश्वर के पास पहुँचा रती हैं इसका कारण यह है कि वे स्वर के भार से स्वतंत्र होती हैं । (भार-ीनता की स्थिति में ऊर्ध्वागमन स्वाभाविक है ।)

शब्दार्थ–मुक्त = स्वतंत्र । बोझ = भार ।

पद्य 4. "केशर…………पात्र ।"

अर्थ–सोने एवं चाँदी के झूठे बर्तनों को केसर या कस्तूरी साफ नहीं कर सकती उनकी सफाई के लिए तो मैली राख ही पर्याप्त होती है ।

शब्दार्थ–कनक = सोना । रजत = चाँदी । पात्र = बर्तन । पावन = पवित्र, साफ ।

पद्य 5. "हो गया…………का मूल ।।"

अर्थ–आज परम्पराओं (प्राचीन प्रथाओं) का जाल इतना फैल गया है कि, वे परम्परायें जीवित रहने के लिए सांस भी नहीं ले पा रही हैं, अर्थात् अपनी सुरक्षा में सक्षम नहीं हैं । उनकी स्थिति पैरों नीचे रौंदी हुई धूली जैसी है अतः उनका उपयोग भी कहाँ हो । आज मानव के पास उन परम्पराओं के क्षेत्र में केवल कल्पनाओं के पुष्प हैं, लेकिन हमें कुल्हाड़ियों की शपथ दिला दी गई है कि हम उन कल्पनारूप पुष्प वाले पवित्र वृक्षों की जड़ें नहीं काट दें ।

शब्दार्थ–सांस = श्वास । शपथ = सौगन्ध । बटों = वृक्षों । मूल = जड़ों ।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. प्रथम 'क्षणिका' में आया 'नीड़' और 'पिंजरा' किसके प्रतीक हैं ?

उत्तर – (घ) सृजन ।

प्रश्न 2. कवि ने नीड़ और पिंजरे में क्या अन्तर बताया है ?

उत्तर – नीड़ पक्षी का स्वनिर्मित आवासगृह है जबकि पिंजरा पक्षी के अवास के लिए मनुष्यों द्वारा निर्मित है ।

प्रश्न 3. कैसी प्रार्थनायें ईश्वर तक जल्दी पहुंचती हैं ?

उत्तर–मौन प्रार्थनाएँ।

प्रश्न 4. निम्नांकित का आशय स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर–चांदनी का गीत = शुभ्रता की महत्ता । अकलंकित भू
सदुपयोग का कार्य । वन परम्पराओं का प्रथाओं का बाहुल्य । स
फूल = रन्जक कल्पनाएं । कुल्हाड़ियों की शपथ = सख्त मनाही ।

प्रश्न 5. "कलंकित" और "सपनीला" शब्द किन-किन प्रत्य
योग से बने हैं ? उन प्रत्ययों के योग से बनने वाले अन्य तीन-तीन उद
दीजिए ?

उत्तर–कलंकित में 'इत' प्रत्यय है। चलित, पठित, विदित
इसी प्रकार के शब्द कहे जा सकते हैं ।"सपनीला" शब्द में 'ईला'
है। इस प्रत्यय से बनने वाले अन्य शब्द हैं–रंगीला, शर्मीला, म
आदि ।

17. प्रकाश आतुर

गाड़ोलिया लुहार

पद्य 1. "मेरे............लुहार ।"

अर्थ–हे पराक्रमी योद्धा–और पराक्रम साक्षात् स्वरूप गा
लुहार। देखो अब नया सूर्य उदित हो गया है। इतिहास परिवर्तनशील
ही है (अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।) आज उस अतीत के
शोषण का चक्र स्वतः अपनी गति खो बैठा है। मुझसे इसका कारण
वह है–तुम्हारी विजय। क्योंकि तुम ही इस शोषण की नींवों में स
ये किले और किले की दीवारे हैं। जिनके अणु-अणु में तुम खो
अर्थात् उस शोषण चक्र में तुम्हारे महत्व की कोई पूछ नहीं थी क्यों
देश के लिए मर मिट गये थे। भारत माँ का ताज सुरक्षित रखने
तुमने अपना बलिदान कर दिया तथा दर-दर की ठोकरें खाने के प

रूप अपना सब कुछ नष्ट कर दिया अर्थात् तुम्हारा नाम भी किसी को बान पर न रहा। इतिहास भी क्यों कर तुम्हारी पराक्रम गाथा कहता सने कब किसको प्यार दिया है। हे मेरे गाड़ीवान् लुहार तुम वास्तव में राक्रमी योद्धा थे।

शब्दार्थ–सूरज = सूर्य, । सामन्ती शोषण = राजतंत्र की ताना-ाही का उत्पड़न, जाम = नाकामयाब। विजयस्तूर = जीत का गजार। र्ग = किला। प्राचीर = दीवार। सर्वस्व = सब कुछ। दर-दर = प्रत्येक रवाजा। मगर = लेकिन। दुलार = प्यार।

पद्य 2. "जब-जब·········· लुहार।"

अर्थ–जिस-जिस समय भी बिरछियों की बोछार हुई, तुम आगे बढ़े और तुमने ही शत्रुओं के हमले को झेला। सिपाही की वेशभूषा धारण करके मरते दम तक तुमने कष्ट सहन किये। जब किला छोड़कर नीचे उतरे तो तुमने कैसी कठिन प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक हम किला नहीं वापस लेंगे तब तक सुख के ताला लगा देंगे। तब तक सुख से नहीं सोयेंगे, तब तक इस धरती पर नहीं बसेंगे, जब तक कि किले पर हमारा झंडा न लहरा जायेगा।

हे वैराग्यमय त्यागी वीर आज यह युग तुम्हें स्वागत के लिए पुकार रहा है। हे मेरे गाड़ीवान लुहार! तुम वास्तव में पराक्रमी योद्धा थे।

पद्य 3. "दुनिया··········लुहार।"

अर्थ–देखो दुनिया कितनी बदल चुकी है। जिनका कभी बस नहीं चलता था। आज वे भी होश सम्भाल रहे हैं, तुम भी युगों से पीड़ित हो। भाई! अब तो तुम भी विश्राम लो। आज मनुष्य-मनुष्य, तुमसे यह पुकार कर रहा है अपनी भारत भूमि अब आजाद हो चुकी है, अब तो अपना स्वच्छन्द आकाश (प्रजातन्त्र) है। हे गाड़ीवान लुहार! अब तो जनता ने ही राज्य की बागडोर हाथ में ले ली है। अब तो अपने पैरों की थोड़ी सी पहुँच के माफिक तुम उस मंजिल को अपने नजदीक देख सकते हो। जो तुम सपने देखते थे उनको साकार कर सकते हो। तुम तो बादलों की मूल शक्ति हो रेगिस्तान की धरती के शृंगार हो, आओ और हमारी बात मानो। वास्तव में तुम पराक्रमी योद्धा हो।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "गाडोलिया लुहार" कविता में मुख्य रूप से कि
की व्यंजना की गई है।

उत्तर–(ख) गौरव।

प्रश्न 2. कवि ने गाडोलिया लुहार को मेरे योद्धा मेरे वि
कहा है ?

उत्तर–उनके प्रति आत्मीयता एवं उनको राष्ट्रीयता का स्वरू
की दृष्टि से कवि ने उक्त सम्बोधन यहाँ प्रयुक्त किया है।

प्रश्न 3. गाडोलिया लुहार ने दुर्ग छोड़कर नीचे उतरते स
प्रण किया था ?

उत्तर–जब तक दुर्ग वापस अधिकार में नहीं कर लेंगे तब त
पूर्वक नहीं रहेंगे, चैन से नहीं सोयेंगे, धरती पर कहीं बस्ती बना
रहेंगे।

प्रश्न 4. गाडोलिया लुहार को कवि ने त्यागवीर क्यों कहा

उत्तर–क्योंकि अपने अप्रतिम संकल्प के बल पर उन्होंने अ
कुछ त्याग दिया। वीर होते हुए भी आज़ादी के इतने वर्षों बाद उन
त्यागपूर्वक जीवन बीता रहे हैं।

प्रश्न 5. आज के युग में इस कविता की क्या प्रासंगिकता

उत्तर–आज के युग में राष्ट्रीयता एवं देश के गौरव एक का
आधार स्तंभ है।

प्रश्न 6. क्या गाडोलिया लुहार का प्रण पूरा हो चुका है

उत्तर–लेखक के दृष्टिकोण से भारत को आजादी के साथ
प्रण पूरा हो चुका है।

प्रश्न 7. छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 8. निम्नांकित लोकोक्तियां और मुहावरों का अर्थ स
हुए उनका स्वनिर्मित वाक्यों में प्रयोग कीजिए ?

उत्तर–(i) पहिया जाम होना = क्रियाशीलता की

ाड़िया लुहारों के प्रति अतीत के शोषण का आज की परिस्थितियों में
ा जाम हो गया है ।

(ii) नींव में सोना = आधारशिला बनाना ।

= गाड़िया लुहार ही चित्तौड़ की आजादी की नींव में सोये थे ।

(iii) दर-दर की ठोकर खाना = आश्रय न मिलना ।

= नौकरी न मिलने पर रमेश योग्य होकर भी दर-दर की ठोकरें
ता रहा ।

(iv) नया सूरज उगना = भविष्य परिवर्तन ।

= आज गाड़िया लुहारों का नया सूरज उग गया है, अतः उन्हें
श्राम लेना चाहिए ।

(v) मुख पर ताला पड़ना = चैन न लेना = तब तक के लिए हमारे
न पर ताला पड़े ।

18. सुब्रह्मण्य भारती

चलो गावें हम

पद्य 1. "हमारा ....देश नहीं ।"

अर्थ—प्रकाश को चूमने वाला हमारा हिमालय पर्वत दुनियां में सच-
च इतना ऊँचा है कि कौन उसकी बराबरी कर सकता है । हमारी गंगा
दी कितनी पावन है, जिसका गौरव विश्ववन्द्य है, वस्तुतः उतनी गौरवशील
दी कोई दूसरी नहीं है । उपनिषद् ग्रन्थ कितने महत्वपूर्ण हैं, विश्व भी जिन्हें
ौन भाव से श्रेष्ठतम सिद्ध कर रहा है । जिस देश की भूमि रात और दिन
ोने की किरणों जैसी चमकती रही है । अतः हम अपने देश का गुणगान
करते हुए कहते हैं कि दुनिया में हिन्दुस्तान के समकक्ष कोई देश नहीं है ।

शब्दार्थ—नभचुम्बी = आकाश को चूमने वाला । भागीरथी = गंगा ।
ौरवमय = गरिमायुक्त । उपनिषद् = वेदान्तग्रन्थ । मौन=संयमपूर्वक । समता
= समानता, समकक्षता ।

पद्य 2. "देश जो..............देश नहीं ।।"

अर्थ–जो हिन्दुस्तान ऋषिजनों की तपोभूमि कहलाता रहा है औ
जहाँ पर महान् वीर पैदा हुए हैं। जिस देश में नारद से परमतत्वज्ञ विद्वा
की प्रतिध्वनि रही है, अच्छे आचरणों का जहाँ आदर हुआ है। जिस दे
में अपरिमित ज्ञान भरा हुआ है। भगवान बुद्ध ने जहाँ उपदेश दिये ऐसी
प्राचीन परम्परा का संवाहक दुनियां का कोई देश नहीं। अतः गाते हैं कि
हिन्दुस्तान के समकक्ष कोई देश नहीं है।

शब्दार्थ—उपजे = पैदा हुए। गूँजे = प्रतिध्वनित हुए। सद्विषयो
अच्छे आचरणों। अतुल = अपरिमित।

पद्य 3. "विघ्न............देश नहीं॥"

अर्थ–हम ऐसे गौरवशाल देश पर गर्व करते हैं, अतः पीड़ाओं औ
रुकावटों से भयभीत होना, गरीब बनकर दुःख भोगना हमारा काम नहीं
हम स्वर्थावश निम्न स्तर के कर्म क्यों अपनायें। कभी इस धरती पर ह
निराश न हों। आज हिन्दुस्तान में फल, मूल, केले, दूध, शहद, अनाज स
भरे पूरे हैं अर्थात् वांछित सीमा तक देश ने आत्मनिर्भरता प्राप्त की है, फि
आर्यों की इस भूमि की भांति उन्नतिशील कोई दूसरी भूमि भी नहीं है। अ
हम गायें कि भारत की समकक्षता में संसार का कोई देश नहीं है।

शब्दार्थ–विघ्न = रुकावट। बाधाओं = पीड़ाओं। दीन = गरीब
स्वार्थ = प्रयोजन। आर्यजन = आर्यों की। धरा = पृथ्वी। दूजी = अन्य

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के उज्ज्वल अतीत की स्मृति को जागृत करने
भारती का क्या उद्देश्य है?

उत्तर—राष्ट्रीय गौरव की अनुभूति को माध्यम बनाकर राष्ट्र प्रे
का नवीन संदेश प्रदान करना भारतीजी का मुख्य उद्देश्य रहा है।

प्रश्न 2. "मूल, फल, कदली, पय, मधु, धान" कहकर कवि ने भा
की प्राकृतिक सम्पदा की ओर जो संकेत दिया है, उसका वर्णन अपने शब्दों
कीजिए?

उत्तर–कवि ने यह संकेत करते हुए लिखा है कि प्रकृति भारत

सुख दे रही है। आज देश की बढ़ती हुई जनसंख्या का भी पालन-पोषण रहा है क्या यह कम आश्चर्य की बात, भूमि वही है किन्तु देश की आत्म रता की सीमा उन दायरे में तो बढ़ी ही है अतः ऐसी भूमि हमारे लिए माननीय है।

प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता के आधार पर भारत के ऐतिहासिक गौरव, कृतिक गौरव एवं आर्थिक गौरव पर संक्षेप में एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर – ऐतिहासिक गौरव के लिए छात्र महापुरुषों की जीवनियाँ हित करें। सांस्कृतिक गौरव में सभ्यता का पुरातन इतिहास तथा आर्थिक व में देश की अर्थव्यवस्था का परिचय लेकर स्वयं निबन्ध लिखने का ास करें। यह छात्रों की रुचि पर निर्भर है कि उनका दृष्टिकोण किस र है।

प्रश्न 4. क्या आप कवि के इस मन्तव्य से सहमत हैं कि विश्व में रत के समान और कोई देश नहीं है? युक्ति युक्त उत्तर दीजिए?

उत्तर–हम कवि के कथन से सीमित दायरे में ही सहमत हैं। पूर्ण-ण नहीं क्योंकि जहाँ तक सभ्यता संस्कृति एवं राष्ट्रीयता व ऐतिहासिकता भारत अद्वितीय है वहाँ आर्थिक क्षेत्र में उसका गौरव अतिपुरातन रहा है ज सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक गौरव की जड़े मौजूद हैं लेकिन आर्थिक रव लुप्त हो गया है।

प्रश्न 5. "गौरवमय" शब्द 'गौरव' संज्ञा के साथ 'मय' प्रत्यय लगा र बनाया गया है। 'मय' प्रत्यय के योग से पाँच नये शब्द बनाइये?

उत्तर–कल्पनामय, विलासमय, तन्मय, चिन्मय, करुणामय।

19. उमाशंकर जोशी

वर दे इतना

पद्य 14. "स्वतन्त्रता तू············दे इतना।"

अर्थ–हे आजादी! तू मुझे इतना माँ वरदान दे कि, हमारा मन कभी कल्पहीन न हो। हमारा दिल कभी हतोत्साह न हो। साथ ही सभी कार्य सदा दीप्तिमान रहें, उन्नति का ही उन्हें प्रकाश मिले जिसमें वे दीप्त रहें।

नीचे मुँह वाले न हों। वाणी भी बिना कारण कठोर न हो । यह कभी मोह के कुहरे में रुक न जाये । आँखों का अमृत कभी शुष्क न यह पृथ्वी दूध न देने वाली गां की तरह नहीं हो । यद्यपि धनार्जन व्या का प्रतिफल है किन्तु वहाँ स्वार्थों की टकराहट विनाश का निमन्त्रण प्रदान करे। भारतीय महिलाएँ कभी अपने स्त्रित्व पर लांछन न ल तथा नौजवान समय आने से पहले बूढ़े न हों। बचपन के पवित्र मन्द कभी मुरझायें नहीं । जो जनता की धुरी का बोझा ढोते हैं वे सबसे की पंक्तियों में हों तथा सब के पीछे रहें वीर ब्रह्मज्ञानी व विचारों में स हो, किन्तु सत्ता के पुजारी न बन जायें (उसका पुजारीपन मंदिरों त सीमित रहे) । कवि होने के नाते यही मेरी याचना है कि कविजनों को किसी के हाथ पर झुलने वाले तोते मत बनाना क्योंकि ऐसे तोते वे खुशामद भरी वाणी ही बोल सकते हैं जो कविवाणी के विरुद्ध है। अत आजादी, तू इतना मुझे वरदान दे दे (फिर मुझे कोई चिन्ता नहीं)।

शब्दार्थ–हीनसंकल्प = दृढ़ता रहित । हताश = हतोत्साह । प्रज्ज्व = दीप्तिमान । ऊर्ध्वज्वाला = उन्नति का प्रकाश । अधोमुख = नीचा म अवरुद्ध = रुकना । मोह = ममता । वाणिज्य=व्यापार । न्यौता = निमंत्र भुनाएँ = बेचें । शुचिस्मित = पवित्र मंदहास । अग्रगामी = आगे चलने वा खुशामद = झूठी प्रशंसा । बोली = वाणी । स्वतंत्रता = आजादी ।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "वर दे इतना" कविता मूलतः—

उत्तर—(ब) भावना प्रधान है ।

प्रश्न 2. कवि के अनुसार लक्ष्मी कहाँ निवास करती है ?

उत्तर—कवि के अनुसार लक्ष्मी व्यापार में निवास करती है ।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार पिंजरे का तोता कौनसी बोली बोलत

उत्तर–पिंजरे का तोता खुशामद भरी बोली बोलता है ।

प्रश्न 4. "धरती दूध न देने वाली गाय जैसी न हो" कवि ने क्यों कहा है ?

उत्तर–हमेशा सुभिक्ष न रहें, धरती धन धान्य को उपज के रूप में रन्तर देती रहे। यह कवि की भावना द्योतित होती है।

प्रश्न 5. ब्राह्मण और सौम्य विचारक सत्ता के पुरोहित बन गये तो या हानि हो सकती है ? आपकी राय में ब्राह्मण एवं विचारक का कर्त्तव्य या है ?

उत्तर–देश में आंतरिक विद्रोह को रोकने के उद्देश्य से राष्ट्र का नजागरण, देश प्रेम तथा राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार इनका कर्त्तव्य है। दि सत्ता इनके हाथ में गई तो कूटनोति से शून्य होने के कारण ये वैदेशिक म्बन्धों एवं देश की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को औचित्य से नहीं सम्भाल कते।

प्रश्न 6. कवि ने मन, हृदय, कर्म, दृष्टि और वाणी के लिए क्या-या वर माँगे हैं ?

उत्तर—मन संकल्पहीन न हो हृदय हतोत्साह न हो, कर्म सदा न्नति के प्रकाश से दीप्त रहे दृष्टि मोह से आच्छन्न न हो तथा वाणी कारण कठोर न बने।

प्रश्न 7. "वर दे इतना" कविता का भावार्थ क्या है ?

उत्तर–प्रस्तुत कविता में कवि देश के उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न खता है और हमेशा साकार रूप में ही देखने के लिए वह वरदान माँगता है। वरदान ईश्वर से माँगकर भाग्यवादिता को प्रोत्साहन देने की अपेक्षा प्राजादी से माँगकर कर्त्तव्य के प्रतिफल रूप में अधिकार पाने के प्रति कवि अधिक सचेष्ट रहा है। कवि ने स्वार्थ में संकुचित दृष्टिकोण को मान्यता नहीं दी क्योंकि उसने सब कुछ देश के लिए माँगा है, अपने लिए नहीं।

20. सूर्य्यमल्ल मिश्रण

पद्य 1. "इला न............माय।"

अर्थ–बच्चे को पालने में झुलाती हुई माँ यह सिखा रही है कि पनी धरती किसी दूसरे को देने की नहीं है। हे बेटे ! उससे तो मरना ही हतर है।

शब्दार्थ—इला = पृथ्वी । हालरिया = हिलोरे देकर । हुलराय = लोरि के रूप में । पालणे = झूले में । माय = मां ।

पद्य 2. "हूँ............सीह ।"

अर्थ—हे बेटा ! मैं उन रानियों के प्रति न्यौछावर होती हूँ जिन्होंने डंके की चोट धरती के लिए ऐसा पति पैदा किया है जो मानो जंजीर से खोला गया सिंह हो ।

शब्दार्थ—थाल बजाणे = डंके की चोट । बींद = पति । जमीं=धरती जणे = पैदा किया । सांकल = जंजीर । होरा = खुला हुआ ।

पद्य 3. "भूल............चाव ।।"

अर्थ—हे राजपूती वीर ! तू भूल कर भी आग में पैर मत डाल क्या जल जाने पर इसकी रक्षा कर सकेगा । अब तो धैर्य रख ।

शब्दार्थ—मापे = में । पांव = पैर । दाझियां = जलने पर । धीरज = धैर्य के लिए । चाव = इच्छा कर । तेथ = तब के लिए ।

पद्य 4. "घण.......... बार ।"

अर्थ—वीर पत्नी बार-बार कह रही है—हे पतिदेव ! तुम जगो बाहर हुँकारे, किलकारियाँ और हजारों शोरगुल हो रहे हैं । बिना निमंत्रण दि ही आये हुए मेहमान (अर्थात् शत्रु लोग) तुम्हें बाहर मिलने (युद्ध के लिए) बुला रहे हैं ।

शब्दार्थ—घण = बहुत । धणी = पति । हूकल = हुँकार । कलल = किलकार । नूंतारा = निमंत्रण । पाहुण = मेहमान । वार = बाहर ।

पद्य 5. "मुझ............सीस ।।"

अर्थ—अरी सखी यह कैसा आश्चर्य लग रहा है । ये बंदर (दुष्ट श भी पति देव का यश गा रहे है इनके सिर पर विष का प्रभाव हो ग है या मेरे दिल के सिर रूप उन पतिदेव पर इनके नेत्र लग गये हैं ।

शब्दार्थ—मुझ = प्रतीत होता है । बखाणा = यशगान । कंत = पति कीस = बन्दर । विष = जहर । दल = प्रभाव । हिये = हृदय । सीस = सि

पद्य 6. "मणियारी..........बणाव ।"

अर्थ–हे मनिहारे की स्त्री ! अरी सखी ! तू चली जा अब हमारे मत आना । हमारे पतिदेव के मर जाने पर ही आना । देखती है हमें वा बनाने वाला कौन है ?

शब्दार्थ – मणियारी = मनिहारे की स्त्री । पीव = पति । मुआ = ने पर । आविया = आना । कवण = कौन । वनावे = बनाता है ।

पद्य 7. "बाप··········बूंद ॥"

अर्थ—जब पिता ही माहिरा लेकर चला गया तो यह कुटुम्ब क्यों रहा है । सूना हो जाने से बच्चे ऐसे चीख रहे हैं मानों दुश्मन का घर ।

शब्दार्थ–बाप = पिता । काको = क्यों जाता है । कडूंब = म्ब । तोहि = इस कारण । त्रूंब = चीख ।

पद्य 8. "गोह··········उठाय ॥"

अर्थ–सब घर वाले गोठ में चले गये हैं । तभी अचानक एक बात पड़ी सिंहनी सिंह के पास पहुंची और उसे नम्रता से जगाने लगी ।

शब्दार्थ– गोह = गोष्ठी (पार्टी) । बाय = बात । धाई = पहुँची । ण = सिंह । सीहणी = सिंहनी ।

पद्य. 9. हेली··········हजार ॥"

अर्थ—हे सखी ! मैं इस हवेली की आश्चर्य भरी बात सुनाती हूँ यह भी पति देव पर ही न्यौछावर है । इसे इस बात का आश्चर्य है कि घर में अपने पति को दो हाथ वाला ही देखती हूँ जबकि वे युद्ध में र हाथों (सहायकों) वाले हो जाते हैं ।

शब्दार्थ – कंत = पति । हेली = हवेली । कर = हाथ । रण = युद्ध ।

पद्य 10. "अठै··········ले जाय ॥"

अर्थ—यहाँ (घर और देश में) सुन्दर कीर्ति है वहां (युद्ध और जीत एकाधिपत्य है । मौका तो मरने पर हाथ आता है मरना ही है तो घर मर जाओ अन्यथा यम के हाथों नरक में जाओगे ।

शब्दार्थ–अठै = यहाँ सुजस = सुन्दर यश । प्रभुता = एकाधि- । मरियां = मरने पर । भांभियां = भीतर । जम = यमराज । नरकां = र में ।

पद्य 11. "जिस जिम............सूर।।"

अर्थ–ज्यों-ज्यों कायर थर्राता है त्यों-त्यों शूरवीर का ओज स्फुि होता जाता है। इस तरह जैसे-जैसे कवच ढीला होता है वैसे-वैसे ही शू वीर की छाती फूल जाती है।

शब्दार्थ–जिमजिम = ज्यों-ज्यों। थर्राहरे = थर्राता है। नूर = ओज बगतर = कवच। ऊपडै = ढीला होता है।

पद्य 12. "बिण माथै............तरवार।"

अर्थ–जो शूरवीर पहले युद्ध में बिना सिर वाले हो जाने पर सेना में आगे ही बढ़ते रहे तथा कर्जा चुकाने के बाद ही (मातृभूमि का ऋ चुकता कर देने पर ही) जिन वीरों ने सोने का नाम लिया (अर्थात् तब त वे नहीं सोये) ऐसे शूरवीरों की याद करके ही राजपूत तलवार कसता है

शब्दार्थ—बिण = बिना। बाढ़ै = बढ़ते थे। दलां = सेना मे पौढ़े = सोये। करज = कर्जा। तिण = उन। सूरां = वीरों का। भड़ राजपूत।

पद्य 13. "सूता................देस।"

अर्थ—जो आज घर-घर में आलसी व्यक्ति सोये हुए हैं। वे बे ही उम्र गँवा रहे हैं। तलवारों की धारा से तथा घोड़ों के खुरों से वे अ बपौती में पाये इस देश को बेकार अधीन किये बैठे हैं।

शब्दार्थ—वृथा = बेकार। गुमावै = खोते हैं। वेम = उम्र। अजं बाप का।

पद्य 14. "बिण मरियां............जाय।"

अर्थ—यदि बिना मेरे जिये पतिदेव वापस आ गये तो हे सख पैरों की मार मार कर अपनी चूड़ियाँ फोड़ दूँगी जब उनके आने का होगा।

शब्दार्थ—मरिया = मरे। जातिया = जिये। पाछटूं = फोड़ द जाम = समय।

पद्य 15. "टोटैं............आवास।।"

अर्थ–सिर पर की भय-रेखायें टूट रही हैं। मानो ऊपर घास गिरा रही हों। बादल उन पर छा गये हों जिससे राजाओं के महल भी झोंपड़ी के रूप में बदल गये हों।

शब्दार्थ—टोटै = टूटना। सरकां = सिर का। भीड़ता = भय की रेखायें या भित्तियाँ, दीवारें। अधपतियाँ = राजाओं के। वारीजै = बादलों से, जिस बार।

पद्य 16. "पोते·······काल ॥"

अर्थ–अरी बहू ! अब तो मेरे पोते के भी बेटे हो गये घर में यह जाल (सन्ताप) काफी बढ़ गया। अब तो तू भाग्य छोड़ दे क्योंकि तेरे पति ने मृत्यु को पा लिया है।

शब्दार्थ—थिया = हुए। जाल = संतान। भागणी = भाग्य।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "मणियारी·······बणाव" उक्त दोहे में पत्नी का कौनसा भाव व्यक्त हुआ है ?

उत्तर – (ख) रोष।

प्रश्न 2. वीर पत्नी को पति की किन-किन बातों पर आश्चर्य होता है ?

उत्तर—घर में वह पति के दो ही हाथ देखती है जबकि वे युद्ध में हजार हाथों वाले हो जाते हैं तो कैसे यह सोचकर वीर पत्नी को आश्चर्य होता है।

प्रश्न 3. कवि ने "बिना नूं तारा पाहुणा" किसे कहा है ?

उत्तर—आक्रमणकारी दुश्मनों को।

प्रश्न 4. उपयुक्त अवसर पर मरण का वरण करने वालों को क्या मिलता है ?

उत्तर – सुयश की इहलोक में प्राप्ति और परलोक में सायुज्य की प्राप्ति।

प्रश्न 5. कवि ने वीर और कायर में क्या अन्तर बतलाया है ?

उत्तर—वीर बिना सिर का हो जाने पर भी सेना में आगे ही ब
है। वह मातृभूमि का ऋण चुका कर ही जमीन पर गिरता है और ह
के लिए सो जाता है। कायर आलसी बनकर घर में सोया रहता है
बेकार उम्र गँवाता है। वह बेकार ही देश को अपनी बपौती समझता ह

प्रश्न 6. सूर्यमल्ल के इन दोहों को पढ़कर नारी का जो स
आपके सामने उभर आता है उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर—इस पाठ में भारतीय वीरांगना की वीरता, पतिव्रत, दृ
भावनात्मक उच्चता आदि नारी के मुख्य आदर्श प्रतीत होते हैं। छात्र प्र
पक्ष को लेते हुए सोदाहरण पुष्टि करें।

प्रश्न 7. संकलित दोहों के आधार पर वीर और कायर के स्व
की तुलना कीजिए।

उत्तर—इसके लिए प्र. सं. 5 का उत्तर देखें।

प्रश्न 8. नीचे लिखे शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखिए ?

उत्तर – घरे = घर पर। काल्ह = कल। लीधौ = लिया। कवर
कौन। वृथा = व्यर्थ। बिण = बिना। आविया = आये। आपणी = अ
पूछ = पूछ। सूता = सोया। हरख = हर्ष।

21. सत्यप्रकाश जोशी

पद्य 1. "मन रा..........मोड़ ले।"

अर्थ—हे मेरे दिली दोस्त कृष्ण ! यदि संसार में घमासान
भारत युद्ध) हो गया तो भाई के ऊपर भाई प्रहार करेंगे। आपस में
और मनुष्य मर जायेंगे। तेरी अमर सुहागिन गोपियाँ काले कपड़े
चूड़े फोड़ेंगी अर्थात् अपने दुर्भाग्य को कोसेंगी। स्त्रियाँ बाजारों में
जायेंगी। उनके बिना ढके हुए मुँह को कौन ढकेगा। यह पृथ्वी पुर
रहित हो जायेगी। बच्चे सब बिना बाप के कहलायेंगे। बच्चियों की श
भी कौन करेंगे। उनके परिवारों को कौन पालेगा। बहुत सी मातायें हा
करेंगी। तू इस रास्ते से मुड़ और (पाण्डवों की) इस सेना को भी
मोड़ दे।

पद्य 2. "मन रा···· ····मोड़ लें।"

अर्थ—हे मन के मित्र कृष्ण ! यदि दुनियाँ में यह घमासान युद्ध हो गया तो सात-सात मंजिलों वाले ऐसे महल कौन बनायेगा ? कौन महल-मैंड़ी बनावेगा ? कौन मीठे गीत गायेगा ? कौन पुस्तकें पढ़ेगा ? कौन अपनी देहलीज पर दीपक सजायेगा ? कौन अपने आंगने में पूरना लिखेगा ? बार त्यौहार कौन मनायेंगे, कौन स्त्रियाँ तुलसी और गौरी की पूजा करेंगी ? सजे हुए सातों देवता बिना पूजा के ही रहा करेंगे। मन्दिरों में कौन आरती करेगा ? इस नष्ट होते हुए मानव जीवन की तू ही मर्यादा है अतः तू इस रास्ते से मुड़ और इन सेनाओं को भी मोड़ ले।

पद्य 3. "मन रा···· ···· ····मोड़ ले।

अर्थ – हे मन के मित्र कृष्ण ! यदि संसार में यह युद्ध हो गया तो कोयलें बागों में दुःख प्रकट करेंगी। वन में मोर नाचना बन्द कर देंगे। हर खेतों पर चील मंडरायेगी। सारे देश में गिद्ध छा जायेंगे। रात में डाकिनियां रास रचायेंगी। चौंसठ योगिनियाँ अपने खप्पर भरेंगी। धरती माँ का शाप लगेगा। अतः तू मुड़ और इस सेना को भी मोड़ ले।

पद्य 4. "मनरा···· ···· ····मोड़ ले।"

अर्थ – हे मन के मित्र कृष्ण ! तू इधर आ, दूध से हाथ साफ कर ले। मुड़ जा और इस सेना को मोड़ ले। दही और मक्खन से होठों को रंग ले। तथा तू मुझसे आलिंगन कर ले। पनिहारे पर बात कर ले। अभी चाहे रास रचा ले लेकिन इन सेनाओं को मोड़ ले जिससे यह भीषण नरसंहार रुक जाये।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. "कोयल कुरलासी बागाँ मांय" इस पंक्ति में "
शब्द का अर्थ है— ···वत

उत्तर—(ग) आर्त्त स्वर में पुकारेगी।

प्रश्न 2. युद्ध जनित जिन-जिन अनिष्टों की आशं
की है उन्हें अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर – इस हेतु पद्य 1, 2, 3 का हिन्दी अर्थ देखें व संक्षि
लिखने की चेष्टा करें।

प्रश्न 3. युद्ध प्रारम्भ होते ही सहज जीवन की कौन-कौन स
आनन्दमयी और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ रुक जायेंगी ?

उत्तर—महलों का निर्माण कार्य, गीतगानों की मधुरिमा,
कार्य, घर में दीपक जलाने का कार्य, त्यौहार मनाना, देव पूजा आदि
प्रवृत्तियाँ प्रायः रुक जायेंगी।

प्रश्न 4. राधा श्रीकृष्ण को युद्ध का मार्ग छोड़कर क्या कार्य
को प्रेरित करती है ?

उत्तर – इस हेतु पद्य 4 का हिन्दी अर्थ देखें।

प्रश्न 5. छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 6. निम्न शब्दों का हिन्दी रूप लिखिए—

उत्तर–1. कामणियाँ = कामिनियाँ।

2. पिरथी = पृथ्वी।
3. कडूंबों = कुटुम्ब।
4. गोखड़िया = बैठक।
5. तिवार = त्यौहार।
6. तुलछां = तुलसी।
7. मिंदर = मन्दिर।
8. स्राप = शाप।
9. माखण = मक्खन।

———

एक नं

सातवां पुरस्कार (30,000) रु. 10/- ...
अंकों पर समाप्त होने वाले नंबरों पर)

042 188 256 376 449 545

टिप्पणी: (1) विजेता अपने नंबर अंतिम रूप से आधि...
5000/- तक की टिकटों का भुगतान हमारे किसी भी ...
है।

अगला ड्रा 13.5.88 को च...

आर्गेनाइजिंग एजेंट: मैसर्स अमृत एण्ड कं.
फ्लेट नं. 1 भगत सिंह मार्केट
नई दिल्ली 110001 फोन: 323529 सिविल...

ड्रा परिण...

(पहले पुरस्कार के अन्तिम तीन अंकों पर समाप्त नम्बर)
(पहले पुरस्कार के अन्तिम तीन अंकों पर समाप्त नम्बर)
(पहले पुरस्कार (18000 तक) रु. 10/-प्रत्येक
छठा पुरस्कार (18000 तक) रु. 10/-प्रत्येक
(पहले पुरस्कार के अन्तिम दो अंकों पर समाप्त नम्बर)
(पहले पुरस्कार (1,80,000 तक) रु. 6/-प्रत्येक
सातवां पुरस्कार (1,80,000 तक) रु. 6/-प्रत्येक
(पहले पुरस्कार के अन्तिम एक अंक पर समाप्त नम्बर)
अगला ड्रा 13.5.88 को

फोन: कार्यालय राज्य लाटरीज
49262, 49278
एनबी: कृपया अन्तिम रूप से अपने टिकट नम्बरों का मिलान राजस्था...
से करें।

जनता साप्ताहिक लाटरी जनता साप्ताहिक लाटरी जनत...

जनत...

921 KCO-88784
होने वाले सभी टिकटों पर
18420
93910
होने वाले सभी टिकटों पर
48 5460 •3249
होने वाले सभी टिकटों पर
44 7988 2840
माप्त होने वाले सभी टिकटों
06 974 438
प्त होने वाले सभी टिकटों पर
८४० ७४२ ४००
नहीं होगा। कृपया राज्य का

लॉटरी के 177 वें ड्रा के

ट नं.B- 347103
नं. Z- 161095
)
– 624244
– 408792
नांकित अंतिम पांच अंकों

4957 54619 27502
निम्नांकित अंतिम चार

7 1845 2117
नांकित अंतिम चार अंकों

3312 5392 2645
निम्नांकित अंतिम तीन

) 886 914
ट से मिला लें। (2) रुपये
त प्राप्त किया जा सकता

सदस्य सचिव
डीगढ़ स्पोर्ट्स काउंसिल
चंडीगढ़ फोन: 31577

लाटरी के 7 वें ड्रा का

CH-99867
KCE-01070
खला में एक)

ड्रा के निर्णायक:
1. श्री सी.सेन डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन सी.पी.डब्ल्यू.डी. नई दिल्ली.
2. श्री के.के. कपूर, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर, डी.ई.एस.यू. नई दिल्ली।

प्रथम पुरस्कार (1) रु. 1,00,000/-

IPN 324561 (एम.पी.)

द्वितीय पुरस्कार (1) रु. 5,000/-

IPM- 538531

सभी सीरिज के निम्नलिखित अंकों से समाप्त होने वाले सभी टिक

तृतीय पुरस्कार (20) रु. 500/-प्रत्येक
चतुर्थ पुरस्कार (189) रु. 50/-प्रत्येक
पंचम पुरस्कार (1890) रु. 10/-प्रत्येक
छठा पुरस्कार (207900) रु. 7/-प्रत्येक

नोट– विजेता अपने नम्बर अंतिम रूप से अधिकृत परिणाम शीट से मिला लें

आगामी ड्रा शुक्रवार 13.5.1988 को अप. 3.30 बजे

10 टिकटों के ब्लाक में 7/- रुपये की गारं

शिवम वीकली के 75वें ड्रा का जयपुर में 6-5-88 को अ
बजे हुए ड्रा का परिणाम:-

प्रथम पुरस्कार (1) रु. 1,00,000/-

द्वितीय पुरस्कार (2) रु. 5,000/- प्रत्येक

W- 202403 Y- 202403

तृतीय पुरस्कार (18 तक) रु. 500/-प्रत्येक
(पहले पुरस्कार के अन्तिम पांच अंकों पर समाप्त नम्बर)

चतुर्थ पुरस्कार (180 तक) रु. 50/-प्रत्येक